सम्पादकीय

सियासी हलचल : महिला मतदाताओं की बढ़ती अहमियत

पहली नजर में तो यह चुनाव जीतने का नया और शानदार सियासी नुस्खा नजर आता है। महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए नकद बांटो, परिवहन मुफ्त कर दो और सार्वजनिक स्थानों तथा परिवारों के भीतर सुरक्षा पक्की कर दो बस, वोटों की झड़ी लग जाएगी। यहां बुनियादी सोच यह है कि महिला मतदाता अब परिवार के पुरुषों के कहने पर वोट नहीं देतीं। अब वे अपनी समझ से काम करती हैं और रोजगार, आर्थिक आजादी, परिवार के कल्याण तथा अपने अरमानों को ध्यान में रखकर ही वोट देती हैं। इसके सबूत भी हैं, जिन्हें अनदेखा करना मुश्किल है। बिहार में नीतीश कुमार को पिछले कई सालों से महिलाओं खास तौर पर निम्न आय वर्ग की महिलाओं के खूब वोट मिले हैं। 2005-06 में उन्होंने लड़कियों को मुफ्त साइकल देने की योजना शुरू की, जिसने चुनाव में उन्हें खूब सफलता दिलाई। उनकी सरकार ने 2006 में पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं को 50 फीसदी आरक्षण दे दिया। अभी इस पर बहस चल रही है कि इससे महिलाओं को कितनी ताकत मिली क्योंकि कई जगह महिलाओं की जगह पुरुषों द्वारा फैसले लिए जाने की बात सामने आई है। परंतु 2015 में उन्होंने महिलाओं को हिंसा और दरिद्रता से बचाने के लिए शराबबंदी की जो घोषणा की, उसके कारण चुनाव में पुरुषों से ज्यादा महिलाएं वोट देने पहुंच गईं।

दूसरी पार्टियां भी जल्दी समझ गईं कि महिलाएं भारी वोट बैंक हैं और उन्होंने भी इस वोट बैंक को लुभाना शुरू कर दिया। उवला योजना देश भर की महिलाओं तक पहुंचने की भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की कोशिश थी। आम आदमी पार्टी (आप) ने महिलाओं की सुरक्षा के लिए बड़ा अभियान शुरू किया और दिल्ली में सार्वजनिक स्थानों पर ज्यादा रोशनी की बात कही। सभी आय वर्गों की महिलाओं को नकद देने की ममता बनर्जी की 2002 की घोषणा सत्ता में उनकी वापसी का अहम कारण हो सकती है। कांग्रेस ने 2022 में हिमाचल प्रदेश और 2023 में कर्नाटक में विधानसभा चुनावों से पहले महिलाओं को नकद राशि देने का वादा किया। भाजपा के नेतृत्व वाली राज्य सरकारें भी पीछे नहीं रहीं। मध्य प्रदेश सरकार की लाड़ली बहना, महाराष्ट्र सरकार की लाड़की बहन और हरियाणा सरकार की लाडो लक्ष्मी योजना के पीछे एक ही विचार था - महिलाओं को सीधे नकद भेजना। इस समय देश के 10 राज्य महिलाओं को नकद राशि दे रहे हैं और दिल्ली, तमिलनाडु, कर्नाटक, तेलंगाना, केरल एवं पंजाब जैसे राज्यों में महिलाएं सरकारी बसों में मुफ्त सफर कर सकती हैं।

तमिलनाडु सरकार को एक अध्ययन में पता चला कि इस कदम से महिलाओं के पास खर्च करने लायक आय बढ़ती है, श्रमबल में महिलाओं की भागीदारी बढ़ती है, आने-जाने के लिए परिजनों पर निर्भरता कम होती है और उन्हें आजादी का भान होता है। जाहिर है, इसकी कीमत भी चुकानी पड़ती है। गोल्डमैन सैक्स रिसर्च के अनुसार 2024-25 में राज्यों को अपने बजट में 18 अरब डॉलर इन योजनाओं के लिए रखने पड़े, जो इस वित्त वर्ष में भारत के कुल सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के 0.5 फीसदी के बराबर थे। जब आप 2019 से 2021 के बीच कराए गए राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएचएस) - 5 के आंकड़े इसमें शामिल करते हैं तो यह समझना मुश्किल नहीं रह जाता कि महिलाओं को स्वतंत्र मतदाता वर्ग क्यों माना जा रहा है या क्यों माना जाना चाहिए।

आज का इतिहास

बढ़ता राजस्थान

6 जनवरी की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ

- पहली बार दुनिया के सामने एल्फ्रेड वेल और सैम्युएल मोर्स ने विद्युत टेलीग्राफ का 1838 में सफल प्रदर्शन किया। जो भविष्य में दूरसंचार का आधार साबित हुआ।
- रोमानिया देश 1861 में अस्तित्व में आया।
- मारिया मॉन्टेसरी ने 1907 में पहला स्कूल और कामकाजी वर्ग के बच्चों के लिए डेकेयर सेंटर खोला जो रोम, इटली में था।
- एल्फ्रेड वेगेनर ने महाद्वीपीय विस्थापन के सिद्धान्त को 1912 में प्रस्तुत किया।
- मदर टेरेसा भारत में रोगियों और गरीब लोगों की सेवा करने के लिए 1929 में अब कोलकाता आयी।
- समाचार पत्रों में प्रतिदिन प्रकाशित कॉमिक स्ट्रिप 'सुपरमैन' की शुरुआत 1939 में हुई।
- वियतनाम में पहले आम चुनाव 1946 में हुए।
- अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने भारत का विभाजन का विभाजन 1947 में स्वीकार किया।
- ब्रिटेन ने चीन की कम्युनिस्ट सरकार को 1950 में मान्यता प्रदान किया।
- चीन ने लोप नोर क्षेत्र में परमाणु परीक्षण 1976 में किया।
- रॉक बैंड 'सेक्स पिस्टल्स' के सार्वजनिक तौर पर खराब बर्ताव की वजह से 1977 में उनके साथ अपना क़रार रद्द कर दिया।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 1983 में पहली बार आंध्र प्रदेश और कर्नाटक विधानसभा चुनावों में हार का सामना करना पड़ा।
- कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के खगोलशास्त्रियों ने 12 अरब प्रकाश वर्ष दूर आकाशगंगा के निर्माण की पहली झलक 1987 में देखी।
- इंदिरा गांधी की हत्या के दोनों दोषियों सतवंत सिंह और केहर सिंह को 1989 में फांसी दी गई।
- नई दिल्ली में यमुना बैंक-आनंद विहार सेक्शन की मेट्रो रेलों का परिचालन 2010 में आरंभ हुआ।
- सीरिया की राजधानी दमिश्क में 2012 में हुए आत्मघाती हमले में 26 लोगों की मौत हुई और 63 घायल हुए।

6 जनवरी को जन्मे व्यक्ति

- 1824 में फ्रांस के लेखक और साहित्यकार एलेग्ज़ेन्डर डोमा कनिष्ठ का जन्म हुआ।
- 1910 में भारतीय कर्नाटक संगीतकार जी. एन. बालासुब्रमनियम का जन्म हुआ।
- 1932 में हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार कमलेश्वर का जन्म हुआ।
- 1959 में भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान कपिल देव का जन्म हुआ।
- 1966 में ऑस्कर विजेता भारतीय संगीतकार ए आर रहमान का जन्म हुआ।
- 1996 में फ़िल्म निर्देशक, अभिनेता किशन श्रीकांत का जन्म हुआ।
- 1949 में परमवीर चक्र से सम्मानित भारतीय सेना के सूबेदार बाना सिंह का जन्म हुआ।
- 1918 में बॉलीवुड के प्रसिद्ध गीतकार भरत व्यास का जन्म हुआ।

विशेष आलेख

गुरु गोविंद सिंह जी का प्रकाश पर्व वाहेगुरु जी दा खालसा वाहेगुरु जी दी फतेह

किशन सनमुखदास भावनानी

गुरु गोविंद सिंह के प्रकाश पर्व व इस त्यौहार की तिथि व महत्व की करें तो,प्रकाश पर्व सिख धर्म का एक महत्वपूर्ण त्योहार है,जिसे श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया जाता है। सिख धर्म में कुल दस गुरु हुए हैं और इनमें से दो प्रमुख गुरुओं, गुरु नानक देव जी और गुरु गोबिंद सिंह जी के जन्मदिवस को विशेष रूप से प्रकाश पर्व या प्रकाश उत्सव के रूप में मनाया जाता है। यह पर्व न केवल सिख समुदाय के लिए बल्कि पूरे समाज के लिए एक प्रेरणा का स्रोत है। गुरु गोबिंद सिंह जी का जन्म 22 दिसंबर 1666 को पटना, बिहार में हुआ था। उन्होंने मात्र दस वर्ष की आयु में गुरु की गद्दी संभाली और सिख धर्म के दसवें और अंतिम गुरु बने।उनका जन्म पौष माह के शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथि को हुआ था। प्रकाश पर्व का अर्थ है- अंधकार को दूर कर सत्य, ईमानदारी, और सेवा का प्रकाश फैलाना। गुरु नानक देव जी और गुरु गोबिंद सिंह जी ने समाज में ज्ञान, सत्य, और न्याय का प्रकाश फैलाया। उन्होंने लोगों को यह सिखाया कि जीवन में सत्य और धर्म का पालन करना ही सच्चा प्रकाश है। इस दिन गुरुद्वारों को भव्य तरीके से सजाया जाता है, नगर कीर्तन निकाले जाते है, और श्रद्धालु अरदास, भजन-कीर्तन, तथा प्रभात फेरी में शामिल होकर गुरु जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते है।

वैश्विक स्तरपर सारी दुनिया में जहां भी बाबा गुरु नानक देव जी के अनुयाई विशेष रूप से सिख, सिंधी या अन्य भाषी भारतीय मूल के लोग निवास करते हैं,वहां गुरु नानक देव व गुरु गोविंद सिंह जी के प्रकाश पर्व को जरूर मनाया जाता है, जो इस वर्ष सोमवार दिनांक 6 जनवरी 2025 को मनाया जा रहा है, अनेक शहरों में यह पर्व 3 दिवसीय हो रहा है जिसमें प्रभात फ़ेरी शोभायात्रा के रूप में बाबा जी की सवारी निकाली जा रही है, जैसे पटना में जो गुरु गोविंद सिंह का जन्म स्थल है वहां पर 4 से 6 जनवरी 2025 को प्रकाशपर्व शुरू हो गया है, जहाँ पूरे भारत के अनेक अनुयाई प्रकाशपर्व उत्सव में भाग लेते हैं, जहां रांची से अनेक भागों में 350 यात्रियों का जत्था भी पटना आ रहा हैं। वैसे ही पूरे देश व विदेशों से भी श्रद्धालु शामिल होते हैं।हमारी गोंदिया राइस सिटी में भी दिनांक 4 जनवरी 2025 को प्रकाशपर्व उत्सव के उपलक्ष में एक भव्य शोभायात्रा यात्रा निकाली गई जिसमें मैं प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित था, जिसमें बड़ी संख्या में सिख व सिंधी भाई शामिल थे, एक रथ में गुरु ग्रंथ साहिब विराजमान थे व माताएं बहने भजन गा रही थी, अन्य भाई पारंपरिक वेशभूषा में कमाल के करिश्में दिखाते हुए झूम रहे थे पूरे पथों पर गुरु ग्रंथ साहिब के रथ के नीचे फूलों की चादर सी बिछाई जा रही थी,पथ पर जल छिड़ककर पवित्र किया जा रहा था। हर चौक पर प्रसाद वितरण हो रहा था मुझे बहुत आनंद आया व ऐसी ही यात्रा करीब-करीब दुनियाँ के हर देश व शहर में निकालकर गुरु गुरु गोविंद सिंह साहब जी का प्रकाशपर्व मनाया जा रहा है,जिसमें 6 जनवरी 2025 को गुरुद्वारों में विशेष कार्यक्रम हो रहे हैं। पूरे देश-विदेश के शहरों में जो बोले सो निहाल, सत श्री अकाल, वाहे गुरु जी दा खालसा वाहे गुरु जी दी फतेह, चिड़िया नाल ते बाज लड़ावां, तां गोबिंद सिंह नाम धरावां आदि गुरुजी के जयकारे गूंज रहे थे। नगर कीर्तन में शामिल श्रद्धालुओं की भारी भीड़ देखकर पूरा वातावरण गुरुमय हो गया था। चूँकि गुरु नानक देव गुरु गोविंद सिंह का प्रकाश पर्व आज भी उनके हर अनुयाई के हृदय में जोश व आत्मविश्वास का संचार करता है। साथियों बात अगर हम गुरु गोविंद सिंह ने खालसा पंथ की स्थापना की करें तो,उन्होंने खालसा पंथ की स्थापना बैसाखी के दिन की थी। यह एक ऐतिहासिक घटना थी, जिसने सिख धर्म को एक नई दिशा और पहचान दी। खालसा पंथ का मुख्य उद्देश्य अन्याय, अत्याचार और अंधकार को समाप्त करना था।उन्होंने मुगलों और उनके अत्याचारियों के खिलाफ कई लड़ाइयाँ लड़ीं। उन्होंने कभी अन्याय के आगे सिर नहीं झुकाया और

न ही अपने अनुयायियों को झुकने दिया। उन्होंने सिखों को आत्मसम्मान और निडरता का पाठ पढ़ाया।उनकी प्रसिद्ध वाणी वाहेगुरु जी दा खालसा, वाहेगुरु जी दी फतेहआज भी हर सिख के हृदय में जोश और आत्मविश्वास का संचार करती है। गुरु गोबिंद सिंह जी की जयंती को प्रकाश पर्व इसीलिए कहते हैं क्योंकि प्रकाश पर्व या प्रकाश उत्सव का अर्थ है मन से बुराइयों को दूर करते उसे सत्य, ईमानदारी, और सेवाभाव से प्रकाशित करना गुरु नानक देव और गुरु गोबिंद सिंह ने समाज में ज्ञान का प्रकाश फैलाया था, इसीलिए इस दिन को इस नाम से जाना जाता है।

साथियों बात अगर हम गुरु गोविंद सिंह के जीवन को जानने की करें तो ऐसा, इतिहास पुरूष कभी भी राजसत्ता प्राप्ति, जमीन-जायदाद, धन सम्पदा या यश प्राप्ति के लिए लड़ाईयां नहीं लड़ते। श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ऐसे इतिहास पुरूष थे, जिन्होनें ताउम्र अन्याय , अधर्म अत्याचार और दमन के खिलाफ तलवार उठाई और लड़ाईयां लड़ी। गुरू जी की तीन पीढ़ियों ने देश धर्म की रक्षा के लिए महान बलिदान दिया। आज देश अपनी स्वतंत्रता की 75वी वर्षगांठ आजादी के अमृत महोत्सव के रूप में मना रहा है, ऐसे में पूरे देश में स्वतंत्रता सेनानियों, शहीदों, बलिदानियों को याद किया जा रहा है। सिखों के दसवें गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंह जी को उनकी जयंती पर नमन कर प्रत्येक भारतवासी गर्व महसूस कर रहा है। वे नौवें सिख गुरु, श्री गुरु तेग बहादुर और माता गुजरी के इकलौते बेटे थे, जिनका बचपन का नाम गोबिंद राय था। सन् 1699 ई0 में बैसाखी के दिन गुरु गोबिंद सिंह ने खालसा पंथ की स्थापना कर पांच व्यक्तियों को अमृत चखा का पांच प्यारे बना दिए। इन पांच प्यारों में सभी वर्गों के व्यक्ति थे। इस प्रकार से उन्होंने जात-पात मिटाने के उद्देश्य से अमृत चखाया । बाद में उन्होंने स्वयं भी अमृत चखा और गोबिंद राय से गोबिंद सिंह बन गए।गुरु गोबिंद सिंह ने एक खालसा वाणी वाहे गुरुजी का खालसा, वाहे गुरुजी की फतेह स्थापित की। साथ ही उन्होंने आदर्शात्मक जीवन जीने और स्वयं पर नियंत्रण के लिए खालसा के पांच मूल सिद्धांतों की भी स्थापना की। जिनमें केस, कंघा, कड़ा, कछ, किरपाण शामिल है।ये सिद्धान्त चरित्र निर्माण के मार्ग थे। उनका मानना था कि व्यक्ति चरित्रवान होकर ही विपरित परिस्थितियों व अत्याचारों के खिलाफ लड़ सकता है।

राष्ट्रवाद और धार्मिक कट्टरता के मध्य बौद्धिक संतुलन की आवश्यकता

संजीव ठाकुर

देश में अवसरवादी राजनीतिक दलों की उपस्थिति जातिवादी समीकरण के अतिवादी दृष्टिकोण, अब परिपक्व लोकतांत्रिक संस्थाओं का परिचालन एवं आमजन की सीमित तर्क बुद्धि एवं और दूरदर्शिता के कारण कई बार जनता के दूरगामी लाभ के स्थान पर तात्कालिक लाभ की प्रक्रिया से अवसरवादी अभिमत तथा तुष्टीकरण की नीति से जनता के लाभ के अवसर को दूर ले जाते हैं।

राष्ट्रवाद सार्वभौमिक सत्य है। राष्ट्र के निर्माण में राष्ट्रवाद की भूमिका हमेशा अति महत्वपूर्ण रही है। देश के हर नागरिक की जिम्मेदारी भी है कि उसकी राष्ट्र के प्रति गहरी निष्ठा,समर्पण हो, पर इसका कतई आशय नहीं है की सत्ता लोलुप राजनीतिक पार्टियां राष्ट्रवाद को धर्म संप्रदाय से जोड़कर सत्ता हथियाने का अवसर या अस्त्र बनाने का प्रयास करें, निसंदेह इस बात से राष्ट्रीय भावना विखंडित,आहत होती है। ऐतिहासिक तौर पर लगातार सत्ता पर बने रहने के लालच से कोई भी राजा सम्राट अथवा बादशाह चिंता नहीं रहा है। वर्तमान परिदृश्य में राजनीतिक पार्टी के नेता भी सत्ता लोलुपता से परे नहीं है, इस संदर्भ में कई बार राष्ट्रवाद को धर्म से जोड़कर भावनात्मक तरीके से इसे सत्ता प्राप्ति का अस्त्र तथा अवसर बनाकर उपयोग किया जाता रहा है। सत्ता सदैव परिवर्तनशील होती रहनी चाहिए, यह एक स्वस्थ लोकतंत्र की परंपरा को और मजबूत बनाती है। लगातार सत्ता किसी भी सत्ताधीश को निरंकुश बनाकर अधिनायकवाद के बीज को रोपित करती है राजनीतिक पार्टियों की अवसरवादी तथा पद लोलुपता की अभिवृत्ति जनता को तुरंत लाभ देने की सर दूरदर्शन नीति लोकतंत्र को बहुत बड़े खतरे की ओर ले जाती है एवं इससे राष्ट्रीय विकास की क्षमता में बहुत ज्यादा स्खलन होने की संभावना होती है। जनता के हितों उनकी भावनाओं से खिलवाड़ कर शोषण करना अंततः राष्ट्रीय चरित्र तथा अनुशासन के स्थान पर आर्थिक तथा सामाजिक सुरक्षा चरित्र को जन्म देती है। अवतारवाद राजनीति का एक अंग हो सकता है किंतु सदैव आशीर्वाद तथा पद लोलुपता राजनीति को गर्त में ले जाने सदस्य है यह अलग मुद्दा है कि जन भावना बहुमत की भावना तथा सामाजिक

प्रथाएं एवं तात्कालिक हित किसी भी लोकतंत्र के लिए आवश्यक अंग हो सकते हैं लोकतंत्र में विशेष परिस्थितियों में जनता का समर्थन प्राप्त करना एवं उनके हितों की रक्षा के लिए नए उपायों की अवधारणा उचित हो सकते और आवश्यक भी, किंतु राजनीति में पद लोलुपता अवसरवादी ता एवं जातिवाद को विखंडित करने की नियत किसी भी दृष्टि से लोकतंत्र के हित में नहीं दिखाई देती है। भारतीय परंपरा में भी शाम दाम दंड भेद सुशासन का प्रमुख उपकरण मान लिया गया है पर इसके दूरगामी परिणाम तुष्टीकरण के साथ-साथ अनुशासन की महत्ता को कमतर करने का कार्य करते हैं।

शख्सियत

बढ़ता राजस्थान/रूपक शर्मा

नमस्कार साथियों हमारी आज की शख्सियत कॉलम के स्टार है राजस्थान पुलिस के इंस्पेक्टर रघुवीर शरण। 24 जुलाई 1979 को दौसा में जन्मे रघुवीर शुरू से ही अपने शारीरिक मापदण्ड में सुर्खियां लिए रहे। ऐसे में कक्षा 6 तक दौसा से शिक्षा प्राप्त की। इसके बाद कक्षा 7 से एम फिल इन पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन तक की पढ़ाई जयपुर से हुई। कोटा में एम बी कॉम्पिटिशन की तयारी की। जोधपुर से फिजिक्स टीचर का कोर्स किया और 2003 एम सरकारी स्कूल बूज जमवारामगढ़ जयपुर में शारीरिक शिक्षक रहे। फरवरी 2004 मे पुलिस की विशेष शाखा में सीधे एसआई के रूप मे ज्वाइन किया। 2011में एसआई प्रमोशन हुआ। 2004 से 2013 तक स्पेशल ब्रांच में रहते हुए डिपार्टमेंट की स्पेशल टीमें एम सीक्रेट टास्क किये राज:पुलिस की हैंडबॉल टीम के कैप्टन रहते हुए 6 बार नेशनल टीम मे ऑल इंडिया गेम्स एम राजस्थान पुलिस का प्रतिनिधित्व किया। स्कूल टाइम से ही बेस्ट एथलीट और एनसीसी कैडेट आरएव रहे। 4 साल तक जयपुर अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर पीआर आप्रवासन अधिकारी के पद पर पीआर पोस्टिंग रही। वर्ष 2014 से सिविल पुलिस मे आकर जयपुर कमिश्नरेट के पुलिस थाना अशोक नगर और पुलिस थाना मानसरोवर मे लंबे समय तक उप निरीक्षक के रूप मे प्रतिस्थापित रहे। इसके बाद वर्ष 2018 में चुनाव आचार संहिता लगने पर जोधपुर आयुक्तालय में पुलिस थाना उदय मंदिर में पद स्थापित रहे वर्ष 2020 मे पुलिस थाना अधिकारी कोतवाली अलवर में पद स्थापित रहे एवं पुलिस निरीक्षक के पद पर पदोन्नति प्राप्त कर कोतवाली में ही थानाधिकारी के पद पर पद स्थापित रहे। वर्ष 2021 में पुलिस थाना रिंग्स जिला सीकर में थाना अधिकारी के पद पर पद स्थापित रहे। वर्तमान में पिछले तीन वर्ष से एसीबी मुख्यालय की विशेष अनुसंधान इकाई मे पदस्थापित रहकर भ्रष्ट लोक सेवकों के विरुद्ध प्रभावी कार्रवाई कर रहे है। रघुवीर शरण जी बहुत ही सरल और नेक इंसान है। दैनिक बढ़ता राजस्थान की टीम इनके उज्जवल भविष्य की कामना करती है।

रघुवीर शरण
पुलिस निरीक्षक

2025_008

बढ़ता राजस्थान

Suduko

					8			
					5			7
5	9			7				6
7	6	9				4		
		5		4		6	3	2
			5		6	7		9
3					4		6	
6							1	4
9	4	2	6	5				8

Ans_2025_007

6	2	3	9	8	4	5	1	7
1	7	5	2	3	6	9	4	8
4	8	9	1	5	7	2	3	6
3	4	7	8	2	5	6	9	1
2	9	6	7	1	3	8	5	4
5	1	8	6	4	9	7	2	3
7	6	4	3	9	2	1	8	5
8	5	2	4	6	1	3	7	9
9	3	1	5	7	8	4	6	2

कैसे खेलें

वर्ग को 1 से 9 तक अंकों से ऐसे भरें कि आड़ी व खड़ी पंक्ति के साथ ही 3 गुणा 3 के बॉक्स में 1 से 9 तक अंक आएं। कोई अंक दुबारा नहीं आए।

आज का राशिफल

हमारे अनुभवी ज्योतिषियों की टीम के अनुसार आप कई विधि लाभों को पूरा करेंगे। क्या आप यह जानना चाहते हैं कि आपके जीवन के ऐसे कौन से क्षेत्र हैं, जहां आपको कितने सुखद रहेंगे और दूसरी तरफ, आपको किन बातों से सावधान रहना चाहिए। हम न सिर्फ हमारे ग्रहों में और नक्षत्र सूत्रों को सुलझाकर उनका सकारात्मक ऊर्जा को मजबूत करेंगे, बल्कि पारस्परिक संबंधों में भी, जहां तक सकारात्मकता तथा संतोष और बरकत में लाभ प्रदान करेगा।

मेष

दोस्तों के साथ मुलाकात होगी। किसी तरह का आर्थिक लाभ भी हो सकता है। हालांकि, स्वास्थ्य को लेकर उतार-चढ़ाव बना रहेगा। गृह एवं संतान सम्बंधी शुभ समाचार आप को मिलेंगे। पुराने और बचपन के दोस्तों से मुलाकात हो सकती है।

वृष

आज के दिन बौद्धिक काम, नए सृजन और साहित्यिक गतिविधि में आप उलझे रहेंगे। किसी धार्मिक यात्रा का आयोजन हो सकता है। व्यापार में लाभ का अवसर मिलेगा। आज आपको कार्यालय और व्यापार में थोड़ा संभलकर चलना होगा।

मिथुन

स्वभाव में उग्रता हो सकती है, इसलिए वाणी पर संयम रखें। दोपहर के बाद आप आप मनोरंजन की ओर ज्यादा बढ़ेंगे। मित्रों और स्नेहीजनों के साथ प्रवास या पर्यटन का योग है। आज कोई महत्वपूर्ण डिसीजन आप ले पाएंगे।

कर्क

आज वाणी पर संयम रखें. स्नेहीजनों के साथ किसी बात पर विवाद हो सकता है। आय की अपेक्षा व्यय अधिक रहेगा। किसी उलझन में दिन गुजरेगा। स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहें। आप नए काम का आरंभ कर सकेंगे। मित्रों और प्रियपात्र के साथ मुलाकात सुखद होगी।

सिंह

दवाई खरीदने या अस्पताल की फीस पर आकस्मिक खर्च हो सकता है। आज दृढ़ मनोबल और आत्मविश्वास के साथ हर काम को आसानी से बना पाएंगे। गृहस्थ जीवन में सुख और शांति बनी रहेगी। शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा बना रहेगा।

कन्या

व्यापार में किसी तरह का लाभ होगा। शारीरिक और मानसिक रूप से स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। पूंजी निवेश में सावधानी बरतें। धार्मिक काम के पीछे धन खर्च हो सकता है। कोर्ट-कचहरी के विषय में संभलकर चलें। स्नेहीजनों के साथ घनिष्ठता बढ़ेगी।

तुला

अपनी वाणी और व्यवहार को संयमित रखना आपके ही हित में रहेगा। आज आपकी नौकरी और व्यवसाय में रुचि बढ़ेगी। आज स्वास्थ्य का ध्यान रखें। साथी कर्मचारियों का साथ मिलेगा। संतान की चिंता आपको हो सकती है।

वृश्चिक

मानसिक रूप से आप में भावुकता की मात्रा अधिक रहेगी। किसी बात को लेकर ज्यादा विचलित ना हों। अपनी कल्पनाशक्ति से साहित्य-सृजन में आप नवीनता ला पाएंगे। सुख-शांति बनी रहेगी। व्यवसाय में सफलता प्राप्त होगी।

धनु

आज का आपका दिन लाभकारी है। पारिवारिक और प्रोफेशनल दोनों ही क्षेत्रों में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। घर-परिवार में आनंद का वातावरण आप को खुश रखेगा। बहुत दिनों से अटके सरकारी कामों में सफलता मिलेगी।

मकर

मित्रों का सहयोग भी आप को प्राप्त होगा। विरोधियों पर विजय प्राप्त होगी। पारिवारिक शांति बनाए रखने के लिए निरर्थक वाद-विवाद न करें। धन और प्रतिष्ठा में हानि हो सकती है। आप की रचनात्मकता में सकारात्मक वृद्धि होगी।

कुंभ

स्वास्थ्य का ध्यान रखें। दोपहर के बाद पारिवारिक जीवन में हर्षोल्लास का वातावरण बना रहेगा। आज कोई नया काम शुरू कर सकते हैं। पिता से आपको लाभ होगा। ज्योतिष और आध्यात्मिक विषयों में आपकी रुचि बनी रहेगी।

मीन

सुबह का समय दोस्तों के साथ घूमने-फिरने, खान-पान एवं मनोरंजन में बीत सकता है। पार्टनरशिप काम में ध्यान रखें। व्यापार में ज्यादा लाभ की उम्मीद नहीं है। दोपहर के बाद आप को प्रतिकूलता का सामना करना पड़ सकता है। कोई छोटी यात्रा का आयोजन हो सकता है।

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक व प्रकाशक श्रीमती कमलेश विजयवर्गीय द्वारा बढ़ता राजस्थान प्रिंटिंग प्रेस,हमीरपुरा रोड खण्डवा,निवाई टोंक (राज.) से मुद्रित एवं 185/ 116 "प्रतीक्षा" सेक्टर-18, प्रताप नगर सांगानेर, जयपुर से प्रकाशित, संपादक-तनुजा पठान*। प्रधान संपादक-राम बिलास विजयवर्गीय मो. 9414242258, 9214048888,जयपुर फोन नं.0141-2796794,795 टोंक कार्यालय-बाईपास निवाई, टोंक फोन नं.01432-244881 निवाई 01438-222201,202,203 अलवर कार्यालय-मेहताब सिंह का नोहरा,अलवर मो. 7733000123,कोटा कार्यालय-छावनी मेन रोड,कोटा मो.9414823448 । ई मेल-badhatarajasthan@yahoo.com *पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार

कल्पमेधा

मैं किसी को कुछ भी नहीं पढ़ा सकता। मैं केवल उन्हें सोचने पर मजबूर कर सकता हूं।

- सुकरात

चीन का चेहरा

पिछले कुछ समय से भारत और चीन के बीच जब से संवाद की प्रक्रिया ने तेजी पकड़ी है, तब से यह माना जाने लगा है कि कड़वाहट और टकराव के लंबे दौर से आगे निकलते हुए अब दोनों देशों के बीच संबंध पटरी पर आ सकते हैं। खासतौर पर सीमा पर शांति के मुद्दे पर जिस स्तर की सहमति बनी और उस ओर कदम उठाए जाने के भी संकेत आए, तब यह उम्मीद बंधी कि शायद जटिल मसलों के दीर्घकालिक समाधान की राह खुल सकती है। मगर औपचारिक बैठकों के बरक्स जमीनी स्तर पर हर थोड़े समय के बाद चीन की ओर से कोई न कोई ऐसी गतिविधि शुरू हो जाती है, जिससे उसकी मंशा का पता चलता है। खासतौर पर सीमा पर पांव पसारने को लेकर चीन इस हद तक सक्रिय दिखता है, जो किसी अन्य देश की संप्रभुता के लिहाज से संवेदनशील हो सकता है। सवाल है कि अगर चीन भारत के साथ संबंधों को सहज बनाने और जटिल मसलों के हल के लिए संवाद स्थापित करने की प्रक्रिया की ओर बढ़ना चाहता है, तो जमीनी स्तर पर उसकी गतिविधियां इससे उलट क्यों दिखती हैं।

दरअसल, हाल में चीन के दो फैसलों ने भारत के सामने यह चिंता पैदा कर दी है कि अगर ऐसा वास्तव में होता है तब चीन से उम्मीद करने की क्या सूरत बचेगी और पहले से ही जटिल मसले और किस दिशा की ओर बढ़ेंगे। गौरतलब है कि चीन ने लद्दाख क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले इलाकों पर प्रकारांतर से अधिकार जताते हुए दो नए प्रशासनिक काउंटी बनाने का एकतरफा फैसला लिया है। यह एक तरह से भारतीय क्षेत्र में घुसपैठ है, जिसका आपसी संबंधों पर दूरगामी असर पड़ सकता है। स्वाभाविक ही भारतीय विदेश मंत्रालय ने चीन के फैसले पर 'अवैध कब्जे' का आरोप लगाते हुए उसके खिलाफ सख्त विरोध दर्ज कराया है। मंत्रालय की ओर से यह साफ शब्दों में कहा गया है कि हालांकि चीन के नए काउंटी बनाने से न तो क्षेत्र पर भारत की संप्रभुता के संबंध में दीर्घकालिक और सतत स्थिति पर कोई असर पड़ेगा, न ही इससे चीन के अवैध और जबरन कब्जे को वैधता मिलेगी। जाहिर है, भारत का पक्ष इस मसले पर बिल्कुल स्पष्ट है। मगर इसके बावजूद चीन के भीतर विस्तारवाद की कैसी भूख है कि वह गलत तरीके पड़ोसी देशों की सीमा में जबरन अपने पांव फैलाना चाहता है।

इससे पहले चीन ने तिब्बत क्षेत्र में ब्रह्मपुत्र नदी पर जो विशाल बांध बनाने की घोषणा की है, वह एक तरह से पानी को हथियार बना कर भारत को नियंत्रित करने की उसकी छिपी मंशा ही दर्शाता है। इस बांध को लेकर भी भारत की चिंता स्वाभाविक है, क्योंकि यह चीन को नदी के जल प्रवाह को नियंत्रित करने की शक्ति देता है। इसके अलावा, यह अंदाजा लगाना मुश्किल नहीं है कि अगर कभी शत्रुता की स्थिति बनी तो चीन बड़ी मात्रा में पानी छोड़ कर सीमावर्ती क्षेत्रों में बाढ़ का खतरा भी पैदा कर सकता है। हैरानी की बात यह है कि चीन की ओर से इस तरह की हरकतें तब सामने आ रही हैं, जब दोनों देशों ने करीब साढ़े चार साल से सीमा पर जारी गतिरोध और उसके मुद्दों के समाधान के लिए ठोस राह पर कदम बढ़ाने का फैसला किया था। उम्मीद इसलिए भी बंध रही थी कि आपसी सहमति के बाद सीमा पर टकराव वाले क्षेत्रों में सैनिकों की वापसी भी सुनिश्चित की जा रही थी। ऐसे में चीन भारतीय क्षेत्र में नाहक दखल देने की अपनी कोशिश को किस पैमाने से उचित ठहरा सकता है?

भविष्य की फिक्र

देश में एक ओर चिकित्सकों की कमी बड़ी समस्या बनी हुई है, तो दूसरी ओर चिकित्सा पाठ्यक्रमों में सीटें खाली रह जाती हैं। यह मुद्दा अक्सर अदालतों में उठता रहा है। दाखिले से वंचित छात्र भी गुहार लगाते रहे हैं। अब शीर्ष अदालत को स्पष्ट रूप से कहना पड़ा है कि मेडिकल पाठ्यक्रमों में सीटें खाली नहीं रह सकतीं। इस बार 'सुपर स्पेशियलिटी' संकाय में सीटें खाली रह जाने का मामला सामने आया है। सवाल है कि ऐसी नौबत हर वर्ष क्यों आती है। पिछले वर्ष भी शीर्ष अदालत ने इस पर चिंता जताई थी। तब केंद्र ने हल निकालने की कोशिश की थी और हितधारकों वाली समिति भी बनाई थी। मगर इसका क्या नतीजा निकला? क्या 'नेशनल मेडिकल काउंसिल' की दाखिला नीति में कोई खामी है। प्रति वर्ष चिकित्सा पाठ्यक्रमों में दाखिले के लिए बड़ी संख्या में छात्र प्रवेश परीक्षाएं देते हैं। मगर कई दौर की काउंसलिंग के बाद भी सीटें खाली रह जाती हैं। ऐसे में यह सवाल भी उठता है कि क्या विद्यालयों में गुणवत्ता आधारित शिक्षा विद्यार्थियों को नहीं मिल रही। क्या हमारी शिक्षा व्यवस्था की बुनियाद में कोई कमी रह गई है? इस पर विचार की आवश्यकता है। यह दुखद है कि विद्यालयों में उतनी योग्य प्रतिभाएं भविष्य के लिए तैयार नहीं हो पा रहीं, जितनी देश को जरूरत है।

पिछले साल भी चिकित्सा पाठ्यक्रम में कई सीटें खाली रह गई थीं। यह स्थिति एक तरह से इससे संबंधित नीतियों पर सवालिया निशान है। दूसरी ओर, निजी मेडिकल कालेज जिस तरह से बड़ी रकम लेकर अपनी सीटें भरते हैं, उससे कई गरीब प्रतिभाशाली विद्यार्थी अवसर से वंचित रह जाते हैं। बहुत सारे अभिभावक ऊंची फीस की वजह से अपने बच्चों की मेडिकल की पढ़ाई नहीं करा पाते। इसके अलावा, कायदे से देखें तो चिकित्सा पाठ्यक्रमों में सीटें खाली रह जाना इस तथ्य का भी सूचक है कि स्कूल से लेकर कालेजों तक में पढ़ाई-लिखाई की गुणवत्ता इस स्तर की नहीं है कि वहां से योग्य विद्यार्थी तैयार होकर इसमें दाखिले की कोशिश करें। स्वास्थ्य की समग्र तस्वीर को देखते हुए देश को सुयोग्य और विशेषज्ञ चिकित्सकों की बेहद जरूरत है। ऐसे में चिकित्सा पाठ्यक्रमों में सीटें खाली रह जाना सरकार की बड़ी विफलता है।

कामकाजी कौशल और तनाव प्रबंधन

सिर्फ आबादी बहुल देशों में ही नहीं, बल्कि अमेरिका तथा ब्रिटेन जैसे विकसित मुल्कों में भी एक जुनूनी कार्य संस्कृति की मांग उठ रही है, ताकि अर्थव्यवस्था सुदृढ़ हो सके और रोजगार क्षेत्र में संकट को दूर किया जा सके।

संजय वर्मा

नौकरियों में बढ़ते तनाव और कार्य संस्कृति में बदलाव की जितनी बातें आज हमारे देश में कही-सुनी जा रही हैं, उन्हें देखते हुए कहा जा सकता है कि वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं के साथ तालमेल बिठाने और दुनिया की ताकतवर कंपनियों से आगे निकलने का दबाव भारतीय कंपनियों पर काफी बढ़ गया है। नतीजा यह कि कभी हर हफ्ते न्यूनतम सत्तर घंटे काम करने की जरूरत रेखांकित की जाती है, तो कभी तनाव की बात स्वीकार करने पर कर्मियों को काम से ही हटाने का फरमान जारी करने की खबर आती है।

देश-दुनिया में आज ऐसे लोगों की कमी नहीं जो राष्ट्र निर्माण के लिए जुनून की हद तक जुटने के पक्ष में हैं। यह पूरा विमर्श तब और ज्यादा प्रासंगिक हो जाता है, जब पता चलता है कि सिर्फ आबादी बहुल देशों में ही नहीं, बल्कि अमेरिका तथा ब्रिटेन जैसे विकसित मुल्कों में भी ऐसी ही जुनूनी कार्य संस्कृति की मांग उठ रही है, ताकि अर्थव्यवस्था सुदृढ़ हो सके और रोजगार क्षेत्र में संकट को दूर किया जा सके। हाल में नोएडा की एक कंपनी ने अपने कर्मचारियों के कामकाजी माहौल के बीच तनाव पैदा होने संबंधी सर्वेक्षण कराया। कई कर्मचारियों ने स्वीकार किया कि काम के दबाव के कारण वे तनाव में हैं या उनकी मानसिक स्थिति पर असर पड़ रहा है। सर्वेक्षण में मानसिक तनाव स्वीकार करने वाले सौ कर्मचारियों को नौकरी से निकाल देने की खबर आई। कंपनी के मानव संसाधन विभाग ने अपने कर्मचारियों को पत्र लिखा कि प्रतिक्रियाओं पर गंभीर विमर्श के बाद तनाव की बात कहने वाले कर्मियों को कंपनी से अलग करने का निर्णय किया गया है। उद्देश्य है कि कोई भी कर्मचारी काम के दौरान तनाव में नहीं रहे। हालांकि सोशल मीडिया पर इस फैसले की आलोचना के बाद कंपनी ने सफाई दी कि कर्मचारियों को नौकरी से हटाया नहीं गया, बल्कि सर्वेक्षण का उद्देश्य कार्यस्थल पर दबावों और तनाव से जुड़ी समस्याओं को उजागर करना था। साथ ही, जिन कर्मचारियों ने तनाव की बात कही है, उन्हें यह कंपनी कुछ समय आराम करने के लिए अवकाश और अन्य सहूलियतें दे रही है, ताकि वे नई ऊर्जा के साथ काम में जुट सकें।

यह संभव है कि कंपनी का सर्वेक्षण, कर्मचारियों की प्रतिक्रिया और सोशल मीडिया पर उस कंपनी के प्रति उपजा आक्रोश एक सोची-समझी प्रचार की रणनीति हो। मगर सच है कि भारतीय कंपनियों में यह अवधारणा गहरे तक पैठी हुई है कि उनके देश की कार्य संस्कृति में मूलभूत बदलावों की जरूरत है, ताकि वैश्विक कंपनियों से मुकाबला किया जा सके। उनकी इस सोच के पीछे इस मानसिकता की अहम भूमिका है कि भारतीय कर्मचारी कम पेशेवर होते हैं। इस धारणा के मुताबिक वे आदतन आलसी होते हैं। देश के ज्यादातर सरकारी कार्यालयों में ये दृश्य बेहद आम रहे हैं कि कर्मचारी या तो वक्त पर दफ्तर नहीं आते या फिर पूरे दिन अपनी कुर्सी से गायब रहते हैं। सरकारी दफ्तरों में तो कर्मचारियों को समय पर उपस्थित देखना असंभव-सी बात मानी जाती है। यही वजह है कि अब ज्यादातर सरकारी कार्यालयों और स्कूलों में उपस्थिति दर्ज करने की बायोमीट्रिक प्रणाली लगाई जा रही है। कामकाज के आकलन के लिए सालाना मूल्यांकन

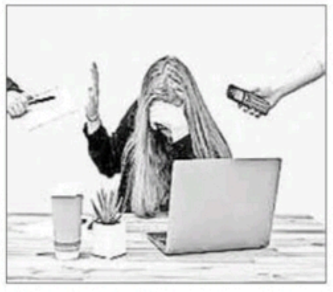

व्यवस्था को लागू किया जा रहा है।

बड़ी निजी कंपनियों में इससे ज्यादा सख्ती का माहौल है। कामकाज के वैश्विक मानकों को लागू करने वाली एक आइटी कंपनी के संस्थापक कह चुके हैं कि अगर भारत को आर्थिक महाशक्ति बनाना है तो युवाओं को हर

भारतीय कंपनियों में यह अवधारणा गहरे तक पैठी हुई है कि उनके देश की कार्य संस्कृति में मूलभूत बदलावों की जरूरत है, ताकि वैश्विक कंपनियों से मुकाबला किया जा सके। उनकी इस सोच के पीछे इस मानसिकता की अहम भूमिका है कि भारतीय कर्मचारी कम पेशेवर होते हैं। इस धारणा के मुताबिक वे आदतन आलसी होते हैं। देश के ज्यादातर सरकारी कार्यालयों में ये दृश्य बेहद आम रहे हैं कि कर्मचारी या तो वक्त पर दफ्तर नहीं आते या फिर पूरे दिन अपनी कुर्सी से गायब रहते हैं। सरकारी दफ्तरों में तो कर्मचारियों को समय पर उपस्थित देखना असंभव-सी बात मानी जाती है।

हफ्ते सत्तर घंटे काम करना होगा। उनके इस कथन का समर्थन हुआ तो विरोध भी। सिर्फ पश्चिमी मुल्क ही नहीं, बल्कि एशिया के ही कई ऐसे देशों की मिसाल दी जाती है कि किस प्रकार वहां की युवा आबादी ने ज्यादा काम कर देश की आर्थिक प्रगति सुनिश्चित की है। मसलन, जापान के बारे में दावा किया जाता है कि वहां कर्मचारी न केवल ज्यादा काम करते हैं, बल्कि वे सालाना नौ दिन की छुट्टियां भी नहीं लेते हैं। जबकि नौकरी की उनकी शर्तों में इससे दोगुने से ज्यादा छुट्टियां मिलती हैं। पड़ोसी चीन में नियोक्ता अपने कर्मचारियों से ज्यादा काम करने की अपेक्षा करते हैं। चीन में एक मशहूर ई-कामर्स कंपनी के संस्थापक भी कह चुके हैं कि कर्मचारियों को हर दिन सुबह नौ बजे से रात नौ बजे तक काम करने की जरूरत है और पांच कार्य दिवसों वाली परंपरा फिजूल है। दूसरी ओर, एक उदाहरण आस्ट्रेलिया का भी है, जहां दफ्तर से घर आने के बाद फोन या ईमेल का जवाब देने की जरूरत 'राइट-टू-डिस्कनेक्ट' के अधिकार के कारण महसूस नहीं की जाती।

पश्चिमी देशों में कुछ अंतर और भी हैं। जैसे, वहां किसी भी नौकरी या व्यवसाय के तहत काम के घंटों का समायोजन इस प्रकार किया जाता है, जिससे कर्मचारी की निजी और सामाजिक जीवनशैली नकारात्मक रूप से प्रभावित नहीं हो। 'वर्क-लाइफ बैलेंस' यानी काम और जिंदगी के बीच संतुलन कायम रखने की नीति के अंतर्गत यूरोपीय-अमेरिकी देशों में सरकारें और निजी कंपनियां यह हिसाब-किताब भी रखती हैं कि कहीं कर्मचारी ने साल में जरूरत से कम छुट्टियां तो नहीं लीं। या फिर कर्मचारी आवश्यकता से अधिक समय दफ्तर में तो नहीं रुक रहा है।

अब एक ऐसा माहौल बनाया जा रहा है कि भारतीय कर्मचारियों को पहले से ज्यादा काम करने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। यह बात तथ्यात्मक रूप से सच है कि भारत में अब कर्मचारियों से पहले के मुकाबले ज्यादा काम करने की अपेक्षा की जा रही है। एक आकलन के अनुसार पचास साल पहले भारतीयों को एक हफ्ते में औसतन उनतालीस घंटे काम करना होता था, लेकिन अब वह औसत बढ़ कर पैंतालीस घंटे हो चुका है। दिल्ली-मुंबई जैसे महानगरों में तो यह औसत साठ घंटे तक पहुंच चुका है, जबकि ब्रिटेन-अमेरिका आदि विकसित मुल्कों में कर्मचारियों से प्रति सप्ताह सिर्फ चौंतीस घंटे काम करने की अपेक्षा की जाती है। अगर ऐसा सोचा जा रहा है कि बेइंतहा दबाव और तनाव पैदा करने से उत्पादकता में बढ़ोतरी संभव है, तो इस मसले पर किए गए शोध-अध्ययनों पर गौर किया जाना चाहिए। करीब बीस साल पहले के एक शोध का नतीजा यह था कि अगर कर्मचारियों को नए-नए ईमेल भेज कर या फोन से आदेश देकर दबाव और तनावों में उलझाया न जाए, तो वे अपने काम पर ज्यादा ध्यान केंद्रित कर पाते हैं। हालांकि कोई प्रोत्साहन पाकर कर्मचारी खुशी-खुशी ज्यादा दबाव झेल जाते हैं।

पश्चिमी देशों में श्रमिक हितैषी नीतियों का परिणाम कर्मचारियों की बढ़ती संतुष्टि के रूप में निकला है। दावा है कि इन नीतियों से यूरोप में चौहत्तर फीसद, तो अमेरिका में अठासी फीसद कर्मचारी अपने काम से खुश बताए जाते हैं। उत्पादकता बढ़ाने के लिए तनाव प्रबंधन का यह कौशल भारत में काम कर रहीं कंपनियों को भी सीखना चाहिए, अन्यथा नौकरी में तनाव के सर्वेक्षण और कर्मचारियों के फर्जी निष्कासन के प्रचार की नीतियां उन्हें श्रम बाजार में विश्वसनीयता की कसौटी पर प्रतिगामी ही ठहराएंगी। इससे न तो कर्मचारियों का भला होगा और न ही उत्पादकता में वह इजाफा होगा जो उन्हें पश्चिमी देशों की कंपनियों के मुकाबले में ला खड़ा करे।

नाकामी में छिपी कामयाबी

मुनीष भाटिया

आज के प्रतिस्पर्धात्मक दौर में ज्यादातर लोग एक काल्पनिक भय में जी रहे हैं। वे वर्तमान के सुख का उपभोग करने की अपेक्षा भविष्य को संवारने और उसमें उपजने वाली काल्पनिक चिंता के मायाजाल में उलझ रहे हैं, जबकि हमें यह तक नहीं पता कि आने वाला पल कैसा होगा। आपत्ति या विपत्ति का आना कोई निश्चित नहीं है। उसी तरह हो सकता है कि आने वाला पल बेहद अच्छा हो, लेकिन अपनी विफलता के मायावी भय में जीते हुए हम अपने वर्तमान को दांव पर लगा रहे हैं। अपनी जीवन शैली को बेहतर दिखाने के फेर में व्यर्थ ही चिंता की आग में जिए जा रहे हैं। यह दबाव समाज की अपेक्षा मन की उपज है जो वर्तमान को अशांत किए हुए है। कल क्या होगा और हमारी योजनाएं कहीं असफल न हो जाएं, बस इसी असुरक्षा के भाव में हम उलझे जा रहे हैं। क्या यह समझना सबसे महत्त्वपूर्ण काम रह गया है कि कल क्या होगा? ऐसा लगता है कि यह केवल हमारी कल्पना का हिस्सा है। अगर हम अपने मन को शांत रख सकें और अपनी क्षमताओं पर भरोसा करें, तो जीवन अधिक सरल और सुंदर हो सकता है।

दुनिया मेरे आगे

हमें अपने बाल्यकाल से प्रेरणा लेते हुए जीवन में आगे बढ़ने की कोशिश करके देखना चाहिए। जिस तरह एक शिशु अपने पैरों पर खड़ा होने के लिए बार-बार गिरता पड़ता है, ठीक उसी तरह हमें अपनी असफलताओं से घबराना छोड़कर बार-बार प्रयत्न करना चाहिए। जबकि आज की भागमभाग से भरी जिंदगी में हो इससे विपरीत रहा है। जैसे-जैसे हम बड़े होते हैं, हमारा सोचने का ढंग और मानसिकता बदलने लगती है और हम लगातार असफल होने के भय से कुंठित होने लगते हैं। हमारी मानसिकता आज इस दिशा में विकसित हो रही है कि हमें अपने उद्देश्य की प्राप्ति तो करनी है, लेकिन उस उद्देश्य प्राप्ति के मार्ग में मिलने वाली असफलताओं को हम स्वीकार नहीं कर पाते। जबकि असफलताएं भी उसी मार्ग का एक पड़ाव होती हैं। सफलता की इस नवीन परिभाषा, जिसमें असफलता की गुंजाइश का अभाव हो, इसमें उलझकर आत्मविश्वास में कमी आती है। इसलिए हमें बालमन से सीखने की जरूरत है कि निरंतर प्रयास ही सफल होने का मार्ग प्रशस्त कर सकता है, न कि डरकर और थक हारकर बैठ जाने से उद्देश्य प्राप्ति हो सकती है। एक शिशु अपनी हर असफलता से सीखता है और बार-बार उठकर चलने का प्रयास करता रहता है, न कि गिरने के डर से हार जाता है।

हमारी मानसिकता आज इस दिशा में विकसित हो रही है कि हमें अपने उद्देश्य की प्राप्ति तो करनी है, लेकिन उस उद्देश्य प्राप्ति के मार्ग में मिलने वाली असफलताओं को हम स्वीकार नहीं कर पाते। जबकि असफलताएं भी उसी मार्ग का एक पड़ाव होती हैं।

मानव इतिहास भी ऐसे अनेक महापुरुषों की असफलताओं से भरा पड़ा है जो बार-बार असफल होने पर अपने उद्देश्य की प्राप्ति की जंग में पराजित नहीं हुए और आखिरकार सफल होकर इतिहास में अपना नाम स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज करवा गए। थामस एडिसन अनेक बार असफल होने के बावजूद बल्ब के अपने आविष्कार से दुनिया को रोशन कर गए और छोटे-से गांव का साधारण-सा दिखने वाला एक बालक अपने अथक प्रयासों से भारत के मिसाइल पुरुष एपीजे अब्दुल कलाम के नाम से विख्यात हुआ। इस तरह सकारात्मक दृष्टिकोण और गिरने की प्रत्येक अवस्था से कुछ सीखने की आदत को अपने जीवन शैली में शुमार कर लिया जाए, तो निश्चित ही सफलता कदम चूम सकती है।

सच यह है कि असफलता हमें सिखाती है कि सफलता का सही अर्थ क्या है। कामयाबी और असफलता उद्देश्य प्राप्ति के दो स्तंभ हैं। अपने प्रयासों में नाकामयाब होना जीवन में कोशिशों को बेहतर बनाने का मार्ग प्रशस्त करता है। प्रयासों से भयभीत होने की अपेक्षा उन्हें जीवन में अपना गुरु मान लेना चाहिए जो हमें सीखने का अवसर तो प्रदान करते ही हैं, जीवन को धैर्यवान बनाने की प्रेरणा भी प्रदान करते हैं। यह असफलता ही है जो हमें संघर्षों से भरे जीवन में हमारे प्रयासों का मूल्य बताती है। सीखने या प्रयास करने के क्रम में मिली नाकामयाबी हमें जीवन में यह सीख देती है कि जीवन जीने के रास्ते में आने वाली कठिनाइयां जीवन की बाधा नहीं हैं, बल्कि ये एक सीढ़ी बनकर आगे बढ़ने में सहायक भी बनती हैं और इससे खुद पर विश्वास करने और आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा मिलती है। इसलिए असफलता को नकारात्मक रूप में न लेकर सकारात्मक दृष्टि से देखना चाहिए, ताकि हम मुसीबत में रुकने के बजाय अपनी रणनीति को जरूरत के मुताबिक परिवर्तित कर सकें और उद्देश्य प्राप्ति के अपने मार्ग का निर्धारण कर सकें। यह भी याद रखने की जरूरत है कि सफलता उन्हीं का स्वागत करती है, जो गिरकर फिर से उठते हैं और चलते रहते हैं।

विपरीत परिस्थितियों का एक आम खमियाजा यह होता है कि हम खुद को कमजोर महसूस करने लगते हैं। जबकि सच यह है कि अगर हम असफलता के सामने हार नहीं मानें तो सफलता हमारी राह देखती है। हर असफलता के साथ हम सफलता के एक कदम और करीब आ जाते हैं। यह एक स्थापित सत्य है कि हम मेहनत करेंगे तो हमें कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है, लेकिन यही कठिनाइयां हमें कामयाबी की उड़ान भरने के लिए पंख देती हैं। कहा भी कहा गया है कि हर असफलता यह साबित करती है कि हमने सफलता के लिए पूरे मन से प्रयास नहीं किया। सफलता की लोकप्रिय परिभाषा के प्रभाव में नाकामी से हार मानने के बजाय उससे कुछ सीखना चाहिए और अपने जीवन को मूल्यवान अनुभवों से समृद्ध करना चाहिए। जो अपना रास्ता खुद बनाता है वह सफलता के शीर्ष पर पहुंचता है। इसके विपरीत जो दूसरों की राह देखता है, सफलता भी दूर से उसकी ओर देखती है।

हमें लिखें, हमारा पता : edit.jansatta@expressindia.com | chaupal.jansatta@expressindia.com

खतरे में विरासत

पिछले वर्ष मोहम्मद यूनुस बांग्लादेश के अंतरिम सरकार के मुख्य सलाहकार नियुक्त हुए थे। उस समय लगा था कि वे देश को आगे ले जाएंगे, लेकिन उन्होंने वहां अराजकता के बावजूद अपनी आंखें बंद कर लीं। नतीजा यह कि कट्टरपंथी पूरे बांग्लादेश, उसके मुक्तियुद्ध एवं राष्ट्रपिता वाले तमाम इतिहास को बदल देने पर उतारू हैं। क्या सच में बंगबंधु शेख मुजीबुर रहमान का उस देश के गठन में कोई योगदान नहीं है? वहां स्कूलों के पाठ्यक्रम में भी बदलाव किया जा रहा है। इतिहास को तोड़-मरोड़ कर बच्चों को पढ़ने के लिए बाध्य किया जा रहा है। इस तरह से बांग्लादेश की विरासत और इतिहास को बदल कर वहां की सरकार क्या हासिल करना चाहती है? इतना ही नहीं, बांग्लादेश ने पुराने नोटों से मुजीबुर रहमान की छवि हटाने का भी फैसला किया है। पंद्रह अगस्त 1975 को शेख मुजीब के साथ उनके परिवार के सदस्यों की हत्या कर दी गई थी, उनकी स्मृति में वहां हर साल इस दिन अवकाश रहता है। अब इसे भी वहां की वर्तमान सरकार ने खत्म कर दिया है। जब कार्यवाहक सरकार ही इतने बड़े फैसले कर रही है, तो चुनाव के बाद जब असल सरकार आएगी, तो वह न जाने क्या करेगी?

- जंग बहादुर सिंह, जमशेदपुर

मौत के दरवाजे

खुले बोरवेल मौत के दरवाजे बन गए हैं। ज्यादातर बोरवेल बच्चों के लिए मौत का सबब बनते जा रहे हैं। ये अक्सर लापरवाही से खुले छोड़ दिए जाते हैं। इनमें बच्चों के गिरने की कई घटनाएं हो चुकी हैं। फिर भी इसे गंभीरता से नहीं लिया जाता। कई वर्ष पहले शीर्ष न्यायालय ने ऐसे बोरवेल ढकने के निर्देश दिए थे, पर राज्य सरकारों की लापरवाही और जिला प्रशासन के सजग न रहने के कारण ऐसे हादसे बढ़ते ही जा रहे हैं। आश्चर्य की बात है कि घटना के वक्त प्रशासन मुस्तैदी से बचाव में जुट जाता है, लेकिन इसकी रोकथाम के लिए पहले से कोई उपाय नहीं करता। ऐसे में सामाजिक जिम्मेदारी बढ़ जाती है। लोगों को खुले बोरवेल की जानकारी प्रशासन को तुरंत देनी चाहिए। ऐसी घटनाएं रोकने के लिए राजस्व विभाग को जवाबदेह बनाना चाहिए जो कृषि संबंधी पूरी जानकारी रखता है। बोरवेल का काम पूरा होने पर उसे तुरंत बंद कर देने का कड़ा नियम होना चाहिए।

- अमृतलाल मारू 'रवि', इंदौर

नया अध्याय

'अंतरिक्ष में छलांग' (संपादकीय, 2 जनवरी) पढ़ा। इसरो के मिशन स्पैडेक्स ने भारतीय अंतरिक्ष इतिहास में एक नए अध्याय की शुरुआत कर दी है। केवल इस एक मिशन की सफलता पर एक साथ कई अन्य अभियानों की सफलता टिकी हुई है जो आज तक केवल तीन राष्ट्र ही कर पाए हैं। अंतरिक्ष में जाकर यान का अलग होना और पुनः जुड़ना। इसके बाद फिर धरती पर वापस आना, हमें अंतरिक्ष से जुड़ी जानकारी और साक्ष्यों के लिए अन्य देशों पर निर्भरता से मुक्त कर देगा। यह बहुत बड़ी उपलब्धि है। आने वाले समय में भारत अंतरिक्ष में अपना केंद्र बना सकेगा। चंद्रमा पर अंतरिक्ष यात्रियों के जाने और वापस लौटने में आसानी होगी। हम चंद्रमा पर यान भेज कर भौतिक साक्ष्य ला सकेंगे। इस लिहाज से देखें, तो शुक्रयान एवं गगनयान जैसे अति महत्त्वाकांक्षी अभियान अवश्य सफल होंगे। ध्यान देने की बात है कि इसरो न्यूनतम खर्च में सर्वाधिक श्रेष्ठ काम करता है। यह दुनिया के लिए मिसाल है।

- ज्योत प्रकाश, दिल्ली

स्याह स्मृतियां

भोपाल गैस त्रासदी के कारण न केवल हजारों लोगों की मौत हुई, बल्कि पांच लाख की आबादी भी प्रभावित हुई थी। उस हादसे की स्याह स्मृतियां हैं। दुर्घटना के 40 वर्ष बाद यूनियन कार्बाइड के जहरीले अपशिष्ट के निस्तारण की प्रक्रिया शुरू हुई है। लगभग 337 टन जहरीले कचरे को पीथमपुर ले जाया गया, जहां इसका निस्तारण किया जाएगा। इसके पहले वर्ष 2015 में करीब दस टन कचरे का निस्तारण किया गया था, तब वहां की जमीन और जल पर प्रतिकूल असर पड़ा था। इसलिए अब पीथमपुर में निस्तारण का पुरजोर विरोध हो रहा है। इस जहरीले कचरे को जलाने से हवा प्रदूषित होने और खेती की जमीन खराब होने तथा पानी दूषित होने की संभावना है। इसलिए इस जहरीले अपशिष्ट को हवा रहित बैग में पैक कर गहरे समुद्र में डालने पर विचार किया जाना चाहिए।

- अरविंद जैन, उज्जैन

अमेरिका में हिंसा

चिन्ताजनक स्थिति

अमेरिका में अक्सर होने वाली हिंसा की घटनायें चिन्ताजनक स्थिति प्रकट करती हैं। अमेरिका में नव वर्ष की शुरुआत अच्छी नहीं हुई। अमेरिका में हुई हमलों की अनेक घटनाओं ने सबको झकझोर दिया। न्यू ओरलिंस में एक ट्रक भीड़ पर चढ़ गया तथा लासवेगास में गोलीबारी हुई। जल्दी-जल्दी होने वाली इन घटनाओं ने हिंसा की चिन्ताजनक प्रवृत्ति प्रकट की है जिसके कारणों और संभावित प्रभावों के गहरे विश्लेषण की आवश्यकता है। न्यू ओरलिस में शमसूद दीन जब्बार ने एक ट्रक भीड़ पर दौड़ा दिया जिसमें 15 लोग मारे गए तथा 30 घायल हुए। इस ट्रक में आईएसआईएस का झंडा, हथियार तथा संभावित इम्प्रोवाइज्ड डिवाइसेज्-आईईडी बरामद हुई। जब्बार पुलिस के साथ हुई मुठभेड़ में मारा गया तथा एफबीआई इस घटना को आतंकी हमला मान रही है। इसके साथ ही बुधवार को देर रात न्यूयार्क के क्वींस में अमाजूरा नाइट क्लब में भीड़ पर गोलीबारी की एक घटना में कई लोग घायल हुए। इस बीच निर्वाचित अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के लासवेगास स्थित होटल के बाहर एक टेस्ला साइबरट्रक में विस्फोट से एक व्यक्ति मारा गया तथा सात अन्य घायल हो गए। इन हमलों के पीछे इरादे स्पष्ट नहीं हैं, पर शुरुआती जांच से वैचारिक प्रभाव स्पष्ट होते हैं। इन हमलों में कुछ समानतायें हैं। सभी घटनायें भारी भीड़ वाले हाई-प्रोफाइल स्थानों पर हुई ताकि हताहतों की संख्या अधिकाधिक हो और इनको खूब मीडिया कवरेज मिले।

न्यू ओरलिंस तथा संभवतः लासवेगास में वैचारिक उद्देश्य केन्द्रीय भूमिका में लगते हैं क्योंकि जब्बार के आईएसआईएस से संबंध अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद के निरंतर खतरे की ओर इशारा करते हैं। वाहन, विस्फोटकों और बंदूकों के प्रयोग से हमलावरों की कार्यपद्धति का पता चलता है। ऐसी घटनाओं को रोकना लगातार जटिल होता जा रहा है। इन घटनाओं के पीछे प्रेरणा के कारण अनेक दिलचस्प आयाम पेश करते हैं। जब्बार के मामले से स्पष्ट होता है कि कैसे अमेरिकी नागरिकों समेत अनेक लोग अतिवादी प्रचार से चरमपंथी बनाए जा सकते हैं जिसमें आनलाइन नेटवर्क बहुत सहायता करते हैं। न्यूयार्क की घटना 'मुक्त बंदूक संस्कृति' और बंदूकों पर नियंत्रण लगाने के किसी कानून का विरोध करने का खतरा प्रकट करती है। लासवेगास की शुरुआती रिपोर्टों से मानसिक स्वास्थ्य चुनौतियों का वैचारिक झुकाव से संबंध स्पष्ट होता है जो हमलों को जन्म दे सकती हैं। यह प्रवृत्ति लगातार 'लोन वुल्फहमलावरों' के मामलों में दिखाई देती है। अतिवाद के बढ़ते खतरे के साथ बेलगाम भावनायें तथा आग्नेयास्त्रों तक आसान पहुंच निरपराध लोगों का जीवन छीन रही है। ऐसे हमले निगरानी बढ़ाने तथा खासकर आनलाइन प्लेटफार्मों और अतिवादी नेटवर्कों की निगरानी लगातार तेज करने की आवश्यकता उजागर करते हैं। बंदूकों पर नियंत्रण समय की आवश्यकता है। हालांकि, अमेरिका बंदूकों पर नियंत्रण के मामले में विभाजित है, पर इसे इस दिशा में कम से कम कुछ कदम जरूर उठाने चाहिए। हालिया हमलों से अमेरिका में एक विस्फोटक और विकसित होता खतरा स्पष्ट होता है। हालांकि, कानून-व्यवस्था एजेंसियों की त्वरित कार्रवाई से त्रासदी को काफी सीमा तक नियंत्रित किया जा सका, पर ऐसी हिंसा के मूलभूत कारणों पर विचार के लिए बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाना जरूरी है। इसके लिए उग्रवादीकरण पर लगाम लगाने के साथ ही समुदाय में वैचारिक विमर्श से समुचित दृष्टिकोण विकसित करना शामिल है। इससे समुदाय में अतिवादी विचारों के प्रति दृढ़ प्रतिरोध विकसित होगा। जब अतिवादी शक्तियां जनता में भय और विभाजन पैदा करने का प्रयास करें तो पूरे देश को सतर्क और एकजुट बने रहना जरूरी होता है। यह बात संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए भी सही है।

वैश्विक प्रभुत्व में जलमार्गों का महत्व

विचारधाराओं और संसाधनों पर विमर्श के बावजूद इतिहास एक कटु यथार्थ उजागर करता है। विश्व व्यापार वाले जलमार्गों पर नियंत्रण रखने वाले का ही वैश्विक प्रभुत्व होता है।

नीलांत इलांगमुवा
(लेखक, वरिष्ठ पत्रकार हैं।)

आपको आश्चर्य होगा कि दुनिया में हुए बड़े-बड़े युद्ध अक्सर भूमि या संपदा के बजाय पानी और खासकर उन संकरे रणनीतिक जलमार्गों को लेकर होते रहे हैं जो विश्व वाणिज्य के प्रवाह पर नियंत्रण करते हैं। हमें यह विश्वास दिलाया गया है कि युद्धों का कारण विचारधारायें, धर्म या संसाधन होते हैं, पर यथार्थ में सबसे बड़े शक्ति संघर्ष हमेशा जलमार्गों पर नियंत्रण के लिए होते रहे हैं। 431-404 ईसापूर्व तक चले पेलोपोनेसियन युद्ध में एथेंस ने ऐगान समुद्र पर प्रभुत्व जमाया, जबकि 246-146 ईसापूर्व के प्यूनिक युद्धों में रोम और कार्थेज के बीच मिडटेरेनियन व्यापार मार्गों के लिए लड़ाई हुई। 8वीं से 11वीं शताब्दी के वाइकिंग हमलों में यूरोप में फैली नदियों और समुदतटीय मार्गों को लेकर लड़ाई हुई। 1337-1453 तक चले हंड्रेड इयर वार्स इंग्लिश चैनल पर नियंत्रण के लिए हुए जो सैनिक व व्यापार पहुंच के लिए महत्वपूर्ण था। 1588 में स्पैनिश अर्मांडा ने इंग्लैंड पर चैनल के द्वारा हमला करने का प्रयास किया, पर वह विफल रहा। इससे इंग्लिश चैनल वाली नौशक्ति का विकास हुआ। 1652-1674 तक चले एंग्लो-डच युद्धों में वैश्विक व्यापार मार्गों पर नियंत्रण के लिए अंग्रेजों और डच में युद्ध हुए। 1839-1860 तक हुए अफीम युद्धों में ब्रिटेन ने चीनी व्यापार मार्गों पर नियंत्रण का प्रयास किया, जबकि 1853-1856 तक हुए क्रीमियन युद्ध में काला सागर और उसके प्रमुख क्षेत्रों पर कब्जे की लड़ाई थी। इस प्रकार इतिहास हमें एक ऐसे सत्य से साक्षात्कार कराता है जिसे इनकार नहीं किया जा सकता है कि जो भी जलमार्गों पर नियंत्रण करता है, दुनिया उसी की होती है। ऐसे में सवाल उठता है कि क्या जलमार्गों पर पैदा आज के तनाव साम्राज्यवादी इतिहास का नवीनतम अध्याय हैं जहां पश्चिम अपना प्रभुत्व बनाए रखने का प्रयास कर रहा है, भले ही इसके लिए चाहे जो कीमत अदा करनी पड़े? मिडटेरेनियन व लाल सागर के बीच कृत्रिम रूप से बनाई गई स्वेज नहर इसका एक उदाहरण है। सतही तौर से देखने पर यह विश्व व्यापार की जीवनरेखा लगती है, पर गहराई से विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि यह पश्चिमी शोषण का केन्द्र है। अंग्रेजों द्वारा 1882 में 'अपने निवेशों की सुरक्षा' के बहाने इस पर नियंत्रण के बाद न केवल उनके समुद्री मार्ग छोटे हो गए, बल्कि उन्होंने दुनिया के जहाज मार्गों पर अपनी पकड़ मजबूत करते हुए यह सुनिश्चित किया कि वे विश्व वाणिज्य में प्रभुत्वशाली शक्ति बने रहेंगे। जब मिस्र के नेता नासिर ने यह पकड़ तोड़नी चाही तो उनकी कार्रवाइयों से स्वेज संकट पैदा हो गया। ब्रिटेन, फ्रांस और इजराइल ने अपना नियंत्रण बनाए रखने के लिए सैनिक हस्तक्षेप किया। अमेरिकी विदेश सचिव जान फास्टर डलेस ने कहा था, 'अमेरिका कभी वाणिज्य के मुक्त प्रवाह में बल के प्रयोग से हस्तक्षेप को सहन नहीं करेगा।' इससे स्पष्ट है कि उपका तात्पर्य केवल वाणिज्य से नहीं था, बल्कि यह पश्चित द्वारा किसी भी कीमत पर अपना एकाधिकार स्थापित करने का प्रयास था। इसी प्रकार पनामा नहर पर दृष्टिकोण साम्राज्यवादी रणनीति का उदाहरण है। अमेरिका ने न केवल नहर 'बनाई', बल्कि उस पर 'कब्जा' भी कर लिया।

पनामा नहर का अस्तित्व इसलिए सामने आया क्योंकि अमेरिका ने 1903 में कोलम्बिया की संप्रभुता को तोड़ दिया। यह केवल इंजीनियरिंग का चमत्कार न होकर साम्राज्यवादी रणनीति थी। इस नहर के माध्यम से अमेरिका ने एटलांटिक व प्रशांत पर बेलगाम नियंत्रण स्थापित कर आने वाली शताब्दियों में अपने सैनिक और आर्थिक प्रभुत्व की गारंटी सुनिश्चित कर दी। जब पनामा में असंतोष पैदा हुआ और सीआईए के एक समय मित्र मैनुअल नोरिगा ने स्थापित व्यवस्था को खतरा पैदा किया जो अमेरिका ने 'नशे के व्यापारियों से संघर्ष' के बहाने सैनिक शक्ति का प्रयोग किया। बहुत से लोगों के लिए यह आदर्श कृत्य था, पर आलोचक इसे दुनिया के एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण जलमार्ग पर नियंत्रण का क्रूर कदम मानते थे। तकनीकी रूप से इस नहर को 1999 में फिर से पनामा को सौंप दिया गया, पर यह मूल रूप से पश्चिमी नियंत्रण का महत्वपूर्ण औजार बनी रही। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हर्मुज की खाड़ी से दुनिया का एक चौथाई तेल व्यापार होता है। अंग्रेजों ने इसका महत्व पहले ही समझ लिया था और 19वीं शताब्दी के संरक्षणवादी समझौतों से अपना प्रभुत्व सुनिश्चित किया। 1980 के दशक में ईरान-ईराक युद्ध के समय तक हर्मुज विश्व तेल व्यापार का केन्द्र बनी रही और इसे बाधित करने के प्रयास की तीखी प्रतिक्रिया हुई। दोनों पक्षों ने इसे बंद करने का प्रयास किया क्योंकि हर्मुज पर नियंत्रण का अर्थ वैश्विक ऊर्जा पर नियंत्रण था। हालांकि, आज भी ईरान अपनी सैनिक ताकत दिखाने का प्रयास करता है, पर पश्चिमी शक्तियां इस जलमार्ग पर लगातार निगरानी करती हैं जैसे यह उनका जन्मसिद्ध अधिकार हो। इस प्रकार तेल का सहज प्रवाह सुनिश्चित किया जाता है। अब दुनिया एक नये युग में प्रवेश कर रही है और नार्दन सी रूट-एनएसआर शक्ति के नवीनतम केन्द्र के रूप में उभर रहा है। रूस के आर्कटिक तट तक फैला यह मार्ग स्वेज व पनामा नहर जैसे परंपरागत बिंदुओं को किनारे छोड़ने की क्षमता रखता है। इससे यह विश्व जहाजरानी के लिए नया मार्ग खोलता है। बर्फ पिघलने के कारण जलवायु परिवर्तन ने प्रभुत्व का नया मैदान खोल दिया है। जलवायु परिवर्तन समाधान की सभी अच्छी-अच्छी बातों के बावजूद पश्चिम एनएसआर के बारे में बहुत असहज है। शताब्दियों से पश्चिमी समुद्री शक्तियां विश्व व्यापार अपनी इच्छा से निर्देशित करती रही हैं, पर नए मार्ग के कारण उनका लंबे समय से स्थापित नियंत्रण खतरे में फंस सकता है। इसके साथ ही तुर्की की खाड़ी है, जहां नियंत्रण हमेशा धोखाधड़ी के रूप में आता रहा है। 1936 के मांट्रिक्स सम्मेलन से तुर्की का खाड़ी पर कब्जा रहा है, पर इस शर्त के साथ कि वह पश्चिम के हितों की पूर्ति करेगा। यह क्षेत्र तनाव का कारण बना हुआ है क्योंकि रूस-नाटो टकराव से इस संकरे जलमार्ग का महत्व स्पष्ट हो गया है।

इन सभी टकरावों से एक चीज स्पष्ट है कि पश्चिमी शक्तियां कभी नियंत्रण की अपनी इच्छा नहीं छोड़ेंगी। आज खाड़ी में चीन के बढ़ते प्रभाव से अमेरिका असहज है। वह हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव पर लगाम लगाना चाहता है। राजनीतिक शक्ति के रूप में डोनाल्ड ट्रंप के उभार ने स्पष्ट किया है कि जलमार्गों पर नियंत्रण की लड़ाई तेज हो सकती है। ग्रीनलैंड पर उनकी टिप्पणी तथा आवश्यकता होने पर पनामा नहर पर कब्जे की बात केवल मजाक नहीं हैं। आर्कटिक पर अमेरिकी प्रभुत्व की इच्छा हमेशा उसकी विदेश नीति का अंग रही है और यह स्थिति एक शताब्दी से अधिक समय से बनी हुई है। पनामा नहर के बारे में उनके बयान से भी यही बात स्पष्ट होती है। हम भले ही उनकी टिप्पणियों को दुनिया के यथार्थ से कटे एक व्यक्ति की बेलगाम लफ्फाजी कह कर खारिज कर दें, पर इतिहास को बेहतर ढंग से समझने वाले लोग जानते हैं कि साम्राज्य कैसे राजनीतिक बयानबाजी के माध्यम से सुनियोजित ढंग से काम करते रहे हैं। मुख्य बात यह है कि जलमार्गों पर नियंत्रण अब कोई छिपी बात नहीं है। इन पर नियंत्रण पहले की तुलना में और संघर्षपूर्ण हो गया है, चाहे यह पश्चिमी शक्तियों द्वारा हो अथवा साम्राज्यवादी व विस्तारवादी इच्छा रखने वाली दूसरी शक्तियों द्वारा।

मंत्रों की रूपांतरणकारी शक्ति

> व्यक्ति गुरु से मंत्रों की विद्या प्राप्त करे। किताबों, इंटरनेट से पढ़ना या टेलीविजन, सोशल मीडिया पर सुनना और स्वयं अभ्यास शुरू करना हानिकारक प्रभाव डाल सकता है यदि जाप उचित नहीं है।

अश्विनी गुरुजी
(लेखक, आध्यात्मिक गुरु हैं)

आपने गुरु शुक्राचार्य द्वारा दी गई संजीवनी विद्या के बारे में सुना होगा, जो मृतकों को वापस जीवन में ला सकती थी, या संजीवनी बूटी नामक एक निश्चित जड़ी बूटी के बारे में सुना होगा, जिसने लक्ष्मण को वापस जीवन में लाया था। आपने ऋषि दधीचि के पास मौजूद मधु विद्या या ब्रह्मविद्या के बारे में भी सुना होगा जो अमरता प्राप्त करने में सक्षम थी, या ऋषि च्यवन को युवा बनाने के लिए अश्विनी कुमारों द्वारा तैयार किए गए च्यवनप्राश के बारे में भी सुना होगा। ये कहानियाँ या काल्पनिक रचनाएँ नहीं हैं, वैदिक ऋषि सृष्टि के स्वामी थे, मानव शरीर उसका एक सूक्ष्म हिस्सा है। इसका प्रमाण कि ये काल्पनिक नहीं थे, इस तथ्य में निहित है कि अधिकांश आधुनिक वैज्ञानिक खोजें वैदिक शास्त्रों से हुई हैं। आप यह जानने के लिए जा सकते हैं कि कौन सी वैज्ञानिक खोज किस शास्त्र से हुई है। जबकि अधिकांश प्राचीन वैदिक चिकित्सा विज्ञान कलियुग की धूल में खो गए हैं सनातन क्रिया में वर्णित दिव्य चिकित्सा मंत्र वैदिक ज्ञान के खजाने से एक ऐसा ही रत्न है। दिव्य चिकित्सा मंत्र आपके शरीर में वांछित प्रभाव और परिवर्तन लाने के लिए ध्वनि और कंपन का उपयोग करते हैं।

जब सही तरीके से किया जाता है तो उनके उपचार और परिवर्तनकारी प्रभाव सभी के लिए स्पष्ट होते हैं। 7 मंत्रों का एक संयोजन कुछ नाड़ियों (ऊर्जा चैनलों) को खोलने और विशिष्ट केंद्रों को जागृत करने का काम करता है, ताकि एक साधक के लिए दिव्य ऊर्जा की शक्ति को निर्देशित किया जा सके। ऐसा कहा जाता है कि एक देवता का शरीर मंत्र में निवास करता है। यह व्यावहारिक रूप से प्रत्येक व्यक्ति द्वारा अनुभव किया गया है जिसने ध्यान आश्रम में एक यज्ञ में भाग

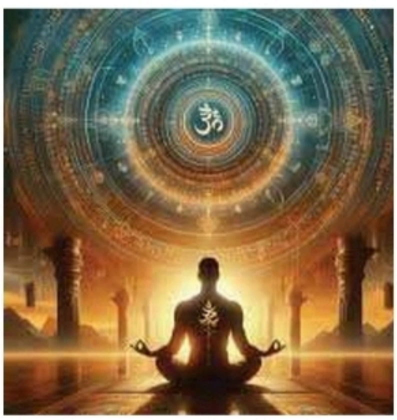

लिया है जहां यज्ञ अग्नि में प्रकट विशिष्ट मंत्रों के माध्यम से देवताओं के पूर्ण रूपों का आह्वान किया गया था। मंत्र को फल देने के लिए, इसे प्राचीन गुरु शिष्य परम्परा के अनुरूप एक गुरु से प्राप्त करना होगा जो मंत्र में सिद्ध हो। वैदिक मंत्र की प्रभावशीलता उसके जाप की शुद्धता पर निर्भर करती है; एक भी अक्षर का गलत उच्चारण पूरे अर्थ को बदल देता है। तैत्तिरीय संहिता में इस संबंध में त्वष्टा की कथा वर्णित है। त्वष्टा ने इंद्र को नष्ट करने के लिए यज्ञ किया। उसने अपने विचार प्रकट करने के लिए इंद्रशत्रु मंत्र का प्रयोग किया।

हालाँकि, उसने शत्रु के बजाय इंद्र शब्द पर एक बड़ा नोट रखा, जिसके कारण शब्द का अर्थ इंद्र का वध करने वाला से बदलकर इंद्र द्वारा मारा जाने वाला हो गया और इस तरह उससे पैदा हुआ पुत्र वृत्र, सिर्फ उच्चारण दोष के कारण इंद्र से हार गया। पाणिनि शिक्षा के हवाले से, सही स्वर (स्वर) और व्यंजन (वर्ण) से रहित मंत्र दोषपूर्ण है और इसका इच्छित अर्थ नहीं बताता है। यह एक मौखिक वज्र की तरह है जो जप करने वाले को नुकसान पहुंचाता है, जैसा कि शब्द के गलत उच्चारण के मामले में हुआ था, इंद्रशत्रु)। वैदिक ऋषियों ने मंत्रों के रूप में ध्वनि के इस अविश्वसनीय विज्ञान में महारत हासिल की थी, वे ध्वनि की शक्ति का दोहन करने के लिए आवश्यक उच्च स्तर की विशिष्टता और सटीकता से अच्छी तरह वाकिफ थे। शिक्षा, छह वेदांगों में से एक, शब्दों के उचित उच्चारण और व्यंजना के नियमों के विज्ञान से संबंधित है। पाणिनि, याज्ञवल्क्य और वशिष्ठ द्वारा शिक्षा पर कई खंड लिखे गए हैं। शतपथ ब्राह्मण में कहा गया है कि एक शब्द के प्रत्येक अक्षर में किसी प्रकार की शक्ति होती है और हर अक्षर का रहस्य समझाया गया है। इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि व्यक्ति गुरु से मंत्रों की विद्या प्राप्त करे। किताबों/इंटरनेट से पढ़ना या टेलीविजन/सोशल मीडिया पर सुनना और स्वयं अभ्यास शुरू करना हानिकारक प्रभाव डाल सकता है यदि जाप उचित नहीं है।

आप की बात

गुरु गोविंद सिंह जी का संदेश

श्री गुरु गोविंद सिंह जी सर्वस्वदानी, संत सिपाही, अमृत के दाता थे। उनका जीवन संघर्ष, कुर्बानी, तपस्या और मानवता की सेवा की जीती जागती मिसाल है। इसी कारण उन्हें संत और सिपाही दोनों ही उपमाएं एक साथ दी जाती हैं। उन्होंने समाज में ऊंच नीच को समाप्त करने और समुचित मानवता की सेवा का संदेश दिया। पटना बिहार में 1666 में श्री गुरु गोविंद सिंह जी का जन्म हुआ। उनका बचपन पटना में गंगा के किनारे बीता। एक बार जब गंगा के किनारे गए तो हाथ का सोने का कड़ा उतार नदी में फेंक दिया और माता जी से भी कह दिया कि कड़ा गंगा में फेंक दिया। माता ने जब पूछा कि चल बता कहां फेंका तो माताजी के साथ जाकर दूसरा सोने का कड़ा भी उसी जगह फेंक दिया और कहा कि वहां फेंका था। इस घटना से गुरु गोविंद सिंह जी ने दुनिया को बाल अवस्था में ही बता दिया कि मैं दुनिया को देने आया हूं, दुनिया से कुछ लेने नहीं। श्री गुरु गोविंद सिंह जी ने दुनिया को संदेश दिया कि धर्म कुछ इस तरह हो कि कोई भी आए लेकिन आपकी जपने वाली माला ना छीन सके। हर धर्म,हर मजहब को आजादी होनी चाहिए अपने धर्म को मानने की। अपनी इबादत की, पूजा की। हर धर्म, हर मजहब अपने रीति रिवाज के साथ आजादी से जी सके इसके लिए जुल्म के खिलाफ चाहे हथियार उठाने भी पड़े तो तैयार रहना चाहिए।

-सरदार मंजीत सिंह

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना का विस्तार सरकार की किसानों के प्रति संवेदनशीलता और उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करने की दृढ़ता को दर्शाता है। प्राकृतिक आपदाओं से फसल नुकसान की भरपाई के लिए 3850 करोड़ रुपये की स्वीकृति किसानों को आर्थिक स्थिरता और आत्मनिर्भरता प्रदान करेगी। डीएपी पर सब्सिडी जैसे कदम उत्पादन लागत कम कर, किसानों के लाभ को बढ़ाएंगे। यह पहल न केवल कृषि क्षेत्र को मजबूती देगी, बल्कि किसानों के आत्मविश्वास और जीवन स्तर को भी नई ऊंचाई पर ले जाएगी। यह निर्णय भारतीय कृषि के उज्ज्वल भविष्य की ओर एक सकारात्मक कदम है। उल्लेखनीय है कि भारत एक कृषि प्रधान देश है और देश के विकास में किसानों का महत्वपूर्ण योगदान है। देश की बहुत बड़ी जनसंख्या कृषि कार्यों में लिप्त है। इसलिए केंद्र और राज्यों की सरकारों को अन्नदाताओं के हित में सभी आवश्यक कदम उठाने चाहिए। यदि किसान की हालत ठीक नहीं रहेगी तो देश के बड़ी जनसंख्या आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त नहीं हो सकेगी। वैसे भी खेती-किसानी भगवान भरोसे अधिक रहती है क्योंकि मौसम का किसानों पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। किसान कभी बाढ़, कभी सूखा से जूझता ही रहता है लेकिन वह कभी रुकता नहीं है।

-प्रो. आरके जैन 'अरिजीत', बड़वानी (म.प्र.)

पुनः परीक्षा की मांग

बिहार लोक सेवा आयोग द्वारा 13 दिसंबर 2024 को विभिन्न पदों के लिए परीक्षा करवाई गई जिसके उपरांत यह पाया गया कि पटना के कुमरार स्थित बापू परीक्षा परिसर मे धांधली के बाद बीएससी के आयोग द्वारा कुमरार स्थित बापू परीक्षा परिसर का परीक्षा रद्द कर दिया गया जबकि पूरे बिहार का परीक्षा यथासंभव रहने दिया गया। इसी को लेकर पिछले कई दिनों से छात्र पटना के गर्दनीबाग में धरना स्थल पर बैठे हुए हैं। उनका कहना है कि परीक्षा पुनः करवाई जाए परीक्षा में धांधली हुई है, प्रश्न पत्र वायरल हुआ है, बिहार लोक सेवा आयोग पैटर्न के अनुसार जो पिछले कई सालों से परीक्षा करवाई जा रही थी, उसके अनुसार इस बार परीक्षा नहीं हुआ। इसी को लेकर छात्रों में आक्रोश, आयोग के प्रति नाराजगी, तनाव एवं उग्र रूप है। इसी आंदोलन के बीच बिहार लोक सेवा आयोग द्वारा सिर्फ बापू परीक्षा परिसर का एग्जाम रद्द कर विभिन्न 22 केंद्रो पर कराया गया। जबकि छात्रों की मांग है कि परीक्षा पूरे बिहार में पुनः आयोजित हो क्योंकि उनका विश्वास है कि ऐसे होने से हमारे साथ समानता नहीं होगी और हमें उचित हक ना मिलेगा। इसी को लेकर पूरे बिहार में विभिन्न जगह एवं पटना के गर्दनीबाग छात्रों का एक बड़ा हुजूम धरना दे रहे हैं। कुछ छात्र अनशन पर हैं। इसको लेकर पुलिस द्वारा छात्र - छात्राएं पर लाठी चार्ज भी किया गया। जिसमें कई छात्र - छात्राएं जख्मी हैं।

-तारामुनि देवी, लालगंज

इलेक्ट्रिक वाहनों की सुरक्षा

रतलाम के लक्ष्मणपुर पीएनटी कॉलोनी में हुई आग लगने की घटना ने इलेक्ट्रिक वाहनों की सुरक्षा को लेकर कई सवाल उठाए हैं। घटना में एक 11 साल की बच्ची की मौत हो गई और दो अन्य लोग घायल हो गए। घटना के अनुसार, चार्जिंग के लिए रखी गई ई स्कूटर में आग लग गई, जिससे पास में खड़ी एक्टिवा भी चपेट में आ गई। घटना के कारणों की जांच में पता चला है कि ई स्कूटर में ऑटो कट ऑफ सिस्टम फेल हुआ था, जिससे आग लगने की घटना हुई। यह घटना इलेक्ट्रिक वाहनों की सुरक्षा को लेकर कई सवाल उठाती है। इलेक्ट्रिक वाहनों की सुरक्षा के लिए कई मानकों का पालन करना आवश्यक है, लेकिन यह घटना दर्शाती है कि इन मानकों का पालन नहीं किया जा रहा है। स्कूटर में ऑटो कट ऑफ सिस्टम फेल होने की घटना यह दर्शाती है कि ई स्कूटर में कई सुरक्षा खामियां हैं। इस घटना से यह सीखने को मिलता है कि इलेक्ट्रिक वाहनों की सुरक्षा के लिए कई मानकों का पालन करना आवश्यक है। इलेक्ट्रिक वाहनों की सुरक्षा के लिए इलेक्ट्रिक वाहनों में ऑटो कट ऑफ सिस्टम का प्रयोग करना आवश्यक है।

-मधु सुभाष बुड़ावन वाला, रतलाम

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से
responsemail.hindipioneer@gmail.com
पर भी भेज सकते है।

राष्ट्रीय सहारा
नई दिल्ली • सोमवार • 6 जनवरी • 2025
www.rashtriyasahara.com

अनमोल वचन

ईमानदारी और बुद्धिमानी के साथ किया हुआ काम कभी व्यर्थ नहीं जाता।
-आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

सुविधा और पर्यावरण हित

वायु प्रदूषण से निपटने के लिए सुप्रीम कोर्ट ने होलोग्राम आधारित रंग कोड वाले स्टीकर को अनिवार्य बनाने पर विचार करने को कहा है। शीर्ष अदालत ने 2018 में सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय के प्रस्ताव को स्वीकार किया था जिसमें दिल्ली-एनसीआर इलाके में पेट्रोल-सीएनजी का इस्तेमाल करने वाले वाहनों में होलोग्राम आधारित अलग-अलग रंग के स्टीकर लगाने की परिकल्पना की गई थी। इनमें वाहन के पंजीकरण की तारीख भी शामिल होनी थी। अदालत के आदेश के बाद केंद्र ने होलोग्राम आधारित स्टीकर की योजना को कानूनी मान्यता देने के लिए केंद्रीय मोटर वाहन अधिनियम, 1989 के नियम 50 और उच्च सुरक्षा पंजीकरण प्लेट

आदेश, 2001 में संशोधन किया। एनसीआर में हर साल सर्दियों में वायु प्रदूषण की बढ़ती समस्या को देखते हुए सख्त कदम उठाने की जरूरत बढ़ती जा रही है। एनसीआर में उप्र, राजस्थान, हरियाणा शामिल हैं। देश में 2022 में कुल पंजीकृत वाहनों की संख्या साढ़े पैंतीस करोड़ के करीब थी, जो इन दो सालों में तीव्र गति से बढ़ी है। दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा सड़क नेटवर्क होने के कारण परिवहन उत्सर्जन से होने वाला प्रदूषण तेजी से बढ़ता जा रहा है। ये वहान पेट्रोल, डीजल और सीएनजी के अतिरिक्त मेथनॉल, इथनॉल, ईंधन सेल हाइड्रोजन, एलएनजी, एलपीजी और सौर से भी चालित हैं। सबके लिए जरूरी है विशेष पहचान। इस स्टीकर के अलग-अलग रंग दूर से इनके ईंधन के संकेतक बन सकेंगे। देश के कई शहरों में वायु प्रदूषण जानलेवा स्तर तक पहुंचता है जिसमें सुधार लाने के प्रयास आवश्यक होते जा रहे हैं परंतु बार-बार नये नियम लाद कर जनता से वसूली करना भी सरकारी विभागों की उगाही का जरिया बन चुका है। देश में सबसे बड़ी संख्या दो-पहिया वाहनों की 2.95 लाख बताई जाती है जो सड़क सुरक्षा के साथ ही खराब हवा में सांस लेने को भी मजबूर हैं। प्रदूषणजनित रोगों के अतिरिक्त सड़क हादसों पर लगाम लगाने में सरकारी तंत्र बुरी तरह असफल है। बात भले ही नंबर प्लेट बदलने की हो या किसी तरह के स्टीकर लगाने की, सरकारी स्तर पर ऐसे प्रयास होने चाहिए कि वाहन पंजीकरण के दरम्यान ही इन सबका एकमुश्त शुल्क वसूला जा सके। न कि बार-बार चालान काट कर वाहन चालकों से वसूली चालू की जाए। इससे न सिर्फ जनता परेशान होती है, बल्कि सरकारी संसाधनों और यातायात पुलिस का काम भी बढ़ जाता है। सुविधाओं या नियमों को लागू करने की भी संयमित व्यवस्था जरूरी है।

निशाने पर केजरीवाल

दिल्ली के विधानसभा चुनाव के लिए भाजपा ने शनिवार को अपनी पहली सूची, भले ही खासे विलंब के बाद, जारी कर दी। इसमें 29 उम्मीदवार घोषित किए हैं। सूची में भाजपा ने कांग्रेस और आप छोड़ कर आए नेताओं को खास तवज्जो दी है। केजरीवाल सरकार में मंत्री रहे कैलाश गहलोत और राजकुमार आनंद को भी टिकट दिया है। हालांकि इन्हें टिकट देने की अटकलें पहले से थीं। इसी प्रकार शीला दीक्षित सरकार में प्रभावशाली मंत्री रहे अरविंदर सिंह लवली और राजकुमार चौहान और कांग्रेस के पूर्व विधायक तरविंदर सिंह

मारवाह को भी टिकट से नवाजा गया है। भाजपा ने अपने दो पूर्व सांसदों प्रवेश वर्मा और रमेश बिधूड़ी को भी मैदान में उतार दिया है। प्रवेश वर्मा नई दिल्ली सीट पर पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल जबकि रमेश बिधूड़ी कालकाजी सीट पर मुख्यमंत्री आतिशी के सामने चुनाव मैदान में होंगे। सूची को देख कर लगता है कि भाजपा इस बार आप को कड़ी टक्कर देने का मन बना चुकी है। दो बार के अपने शासकाल के चलते सत्ता-जनित आक्रोश का सामना कर रही है, और उसके कुछ नेताओं को शराब घोटाला मामले का भी सामना करना पड़ रहा है। इस मामले में उन्हें जेल तक जाना पड़ा। वे अब जमानत पर बाहर आकर चुनाव लड़ रहे हैं। भाजपा इस बार आप को सत्ता से बेदखल करने में कोई चूक नहीं करना चाहता। इस सिलसिले में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी दिल्ली में सभा को भी संबोधित कर चुके हैं। उन्होंने दिल्ली में बेघरों के लिए आवास और कॉलेज-यूनिवर्सिटी संबंधी अनेक सौगात भी राजधानियों को सौंपी हैं। आप को दिल्ली के लिए आप-दा करार देते हुए मोदी ने तंज कसा कि दिल्ली की जनता अब इस आप-दा से निजात पाने का मन बना चुकी है। जहां तक कांग्रेस की बात है, तो लगता नहीं कि वह कोई ज्यादा जतन करने वाली है। उसने भी अपने उम्मीदवारों की एक सूची तो जारी कर दी है, जिसमें पूर्व सांसद संदीप दीक्षित को अरविंद केजरीवाल के मुकाबले टिकट दिया है, लेकिन उसके प्रत्याशियों में चुनाव को लेकर उत्साह अभी तक देखने को नहीं मिला है। कह सकते हैं कि कांग्रेस की तैयारी में उदासीनता ज्यादा है, उत्साह कम है, लेकिन आप ने जिस तरह से चुनावी रेवड़ियों का ढेर लगा दिया है, उससे भाजपा की राह यकीनन मुश्किल भरी है। कुल मिलाकर दिल्ली की लड़ाई रोमांचक होने वाली है।

परिधि/राजीव मंडल

नाबालिग मन को समझना होगा

राजधानी दिल्ली एक बार फिर शर्मसार हुई। नाबालिगों ने अपने साथ पढ़ रहे एक लड़के की चाकू गोद कर हत्या कर दी, वह भी बेहद मामूली सी बात पर। साथ नहीं खेलने से उपजे विवाद के बाद नाबालिग लड़के ने कुछ और साथियों की मदद से अपने साथी को मौत के घाट उतार दिया। कुल सात हत्यारोपियों में से पांच नाबालिग हैं जबकि दो की उम्र 31 और 19 वर्ष है। चौंकाने वाली बात यह है कि लड़के ने साथी छात्र से लड़ाई की बात अपने घर पर बताई और उसके ताऊ ने छह लड़कों को भेज दिया।

घटना दिल्ली के शकरपुर इलाके की है। हालांकि सहपाठी की हत्या करने की यह पहली वारदात नहीं है। पहले भी नाबालिग लड़कों ने जघन्य अपराध किए हैं। दिल्ली इस मामले में अव्वल है। 2022 के राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो (एनआरसीबी) के आंकड़ों के अनुसार दिल्ली में 2,436 आपराधिक मामलों में किशोर शामिल पाए गए। यह भारत के अन्य 19 महानगरों की तुलना में कई गुना अधिक है। वर्ष 2021 में राजधानी में हत्या, हत्या के प्रयास, लूट, झपटमारी, दुष्कर्म, दंगे और छेड़छाड़ आदि घटनाओं में 2643 नाबालिग पकड़े गए हैं, जबकि वर्ष 2020 में यह आंकड़ा 2455 था। झपटमारी, लूटपाट,चोरी, हत्या यहां तक दुष्कर्म के मामलों समेत संगीन अपराधों में नाबालिगों की मौजूदगी बढ़ती ही जा रही है। दरअसल, किशोर अपराधियों के खिलाफ कोई कड़ा कानून नहीं है, जिसके कारण बड़े गैंगस्टर इसका फायदा भी उठाते हैं। कई बड़े अपराधी तो बकायदे हत्या जैसे जघन्य अपराध नाबालिगों से कराते हैं। ऐसे में कानून की सख्ती के साथ-साथ बच्चों की परवरिश पर भी ध्यान देने की जरूरत है। बच्चों को मोरल वैल्यू समझने की आवश्यकता है। उनको बताना होगा कि अच्छा बुरा क्या है? समाज के लोग और कई गैर सरकारी संस्था भी इस दिशा में अच्छे नियत से काम करें। तभी कुछ बदलाव हो सकता है। किशोरावस्था में बच्चों को अच्छे- बुरे की समझ नहीं होती। ऐसे में अगर एक बार बच्चों को अपराध का चस्का लग गया तो उसको सही रास्ते पर लाने का काम बेहद मुश्किल हो जाता है। इसलिए परिजनों को बच्चों की हर गतिविधि पर नजर रखनी चाहिए। सोशल मीडिया की भी भूमिका हाल के वर्षों में खलनायक सरीखी हो गई है। लिहाजा, बच्चों की काउंसिलिंग की व्यवस्था बेहद जरूरी बन पड़ी है।

समझनी होगी महत्ता

देसी गाय

विनीत नारायण

जब से मुसलमान शासक भारत में आए तब से गौवंश की हत्या होनी शुरू हुई। हिन्दू लाख समझाते रहे कि गौमाता सारे संसार की जननी के समान है। उसके शरीर के हर अंश में लोक कल्याण छिपा है और तो और उसके मूत्र-गोबर तक औषधियुक्त हैं, इसलिए उसकी हत्या नहीं, बल्कि पूजन किया जाना चाहिए पर यवनों पर असर नहीं पड़ा। आज भी मूर्खतावश बहुत से मुसलमान गौवंश की हत्या करते हैं। अक्सर यह दोनों धर्मों के बीच विवाद का विषय रहता है। अंग्रेज जब भारत में आए तो उन्होंने हिन्दुओं का मजाक उड़ाया। वे अपने सीमित ज्ञान के कारण समझने में असमर्थ थे कि हिन्दू गौवंश का इतना सम्मान क्यों करते हैं? आजादी के बाद धर्मनिरपेक्षता की राजनीति करने वालों ने भी इस हिन्दू मान्यता पर ध्यान नहीं दिया।

कुछ वर्ष पहले जब सूचना आई कि गौमूत्र का औषधि के रूप में अमेरिका में पेटेंट हो गया है, तो देश में सनसनी पैदा हो गई। योग और आयुर्वेद की तरह पूरी दुनिया जल्द ही गौमाता के महत्त्व को स्वीकारने लगेगी। हमेशा की तरह हम अपनी ही धरोहर को विदेशी पैकेज में कई गुना दामों में खरीदने पर मजबूर होंगे। जिस तरह पेप्सी कंपनी हमारे बाजारों से दो रुपये किलो आलू खरीद कर 250 रुपये किलो के चिप्स बेचती है वैसे ही आने वाले दिनों में गौमूत्र और गोबर सुंदर पैकेजिंग और आकर्षक विज्ञापनों के सहारे सैकड़ों रुपये कीमत पर बिकेगा। शास्त्रीय और वैज्ञानिक आधार पर सिद्ध हो चुका है कि गौमाता के शरीर के हर हिस्से से हम पर कृपा बरसती है।

अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त हृदय विशेषज्ञों ने जोर देकर कहा है कि हृदय रोगियों के लिए देशी गाय का दूध उपयोगी है। देशी गाय के दूध के कण सूक्ष्म और सुपाच्य होते हैं। मस्तिष्क की सूक्ष्मतम नाड़ियों में पहुंच कर मस्तिष्क को शक्ति प्रदान करते हैं। देशी गाय के दूध में केरोटीन (विटामिन-ए) नाम का पीला पदार्थ रहता है, जो नेत्र ज्योति बढ़ाता है। चरक सूत्र स्थान 1/18 के अनुसार, देशी गाय का दूध जीवन शक्ति प्रदान करने वाले द्रव्यों में सर्वश्रेष्ठ है। देशी गाय के दूध में 8 प्रतिशत प्रोटीन, 8 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट और 0.7 प्रतिशत मिनरल (100 आईयू) विटामिन ए और विटामिन बी, सी, डी एवं ई होता है। निघंटु के अनुसार देशी गाय का दूध रसायन, पथ्य, बलवर्धक, हृदय के लिए हितकारी, बुद्धिवर्धक, आयुप्रद, पुंसत्वकारक तथा त्रिदोष (वात, पित्त, कफ) नाशक है। गौघृत खाने से कोलेस्टरोल नहीं बढ़ता।

रूसी वैज्ञानिक शिरोविच के शोधानुसार देशी गाय के घी में मनुष्य शरीर में पहुंचे रेडियोधर्मी कणों का प्रभाव नष्ट करने की

असीम शक्ति है। गौघृत से यज्ञ करने से ऑक्सीजन बनती है। देशी गाय के घी को चावल के साथ मिला कर जलाने से (यज्ञ) ईथीलीन ऑक्साइड, प्रोपीलीन ऑक्साइड और फोरमैल्डीहाइड नाम की गैस पैदा होती है। ईथीलीन ऑक्साइड और फारमैल्डीहाइड जीवाणु रोधक हैं, जिनका उपयोग ऑपरेशन थिएटर को कीटाणुरहित करने में होता है। प्रोपीलीन ऑक्साइड वर्षा करने के उपयोग में आती है अर्थात गौघृत द्वारा किए गए यज्ञ से वातावरण की शुद्धि और वर्षा होना स्वाभाविक परिणाम हैं। भाव प्रकाश निघंटु के अनुसार गौघृत नेत्र हितकारी, अग्निप्रदीपक, त्रिदोष नाशक, बलवर्धक, आयुवर्धक, रसायन, सुगंधयुक्त, मधुर, शीतल, सुंदर और सब घृतों में उत्तम होता है। गौमूत्र में ताम्र होता है जो मानव शरीर में स्वर्ण के रूप में परिवर्तित हो जाता है। स्वर्ण सर्व रोगनाशक शक्ति रखता है। स्वर्ण सभी प्रकार का विषनाशक है। गौमूत्र में ताम्र के अतिरिक्त लोहे, कैल्शियम, फास्फोरस और अन्य प्रकार के क्षार (मिनरल्स),कार्बोनिक एसिड, पोटाश और लेक्टोज नाम के तत्व मिलते हैं। गौमूत्र में 24 प्रकार के लवण होते हैं, जिनके कारण गौमूत्र से निर्मित विविध औषधियां कई रोगों के निवारण में उपयोगी हैं। गौमूत्र कीटनाशक होने से वातावरण को शुद्ध करता है और जमीन की उर्वरा शक्ति बढ़ाता है। गौमूत्र त्रिदोष नाशक है, किंतु पित्त निर्माण करता है, लेकिन काली देशी गाय का मूत्र पित्तनाशक है। नवयुवकों के लिए गौमूत्र शीघ्रपतन, धातु का पतलापन, कमजोरी, सुस्ती, आलस्य, सिरदर्द, क्षीण स्मरण शक्ति में उपयोगी है। पंचगव्य गौघृत, गौमय, गौदधि, गौदुग्ध, गौमुत्र से मिल कर बनता है। उसका सेवन मिर्गी, दिमागी कमजोरी, पागलपन, पीलिया, बवासीर आदि में उपयोगी है। कैंसर जैसे दुस्साध्य, उच्च रक्तचाप तथा दमा जैसे रोगों में भी गौमूत्र का सेवन उपयोगी सिद्ध हुआ है।

इटली के प्रसिद्ध वैज्ञानिक प्रो. जी.ई. बीगेड ने गोबर के अनेक प्रयोगों द्वारा सिद्ध किया है कि देशी गाय के ताजे गोबर से टीबी तथा मलेरिया के कीटाणु मर जाते हैं। आणविक विकरण से मुक्ति पाने के लिए जापान के लोगों ने गोबर को अपनाया है। गोबर हमारी त्वचा के दाद, खाज, एक्जिमा और घाव आदि के लिए लाभदायक होता है। एक देशी गाय के गोबर से प्रति वर्ष 45000 लीटर बायोगैस मिलती है। बायोगैस के उपयोग करने से 6 करोड़ 80 लाख टन लकड़ी बच सकती है, जो आज जलावन में काम आती है जिससे 14 करोड़ वृक्ष कटने से बचेंगे और पर्यावरण का संरक्षण होगा। गोबर की खाद सर्वोत्तम खाद है, जबकि फर्टिलाइजर से पैदा अनाज हमारी प्रतिरोधक क्षमता को कम करता है। ऐसी तमाम जानकारियों का संचय कर उसके व्यापक प्रचार प्रसार में जुटे युवा वैज्ञानिक सत्यनारायण दास बताते हैं कि विदेशी इतिहासकारों और मार्क्सवादी चिंतकों ने वैदिक शास्त्रों में प्रयुक्त संस्कृत का सतही अर्थ निकाल कर बहुत भ्रांति फैलाई है। इन्होंने बताने की कोशिश की है कि वैदिक काल में आर्य गौमांस का भक्षण करते थे। यह वाहियात बात है। 'गौधन' जैसे शब्द का अर्थ अनर्थ कर दिया गया। दास के अनुसार वैदिक संस्कृति में एक ही शब्द के कई अर्थ प्रयुक्त होते हैं, जिन्हें उनके सांस्कृतिक परिवेश में समझना होता है। विदेशी इतिहासकारों ने वैदिक संस्कृत की समझ न होने के कारण ऐसी भूल की। आईआईटी से बी.टेक. और एम.टेक. करने वाले दास गौसेवा को सबसे बड़ा धर्म मानते हैं। समय की मांग है कि भारत सरकार और प्रांतीय सरकारें गौवंश की हत्या पर कड़ा प्रतिबंध लगाएं। इनके संवर्धन के लिए उत्साह से ठोस प्रयास करें।

(लेख में विचार निजी हैं)

युवा वैज्ञानिक सत्यनारायण दास बताते हैं कि विदेशी इतिहासकारों और मार्क्सवादी चिंतकों ने वैदिक शास्त्रों में प्रयुक्त संस्कृत का सतही अर्थ निकाल कर बताने की कोशिश की कि वैदिक काल में आर्य गौमांस का भक्षण करते थे। 'गौधन' जैसे शब्द का अर्थ अनर्थ कर दिया गया। वैदिक संस्कृति में एक ही शब्द के कई अर्थ होते हैं, जिन्हें उनके सांस्कृतिक परिवेश में समझना होता है। विदेशी इतिहासकारों ने वैदिक संस्कृत की समझ न होने के कारण ऐसी भूल की

आगामी 10 वर्ष में पांच गुना बढ़ेगी भारत की स्पेस इकोनॉमी

- **अगले दशक में भारतीय अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था करीब 5 गुना बढ़ कर 8.4 बिलियन डॉलर से करीब 44 बिलियन डॉलर हो जाएगी। इस सेक्टर में निवेश 2023 में ही 1,000 करोड़ रुपये तक पहुंच गया था जिससे भारत वैश्विक प्लेयर बन गया है**
- **भारत का अंतरिक्ष क्षेत्र विदेशी मुद्रा कमाने वाले क्षेत्र के रूप में उभरा है। इसरो की सेवाओं से लाभ पाने वाले देशों में अमेरिका, फ्रांस, जापान आदि शामिल हैं**

(स्रोत : मीडिया इनपुट्स)

लोक सभा चुनाव 2024 से ठीक पहले प्रशांत किशोर ने तमाम इंटरव्यू दिए जिनमें दावे किए गए थे कि भाजपा अपने तईं बहुमत हासिल करेगी। जाहिर है कि वह भाजपा के पक्ष में माहौल बना रहे थे। एक्जिट पोल्स के बाद वह भाजपा को बहुमत से थोड़ा पीछे रह जाने की बात कहने वालों पर बरस पड़े यह कहते हुए कि वे 'फर्जी पत्रकार हैं, और बड़बोले राजनीतिज्ञ हैं'। बाद में तेजी से जाहिर हुआ कि कौन फर्जी और बड़बोला था। एक अक्षम व्यक्ति बड़ी जल्दी बेनकाब हो जाता है...

रोहिणी सिंह, पत्रकार
@rohini_sgh

टीम इंडिया | मनोज चतुर्वेदी

अब बदलाव की जरूरत

भारतीय टीम सिडनी टेस्ट में हार कर पिछले एक दशक में पहली बार ऑस्ट्रेलिया के हाथों बोर्डर-गावस्कर ट्रॉफी को गंवा बैठी। इस दौरे और इससे पहले न्यूजीलैंड के हाथों घर में पहली बार 3-0 से सफाये के बाद लगने लगा है कि टीम इंडिया में अब बदलाव की जरूरत है। सही है कि इस सीरीज को खोने में बल्लेबाजों के योजना के हिसाब से नहीं खेलने, टीम चयन में गलतियां करने की तो भूमिका रही ही, टीम के दिग्गज बल्लेबाजों का नहीं चलना भी बड़ा कारण रहा। बेहतरीन स्पिनरों में शुमार रखने वाले रविचंद्रन अश्विन के बीच दौरे में संन्यास लेने की घोषणा के बाद महसूस किया जा रहा था कि कप्तान रोहित शर्मा और विराट कोहली भी इस तरफ कदम बढ़ा सकते हैं।

भारतीय कप्तान ने अपनी खराब फॉर्म की वजह से जब सिडनी टेस्ट की अंतिम एकादश से अपने को बाहर रखा तो लगा कि बदलाव के दौर की शुरुआत होने जा रही है। पर रोहित ने अगले ही दिन साफ कर दिया कि सिडनी टेस्ट नहीं खेलने का फैसला टीम के हित में लिया गया था पर मैं टेस्ट क्रिकेट से संन्यास लेने नहीं जा रहा। वहीं विराट ने भी ऐसे कोई संकेत नहीं दिए हैं। शायद इसकी वजह भारत को अब जून माह में इंग्लैंड का दौरा करके विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के अगले संस्करण की शुरुआत करनी है। अगला टेस्ट सीरीज में लंबा समय होने की वजह से ही शायद वह इस बारे में सोचने के लिए समय लेना चाहते हैं। भारतीय कोच गौतम गंभीर से जब सीरीज खत्म होने पर सवाल पूछा गया कि रेड बॉल क्रिकेट में क्या दीर्घकालीन योजना बनाने और युवाओं पर फोकस करने का समय आ गया है, तो उनका जवाब था कि इस बारे में तत्काल चर्चा की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि टेस्ट सीरीज पांच महीने बाद होनी है। पांच महीने में बाद क्या होगा, हमें पता नहीं है। उस समय कौन कहां होगा। मैं इतना ही कह सकता हूं कि जो भी होगा, टीम के हित में होगा। गंभीर ने इतना जरूर कहा कि मैं किसी खिलाड़ी के भविष्य के बारे में कुछ नहीं कह सकता, यह उन पर ही निर्भर है पर सीनियर खिलाड़ियों में अभी भूख बाकी है और वह भारतीय क्रिकेट को आगे ले जा सकते हैं।

मौजूदा भारतीय टीम ही नहीं, बल्कि हर टीम में बदलाव का दौर आता है। 2011-14 तक भी भारतीय टीम

में ऐसा ही दौर आया था। उस समय सचिन तेंदुलकर, राहुल द्रविड़, अनिल कुंबले और वीवीएस लक्ष्मण जैसे खिलाड़ियों ने संन्यास लिया था और उनकी जगह विराट कोहली, रोहित शर्मा, चेतेश्वर पुजारा और रविचंद्रन अश्विन ने ली थी। खिलाड़ियों को तो अक्सर लगता है कि उनमें अभी क्रिकेट बाकी है पर इस बारे में चयन समिति और कोच को ही सख्त फैसला करने की जरूरत होती है। तभी सही समय पर विकल्प तैयार किए जा सकते हैं। कई बार टीमें बदलाव करने में पिछड़ जाती हैं तो उन्हें पटरी पर आने में बहुत समय लग जाता है। इस बारे में श्रीलंका का उदाहरण हमारे सामने है। कोई दिग्गज खिलाड़ी लय में नहीं होता है तो कहा जाता है कि उसके लय में आने के लिए एक अच्छी पारी की देर है। विराट ने पर्थ टेस्ट में शतकीय पारी खेली। यह पारी भी उनकी समस्या का समाधान नहीं निकाल सकी और लगातार एक ही तरह से ऑफ स्टंप से बाहर की गेंदों पर ड्राइव करने के प्रयास में स्लिप में लपके जाते रहे। विराट की यह समस्या कोई पहली बार सामने नहीं आई है। यह कुछ सालों से इस समस्या से जूझ रहे हैं। लगता है कि उनके रिफलेक्सस में कमी आ रही है। वह दुनिया के बेजोड़ खिलाड़ी हैं और उन्होंने देश का सम्मान बढ़ाने वाली तमाम पारियां खेली हैं पर हर खिलाड़ी का समय आता है, जब उसे विराम के बारे में सोचना पड़ता है। इसी तरह रोहित की स्थिति तो और भी खराब है। वह पिछले आठ टेस्टों में 10 से कुछ ऊपर के औसत से ही रन बना सके हैं, जिसमें सिर्फ एक ही अर्धशतक है। इस सीरीज में तो वह तीन टेस्ट की पांच पारियों में 31 रन ही बना सके हैं।

सिडनी टेस्ट में भारत की हार में दूसरी पारी में जसप्रीत बुमराह के बाहर होने की भी अहम भूमिका रही पर यह भी सच है कि टीम प्रबंधन का दो स्पिनर खिलाने का फैसला भी गलत साबित हुआ। इसका प्रमाण ऑफ स्पिनर वाशिंगटन सुंदर से पूरे मैच में एक ओवर ही फिकवाया गया। बल्लेबाजी में भी वह कुछ खास न कर सके। बेहतर होता कि किसी पेसर को टीम में रखा जाता। ऐसा होता तो बुमराह के दूसरी पारी में उपलब्ध न होने पर अटैक में ज्यादा दिक्कत नहीं आती। चौथे टेस्ट में शुभमन गिल को बाहर बैठाने का फैसला भी समझ से परे रहा। सीरीज में भारत ने तीसरे गेंदबाज के तौर पर आकाशदीप और हर्षित राणा का इस्तेमाल किया और वे प्रभावी नहीं रहे। सिराज के लय में न होने से भी मुश्किलें बढ़ीं। उधर, हेजलवुड के चोटिल होने पर बोलैंड का ऑस्ट्रेलिया ने इस्तेमाल किया और उन्होंने ऑस्ट्रेलिया को सीरीज जिताने में बड़ी भूमिका निभाई।

सेवा-सहायता | श्रीराम शर्मा आचार्य

गिरे हुओं को उठाना, पिछड़े हुओं को आगे बढ़ाना, भूले को राह बताना और जो अशान्त हो रहा है, उसे शान्तिदायक स्थान पर पहुंचा देना। ये सब

कार्य वस्तुतः ईश्वर की सेवा ही हैं। ऐसे कार्य हैं जिनके लिए हमें अपने भीतर हमेशा से प्रेरित रहना चाहिए अर्थात इसके लिए किसी बाह्य प्रेरणा की आवश्यकता नहीं है। ये कार्य करने की भावना और जज्बा हमारे भीतर बीज रूप में होता है, जिसे हमें अंकुरित करना चाहिए। यदि हम ऐसा करते हैं तो कहना होगा कि कुछ ऐसा सार्थक कर रहे होते हैं, जिससे हमारी मानवीय गरिमा को नये आयाम मिलते हैं। जब हम दुःख और दरिद्र को देख कर व्यथित हो जाते हैं, और मलीनता को स्वच्छता में बदलने के लिए बढ़ते हैं, तो समझ लेना चाहिए कि यह कृत्य ईश्वर के लिए-उसकी प्रसन्नता के लिए ही किए जा रहे हैं। दूसरों की सेवा और सहायता करना अपनी ही सेवा और सहायता करना है। कहा भी गया है कि सेवा परमो धर्मः। प्रार्थना उसी की सार्थक है जो आत्मा को परमात्मा में घुला देने के लिए व्याकुलता लिए हुए हो। जो अपने को परमात्मा जैसा महान बनाने के लिए तड़पता है-जो प्रभु को जीवन के कण-कण में घुला लेने के लिए बेचैन बना रहता है। जो उसी का होकर जीना चाहता है, उसी को भक्त कहना चाहिए। दूसरे तो विदूषक हैं। लेने के प्रयोजना से किया हुआ भजन वस्तुतः प्रभु प्रेम का निर्मम उपहास ही कहा जाएगा। भक्ति में तो आत्मसमर्पण के अतिरिक्त और कुछ होता ही नहीं। वहां देने की ही बात सूझती है, लेने की इच्छा ही कहां रहती है? ईश्वर का विश्वास, सत्कर्मों की कसौटी पर ही परखा जा सकता है। जो भगवान पर भरोसा करेगा वह उसके विधान और निर्देश को भी अंगीकार करेगा। भक्ति और अवज्ञा का ताल-मेल भला बैठता कहां है? हम अपने आपको प्यार करें ताकि ईश्वर से प्यार कर सकने योग्य बन सकें। हम अपने कर्त्तव्यों का पालन करें ताकि ईश्वर के निकट बैठ सकने की पात्रता प्राप्त कर सकें। जिसने अपने अन्तःकरण को प्यार से ओत-प्रोत कर लिया है, और जिसके चिन्तन और कर्तृत्व में प्यार बिखरा पड़ा है, ईश्वर का प्यार केवल उसी को मिलेगा, जो दीपक की तरह जल कर प्रकाश उत्पन्न करने को तैयार है, प्रभु की ज्योति का अवतरण उसी पर होगा।

रीडर्स मेल

अनुचित ढंग से न हो आकलन

कुछ बच्चे जन्म से ही असाधारण प्रतिभा के धनी होते हैं। अधिकांश बच्चे सामान्य और औसत दर्जे की प्रतिभा रखते हैं, जिनकी गिनती फिर भीड़ में की जाती है। हो सकता है कि आज भले ही आप शिक्षक जैसे महत्त्वपूर्ण कार्य का भार वहन कर रहे हैं पर हो सकता है कि अपने विद्यार्थी जीवन में शायद औसत दर्जे के विद्यार्थी ही रहे हों। आप जिस किसी भी विद्यालय में अपनी सेवाएं दे रहे हों, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता लेकिन फर्क किसी भी बच्चे की जिंदगी में तब पड़ने लगता है जब स्कूल में दाखिले के वक्त उसमें असाधारण प्रतिभा की खोज की जाती है। उस बच्चे को अच्छे स्कूल में दाखिला दिलाने के लिए स्कूल के मापदंड के अनुसार उसे असाधारण बनाने के चक्कर में मां-बाप अपने अरमानों के बोझ से उसे असमय ही वयस्क बना देते हैं। ठीक है, शिक्षक का कार्य बच्चे को केवल शिक्षा प्रदान करना है, और स्कूल में प्रवेश प्रक्रिया से उनका सरोकार नहीं है, लेकिन एक सच्चे शिक्षक और मार्गदर्शक होने के नाते क्या शिक्षक को अपने स्कूल की प्रवेश प्रक्रिया के बारे में बोलने का भी कोई हक नहीं है? केवल प्रतिभाशाली और बेहद बुद्धिशाली बच्चों को स्कूल में शामिल कर स्कूल का रिजल्ट बेशक, काफी अच्छा होगा लेकिन इसमें शिक्षक योगदान कितना होगा?

आशीष दलाल 'अनंत', वड़ोदरा, गुजरात

फिर देश से बाहर रहे राहुल

जब देश में पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के सम्मान में शोक चल रहा था तब कांग्रेस के प्रधानमंत्री पद प्रत्याशी राहुल गांधी का विदेश जाना पार्टी को भी असहज कर गया। पार्टी के नेताओं से इस बारे में जवाब देते नहीं बन रहा है। विदेश में होने से शुक्रवार को पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह की अंतिम अरदास और अखंड पाठ में राहुल गांधी उपस्थित नहीं हो सके। संभवतः प्रियंका वाड्रा भी छुट्टी मनाने के लिए दिल्ली से बाहर रही होंगी। पता चला है कि वे हिमाचल प्रदेश स्थित अपने घर गई हैं। इसलिए वह भी इन दोनों आयोजनों में नहीं पहुंचीं। यह बात भी दीगर है कि सिख प्रधानमंत्री के असम्मान का ठीकरा वे भाजपा-नीत एनडीए सरकार पर वे पहले ही फोड़ चुके हैं।

मनोज श्रीवास्तव, अमेठी

कांबली की नसीहत

विनोद कांबली दुनिया के जाने-माने क्रिकेटर, कमेंटेटर और फिल्म एवं टीवी के अभिनेता रहे हैं, लेकिन आज परिस्थितिवश आर्थिक, शारीरिक तथा मानसिक परेशानी के दौर से गुजर रहे हैं। हाल में गंभीर बीमारी के इलाज के बाद विनोद कांबली को अस्पताल से छुट्टी मिली है। इस समय उन्होंने बाकायदा प्रेस कॉन्फ्रेंस करके देश के युवाओं से आग्रह किया है कि वे 'नये वर्ष का जश्न मनाएं लेकिन शराब न पिएं'। यह बड़ा संदेश है। एक समय कांबली आर्थिक रूप से काफी संपन्न थे। पूरी दुनिया में उनकी धाक थी और क्रिकेट में उनका बड़ा नाम था, बल्कि कहें कि अभी भी हैं। लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने अपने जीवन को अत्यधिक खर्चीला बना दिया था, जिसकी वजह से उनकी 13 करोड़ की पूंजी भी देखते-देखते खत्म हो गई। देश के युवाओं को विनोद कांबली की बात को गंभीरता से लेना चाहिए कि किसी भी तरह का व्यसन स्वास्थ्य और मस्तिष्क को खराब करता है। इस तरह की सलाह कांबली इसलिए दे पा रहे हैं कि स्वयं भुक्तभोगी हैं, और यकीनन उनकी सलाह का असर होगा।

वीरेंद्र कुमार जाटव, दिल्ली

letter.editorsahara@gmail.com

हमें गर्व है हम भारतीय हैं

राष्ट्रीय सहारा
वर्ष-34, अंक 140

सहारा इण्डिया मास कम्युनिकेशन के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक जिया कादरी द्वारा सहारा इंडिया मास कम्युनिकेशन प्रेस, सी-2,3,4, सेक्टर-11, नोएडा में मुद्रित तथा 705-706, सातवां तल, नवरंग हाउस, 21 के.जी. मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित। समूह संपादक - डॉ. विजय राय। स्थानीय संपादक - सनेश मिश्र*।
दूरभाष - दिल्ली कार्यालय - 23352368, 23352369, 23352371, 23352372, फैक्स - 23352370, दूरभाष - नोएडा प्रेस 0120-2444755, 2444756 फैक्स - 2550750
आर.एन.आई. सं. 53469/91, पंजीकरण संख्या UP/BR /GZB- 38/2024-2026
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन तथा कानूनी मामलों के लिए उत्तरदायी

चिंतन

कमजोर हो रहा रुपया बढ़ाएगा आर्थिक चिंताएं

अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपया का लगातार कमजोर होना भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए सुखद नहीं है। पिछले दो महीने से रुपया कमजोर होता जा रहा है। यह आर्थिक चिंताएं बढ़ा रहा है। बीते सप्ताह शुक्रवार को अमेरिकी मुद्रा के मुकाबले रुपया चार पैसे टूटकर अब तक के सबसे निचले स्तर 85.79 प्रति डॉलर पर बंद हुआ। पिछले वर्ष रुपये की विनिमय दर में लगभग तीन प्रतिशत की गिरावट आई है। दिसंबर में भी प्रति डॉलर रुपये का विनिमय दर 85 रुपये प्रति डॉलर पार कर गया था। रुपये के मूल्य में गिरावट से आयातित कच्चे माल के महंगा होने से उत्पादन लागत बढ़ेगी और कुल मिलाकर देश में महंगाई बढ़ सकती है जिससे आम लोगों की जेब पर प्रभाव पड़ेगा। रुपया कमजोर होने का मतलब है कि डॉलर की तुलना में रुपये का मूल्य कम हो गया है। रुपये के कमजोर होने पर विदेशी मुद्रा भंडार में कमी आती है। जब विदेशी मुद्रा भंडार कम होता है, तो आयात की लागत बढ़ती है। इससे भी देश में महंगाई बढ़ती है। डॉलर की मांग बढ़ने लगती है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में उथल-पुथल से निवेशक घबराकर डॉलर खरीदने लगते हैं। इससे डॉलर के मुकाबले बाकी मुद्राओं में गिरावट आती है। व्यापार घाटा बढ़ने पर भी रुपया कमजोर होता है। तीसरी तिमाही में व्यापार घाटा बढ़ा है। सबसे अधिक चीन के साथ भारत का व्यापार घाटा है। अमेरिका के साथ भी व्यापार घाटा है। अमेरिकी चुनाव के नतीजों के बाद भारतीय बाजारों से विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) की पूंजी निकासी है। भारत और अमेरिका के बीच मुद्रास्फीति का अंतर बढ़ा है। अमेरिकी में महंगाई में गिरावट भारतीय मुद्रास्फीति की तुलना में ज्यादा है, इसलिए अमेरिकी फेडरल रिजर्व ने वृद्धि दर को बढ़ावा देने के लिए प्रमुख ब्याज दर में कमी की है। रुपये में गिरावट से विदेशी निवेशकों के सेंटिमेंट पर भी असर पड़ता है। अभी भारतीय स्टॉक मार्केट से विदेशी संस्थागत निवेशकों ने साढ़े चार हजार करोड़ रुपये से अधिक की निकासी की है। शेयर बाजार में भी संकुचन की स्थिति पैदा होती है। हालांकि, दुनियाभर में कच्चे तेल की कीमतों में नरमी के कारण, भारत की मुद्रास्फीति पर बहुत प्रभाव पड़ने की संभावना नहीं है। वैश्विक तेल मानक ब्रेंट क्रूड वायदा गत शुक्रवार को 0.43 प्रतिशत गिरकर 75.60 डॉलर प्रति बैरल पर था। यदि रुपये में गिरावट बाजार की ताकतों (मांग और आपूर्ति) के कारण होती है, तो उत्पादन वृद्धि और महंगाई दोनों बढ़ेंगे। हालांकि रुपये में गिरावट के बावजूद यह एशिया के अपने समकक्ष देशों की तुलना में बेहतर स्थिति में है। रुपया के टूटने से विदेश यात्रा और दूसरे देश में जाकर पढ़ाई करना भी महंगा हो जाता है। कमजोर रुपये का लाभ तभी है जब देश का निर्यात बढ़े। रिजर्व बैंक को हस्तक्षेप करना चाहिए। हाल ही में सोने की खरीद के कारण चालू खाते के घाटे (कैड) में वृद्धि हुई है। कमजोर रुपये के चलते विदेशी मुद्रा में कर्ज लेने वाली कंपनियों को भुगतान की अधिक लागत चुकानी पड़ेगी। और आयातित कच्चे माल पर निर्भर इकाइयों को कम लाभ मार्जिन देखने को मिल सकता है। यह भारत में विदेशी निवेश प्रवाह को भी सीमित कर सकता है। वित्त वर्ष 2024-25 की दूसरी तिमाही में सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की वृद्धि दर में कमी ने भी रुपये के लिए मुश्किलें बढ़ाईं। रुपये को मजबूत बनाने के लिए निर्यात बढ़ाने, अनावश्यक आयात को नियंत्रित करने व उच्च मूल्य के आयात पर नियंत्रण करने जैसे उपाय करने होंगे।

स्वच्छता
बाल मुकुन्द ओझा

महाकुम्भ को प्रदूषण मुक्त करने का अनूठा अभियान

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की ओर से उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में 13 जनवरी से शुरू हो रहे महाकुंभ को प्लास्टिक फ्री और प्रदूषण मुक्त करने के लिए अनूठा अभियान चलाया जा रहा है। संघ ने इसके लिए एक थाली-एक थैला अभियान शुरू किया है। 45 दिन के महाकुंभ में 40 करोड़ श्रद्धालुओं के शामिल होने की संभावना है। ऐसे में वहां भोजन आदि से 40 हजार टन प्लास्टिक कचरा निकलने की भी संभावना है। संघ का कहना है कि तीर्थयात्रियों के पास तक एक थाली और थैला पहुंचाया जाएगा तो महाकुंभ में कचरे को कम किया जा सकता है। एक थाली एक थैला अभियान चलाने के पीछे संघ की सोच है कि श्रद्धालुओं को डिस्पोजल बर्तनों में भोजन न करना पड़े। महाकुंभ में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सहयोगी संस्था अखिल भारतीय पर्यावरण संरक्षण गतिविधि की तरफ से आस्था के इस मेले में एक थाली एक थैला अभियान की देशभर में सराहना की जा रही है। महाकुंभ क्षेत्र में श्रद्धालुओं और संस्थाओं को स्टील की थाली व कपड़े से बने हुए थैले बांटे जा रहे हैं। संघ से जुड़े संगठन की तरफ से पूरे मेला क्षेत्र में अभियान चला कर 20 लाख से ज्यादा थालियां और करीब इतने ही थैले बांटे जाने हैं। यह थालियां और थैले देशभर से इकट्ठे किए गए हैं। पर्यावरण संरक्षण गतिविधि ने थैले और थाली का यह अभियान इसलिए चलाया है ताकि स्वच्छ और प्लास्टिक फ्री कुंभ की परिकल्पना साकार हो सके। गतिविधि से जुड़े हुए पदाधिकारियों के मुताबिक यूपी की योगी सरकार ने महाकुंभ को प्लास्टिक फ्री के तौर पर आयोजित करने का फैसला किया है। इसी के तहत महाकुंभ क्षेत्र में कपड़े के थैले बांटे जा रहे हैं। कपड़े के थैले होने पर लोग प्लास्टिक के इस्तेमाल से बचेंगे, वहीं थाली साथ होने पर लोग

उसे ही धोकर इस्तेमाल करेंगे। इसका एक बड़ा लाभ यह होगा कि कचरा इधर-उधर लोग नहीं फेंकेंगे। प्रयागराज महाकुंभ में पर्यावरण संरक्षण गतिविधि कि यह मुहिम खासी चर्चा में है। लोग इस मुहिम की जमकर तारीफ कर रहे हैं और इसे सफल बनाने में अपना योगदान देने का संकल्प ले रहे हैं। कचरा पूरी दुनिया के लिए एक वैश्विक समस्या है। भारत की बात करें तो आज घर-घर में प्लास्टिक ने अपना कब्जा जमा लिया है। कचरा में प्लास्टिक सबसे खतरनाक माना जाता है। प्लास्टिक कचरा से हर देश परेशान है। सरकार के लाख प्रयासों के बावजूद हमारा फ्री प्लास्टिक का सपना पूरा नहीं हो रहा है और इसका एक मात्र कारण इसका सस्ता, टिकाऊ और हल्का होना है। पॉलीथिन के उपयोग पर प्रतिबंध के बाद भी इसका असर दिखाई नहीं दे रहा है। हर जगह पॉलीथिन का उपयोग हो रहा है। किराना सामान खरीदना हो या फिर सब्जी, फल हों या अन्य सामग्री, हर जगह अमानक स्तर की पॉलीथिन उपयोग की जा रही है। पर्यावरण को सबसे अधिक नुकसान प्लास्टिक कचरा से पहुंचता है। वर्तमान में प्लास्टिक प्रदूषण एक गंभीर समस्या बन गया है। दुनिया भर में अरबों प्लास्टिक के बैग हर साल फेंके जाते हैं। ये प्लास्टिक बैग नालियों के प्रवाह को रोकते हैं और आगे बढ़ते हुए वे नदियों और महासागरों तक पहुंचते हैं। चूंकि प्लास्टिक स्वाभाविक रूप से विघटित नहीं होता है इसलिए यह प्रतिकूल तरीके से नदियों, महासागरों आदि के जीवन और पर्यावरण को प्रभावित करता है। प्लास्टिक प्रदूषण के कारण लाखों पशु और पक्षी मारे जाते हैं जो पर्यावरण संतुलन के मामले में एक अत्यंत चिंताजनक पहलू है।

आज हर जगह प्लास्टिक दिखता है जो पर्यावरण को दूषित कर रहा है। जहां कहीं प्लास्टिक पाए जाते हैं वहां पृथ्वी की उपजाऊ शक्ति कम हो जाती है और जमीन के नीचे दबे दाने वाले बीज अंकुरित नहीं होते हैं तो भूमि बंजर हो जाती है। प्लास्टिक नालियों को रोकता है और पॉलीथीन का ढेर वातावरण को प्रदूषित करता है। चूंकि हम बचे खाद्य पदार्थों को पॉलीथिन में लपेट कर फेंकते हैं तो पशु उन्हें ऐसे ही खा लेते हैं जिससे जानवरों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। यहां तक कि उनकी मौत का कारण भी। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का महाकुम्भ को प्लास्टिक फ्री करने का अभियान निश्चय ही देशवासियों के समक्ष एक प्रेरणादायी उदाहरण है। देश में लाखों की संख्या में सामाजिक संस्थाएं है जिन्हें संघ से प्रेरणा लेकर देश को प्लास्टिक मुक्त बनाने के लिए मिलजुलकर प्रयास करने चाहिए।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

उम्मीद
डॉ. जयंतीलाल भंडारी

2024 में शहरी बेरोजगारी में कमी आई, लेकिन असंगठित सेक्टर में रोजगार के मौके घट गए। देश के विदेशी मुद्रा भंडार में भी कभी कमी तो कभी वृद्धि होती रही। विदेशी मुद्रा कोष घटते हुए करीब 652 अरब डॉलर के स्तर पर पहुंच गया। निश्चित रूप से नए वर्ष 2025 को पिछले बीते वर्ष से आर्थिक विकास के ठोस आधार भी मिले है। अर्थ विशेषज्ञ एक मत से कारोबारी और वित्तीय ऊंचाई को लेकर आशावादी हैं और वे विकास मूलक संकेत देते हुए देश की मजबूत बैलेंस शीट प्रस्तुत कर रहे हैं। कहा जा रहा है कि कृषि, खनन, निर्माण तथा औद्योगिक उत्पादन को तेज रफ्तार मिलेगी। नई द्विपक्षीय व्यापार वार्ताएं व नए मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) आकार लेते हुए दिखाई देंगे।

नए साल में बेहतर होगी अर्थव्यवस्था

यकीनन वैश्विक आर्थिक और वित्तीय संगठनों के द्वारा नए वर्ष 2025 की आर्थिक संभावनाओं पर प्रकाशित विभिन्न रिपोर्टों के मुताबिक नया वर्ष 2025 भारत के लिए उजली आर्थिक संभावनाओं वाला वर्ष होगा। नए वर्ष में भारतीय अर्थव्यवस्था बीते वर्ष 2024 से मिली आर्थिक और वित्तीय चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना करते हुए आगे बढ़ेगी और दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था के रूप में रेखांकित होगी। यदि हम नए वर्ष 2025 को बीते वर्ष 2024 से मिलने वाली आर्थिक विरासत को देखें तो पाते हैं कि इस विरासत में जहां कई चुनौतियां हैं, वहीं विकास के कई मजबूत आर्थिक आधार भी हैं। यद्यपि बीते वर्ष की शुरुआत 8 फीसदी विकास दर के साथ हुई थी, लेकिन बीते वर्ष की जुलाई से सितंबर की तिमाही में महज 5.4 फीसदी की विकास दर के कारण कई आर्थिक गणित गड़बड़ा गए। बीते वर्ष में भारत के आर्थिक परिदृश्य पर प्रमुखतया महंगाई तथा रोजगार चिंताजनक मुद्दे रहे हैं।

महंगाई के मोर्चे पर मुश्किलें लगभग अधिकांश महीनों में बनी रहीं। खासतौर से नवंबर 2024 के बाद एक बार फिर थोक एवं खुदरा महंगाई बढ़ने लगी और महंगाई रिजर्व बैंक के निर्धारित दायरे से बाहर रही। बीते वर्ष में यद्यपि शहरी बेरोजगारी में कमी आई, लेकिन असंगठित सेक्टर में रोजगार के मौके घट गए। विदेश व्यापार घाटा भी बढ़ा। रुपया वर्षभर लुढ़कता रहा। वर्षभर डॉलर की तुलना में रुपये की कीमत घटती गई और दिसंबर 2024 में डॉलर के मुकाबले रुपया लुढ़ककर 85 से भी नीचे के स्तर पर पहुंच गया। वर्ष 2024 में देश के विदेशी मुद्रा भंडार में भी कभी कमी तो कभी वृद्धि होती रही। विदेशी मुद्रा कोष घटते हुए करीब 652 अरब डॉलर के स्तर पर पहुंच गया। निश्चित रूप से नए वर्ष 2025 को पिछले बीते वर्ष से आर्थिक विकास के ठोस आधार भी मिले हैं। अर्थ विशेषज्ञ एक मत से कारोबारी और वित्तीय ऊंचाई को लेकर आशावादी हैं और वे विकास मूलक संकेत देते हुए देश की मजबूत बैलेंस शीट प्रस्तुत कर रहे हैं। कहा जा रहा है कि कृषि, खनन, निर्माण तथा औद्योगिक उत्पादन को तेज रफ्तार मिलेगी। नई द्विपक्षीय व्यापार वार्ताएं व नए मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) आकार लेते हुए दिखाई देंगे।

खासतौर से सीमेंट, इलेक्ट्रिसिटी, होटल, ट्रांसपोर्ट, ऑटो मोबाइल, फॉर्मा, केमिकल, फुड प्रोसेसिंग, टेक्सटाइल, ई-कॉमर्स, बैंकिंग, मार्केटिंग, डेटा एनालिसिस, सायबर सिक्योरिटी, आईटी, टूरिज्म, रिटेल ट्रेड, आदि क्षेत्रों में तेज विकास होगा। इससे रोजगार और स्वरोजगार के मौके बढ़ते हुए दिखाई देंगे। नए वर्ष 2025 में सेंसेक्स और निफ्टी नई ऊंचाइयों पर पहुंचते हुए दिखाई देंगे। साथ ही सोना-चांदी के भावों की नई उड़ान भी दिखाई देगी। गौरतलब है कि नए वर्ष 2025 में स्थानीय और घरेलू बाजार की मजबूती अर्थव्यवस्था के लिए लाभप्रद होगी। पिछले 10 साल में देश जिस तेजी से आत्म निर्भरता की नीति और वोकल फॉर लोकल के मंत्र के साथ आगे बढ़ा है, उससे नए वर्ष में देश अधिक लाभांवित होगा। डेलॉइट इंडिया की इंडियाज होम एंड हाउसहोल्ड मार्केट रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत का घरेलू बाजार 10 फीसदी से अधिक की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (सीएजीआर) से बढ़ेगा और इस तेज गति से वर्ष

2030 तक भारत का घरेलू बाजार लगभग 237 अरब डॉलर की ऊंचाई पर पहुंच सकता है। निश्चित रूप से नए वर्ष में देश के कोने-कोने में मेक इन इंडिया अभियान की शक्ति बढ़ेगी। साथ ही भारत दुनिया में सबसे अधिक मांग वाला तीसरा बड़ा विनिर्माण गंतव्य भी उभरकर दिखाई देगा। देश में चीन से आयात किए जाने वाले दवाई, रसायन और अन्य कच्चे माल का विकल्प तैयार करने के लिए लागू प्रोडक्शन लिंक्ड इनसेंटिव (पीएलआई) स्कीम के और अधिक अच्छे परिणाम मिलते हुए दिखाई देंगे। निःसंदेह नए वर्ष 2025 में कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलेगा। देश में कृषि उन्नयन, खेती में नवाचार को प्रोत्साहन देने, लागत को कम करते हुए उत्पादन के साथ ही किसानों की आय बढ़ाने का अभूतपूर्व अभियान आगे बढ़ता हुआ दिखाई दे सकेगा। इसमें कोई दोमत नहीं है कि सरकार को बीते हुए वर्ष से जो बेहतर मानसून विरासत में मिला है, उससे नए वर्ष में ग्रामीण अर्थव्यवस्था रफ्तार से बढ़ेगी, ग्रामीण इलाकों में खपत भी बढ़ेगी। देश में कृषि क्षेत्र तेजी से आगे बढ़ेगा। ज्ञातव्य है कि फसल वर्ष 2023-24 में खाद्यान्न उत्पादन रिकॉर्ड 32.22 करोड़ टन के स्तर पर पहुंच गया। वर्ष 2023-24 में गेहूं और चावल का अधिक उत्पादन हुआ है। गेहूं का रिकॉर्ड उत्पादन 1132.92 लाख टन और चावल का उत्पादन 1378.25 लाख टन के स्तर पर पहुंच गया। यह अनुमान किया गया है कि सरकार की नई कृषि विकास रणनीति से नए वर्ष में खाद्यान्न उत्पादन रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच जाएगा। यह स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि नए वर्ष 2025 में भारत में कर संग्रह में तेज वृद्धि होगी। उद्योग-कारोबार में बेहतरी से वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) संग्रह में वृद्धि होगी। मौजूदा वित्तीय वर्ष 2024-25 में अप्रैल से नवंबर 2024 के बीच जीएसटी संग्रह पिछले वर्ष की इस अवधि के मुकाबले 9 फीसदी बढ़कर 14.56 लाख करोड़ हो गया है। इसी प्रकार मौजूदा वित्त वर्ष 2024-25 में बीते हुए वर्ष से अधिक आयकर रिटर्न और अधिक आयकर प्राप्ति का परिदृश्य उभरकर दिखाई दे रहा है। चालू वित्त वर्ष 2024-25 के लिए 7.28 आयकर रिटर्न दाखिल किए गए। इसमें कोई दो मत नहीं है कि नए वर्ष में दुनिया की तेज बढ़ती भारतीय अर्थव्यवस्था के तहत बढ़ते उद्योग-कारोबार, सर्विस सेक्टर, शेयर बाजार और मध्यम वर्ग की क्रय शक्ति की नई ऊंचाइयों के कारण देश में टैक्स संग्रहण में तेज वृद्धि होगी। इससे बुनियादी ढांचे, सामाजिक सेवाओं और जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिए सरकार की क्षमता बढ़ेगी। सरकार की मुट्ठियों में बढ़ता कर राजस्व अर्थव्यवस्था के नवनिर्माण में मदद करेगा।

यह बात भी महत्वपूर्ण है कि नए वर्ष में निर्यात और विदेशी निवेश की संभावना बढ़ेगी। सरकार की वित्तीय नियंत्रण की नीतियों से नए वर्ष 2025 में भारत राजकोषीय घाटा नियंत्रण में सफल रहते हुए दिखाई देगा। हम उम्मीद करें कि जनवरी 2025 में ट्रम्प के अमेरिका के राष्ट्रपति बनने के बाद अमेरिका द्वारा चीन पर भारी व्यापार प्रतिबंधों की संभावना से भारत के नए वैश्विक आपूर्तिकर्ता देश बनने की संभावना बढ़ेगी। नए वर्ष में भारतीय शेयर बाजार की राह कठिन नहीं होगी, शेयर बाजार को सर्वोच्च ऊंचाई पर पहुंचाने में घरेलू फंडों की अहम भूमिका होगी और कारपोरेट आय को बढ़ावा मिलेगा। सरकार के द्वारा आर्थिक और वित्तीय सुधारों, कृषि सुधारों, मेक इन इंडिया, निर्यात बढ़ाने और ग्रामीण क्षेत्रों की आमदनी बढ़ाने के रणनीतिक प्रयासों से देश की अर्थव्यवस्था मजबूत होगी। नए वर्ष में भारत की विकास दर 7 फीसदी के स्तर पर होगी और इस समय जो भारत दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है, नए वर्ष में दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की डगर पर तेजी से आगे बढ़ेगा और ऐसे तेज आर्थिक विकास से देश के आम आदमी के चेहरे पर भी आर्थिक मुस्कुराहट बढ़ेगी।

(लेखक ख्यात अर्थशास्त्री हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

लेख पर अपनी प्रतिक्रिया edit@haribhoomi.com पर दे सकते हैं।

संकलित
दर्शन

प्रसन्नता बन जाए परमात्मा

व्यक्ति का चित्त प्रसन्न रहे तो परमात्मा के दर्शन हो जाएं। यह प्रसन्नता ही परमात्मा बन जाए। मगर आज के भागदौड़ भरे और तनाव के दौर में यह प्रसन्नता आए कैसे? तमाम लोग पैसा कमाने की भागदौड़ में लगे हैं। कोई भी ग्रंथ हो, धर्म हो, अध्यात्म हो, पैसा कमाने के लिए मना नहीं करता, लेकिन धन कमाते हुए भी यदि प्रसन्नता नहीं है तो कहीं पर ठहर कर कुछ विचार तो करना ही चाहिए। कथाओं में एक बात मैं अक्सर कहता रहता हूं। हमारे ग्रंथों में अपनी कुल आय का दशांश निकालने पर बल दिया गया। दशांश यानी जो भी आप महीने में कमा रहे हैं, उसका दस प्रतिशत हिस्सा समाज के लिए, जरूरतमंद लोगों के लिए खर्च किया जाना चाहिए। आप दो लाख रुपये कमा रहे हैं तो 20 हजार निकाल दें। आपको लगता है कि 20 हजार ज्यादा हैं, आप नहीं निकाल पाएंगे तो एक लाख ही कमाएं। फिर दस हजार ही निकालने होंगे। आपाधापी में लोग प्रसन्न रहना तो जैसे भूलते जा रहे हैं। अध्यात्म में प्रसन्न रहने का बहुत महत्व बताया गया है। हर व्यक्ति को प्रसन्न रहना चाहिए, क्योंकि प्रसन्नता परमात्मा तक पहुंचने का द्वार है। हमें प्रसन्न रहते हुए स्वयं की खोज करनी चाहिए। हम दूसरों को ढूंढ़ने और उनमें कमियां व खूबियाँ खोजने में लगे रहते हैं। एक नजर हमें खुद पर भी डालनी चाहिए। व्यक्ति स्वयं की खोज करें, समाज की सेवा करे और परमात्मा से प्रेम करे, उसका भजन करें, आज के समय में प्रसन्न रहने के लिए यह पर्याप्त है। बहुत ज्यादा साधनों में उलझने की आवश्यकता नहीं है।

संकलित
प्रेरणा

संतान गुस्सा हो तो उसे शांत करने की करें कोशिश

पुराने समय में एक दिन शिव जी और पार्वती जी ने विचार किया कि अब गणेश और कार्तिकेय का विवाह कर देना चाहिए। ये विचार करने के बाद उन्होंने कार्तिकेय स्वामी और गणेश जी को बुलाया और दोनों से कहा कि आप दोनों में से जो इस संसार की परिक्रमा करके पहले आएगा, हम उसका विवाह पहले कराएंगे। कार्तिकेय स्वामी तो अपने वाहन मोर पर बैठकर तुरंत उड़ गए, लेकिन गणेश जी अपने वाहन चूहे पर बैठे हुए थे। गणेश जी ने ने तुरंत ही माता-पिता की परिक्रमा कर ली और कह दिया कि आप दोनों ही मेरे लिए संसार हैं। दूसरी ओर, कार्तिकेय स्वामी को संसार की परिक्रमा करके लौटने में थोड़ा समय लग गया। जब कार्तिकेय स्वामी परिक्रमा करके लौटे तो उन्होंने देखा कि गणेश का विवाह हो गया है। गणेश जी को विवाहित देखकर कार्तिकेय स्वामी नाराज हो गए। उन्होंने शिव-पार्वती से कहा कि आपने ये सही नहीं किया है। क्रोधित होकर कार्तिकेय स्वामी क्रौंच पर्वत पर चले गए। ये क्रौंच पर्वत आज दक्षिण भारत में कृष्णा जिले में कृष्णा नदी के तट पर स्थित है। इसे श्रीपर्वत भी कहते हैं। शिव जी और देवी पार्वती ने कार्तिकेय स्वामी को समझाने की बहुत कोशिशें कीं, लेकिन कार्तिकेय शांत नहीं हुए। शिव-पार्वती समझ गए कि कार्तिकेय बहुत ज्यादा गुस्से में है और ये वापस भी नहीं आएगा। तब दोनों ने तय कि वे ही कार्तिकेय से मिलने जाते रहेंगे। इसके बाद हर अमावस्या पर शिव जी और पूर्णिमा पर देवी पार्वती कार्तिकेय से मिलने श्रीपर्वत पर आती हैं। ऐसी मान्यता है।

अंतर्मन

आज की पाती

धुंध न बने दुर्घटनाओं का कारण

हमारे देश में दिन प्रतिदिन सड़क हादसों में जान गंवाने वालों का आंकड़ा बढ़ता ही जा रहा है। देश में सड़क हादसों में एक दिन में जितने लोग जान गंवाते हैं, उतने तो आतंकवाद के शिकार भी नहीं होते। या यूं कहा जा सकता है कि हमारे देश के लिए आतंकवाद से ज्यादा बड़ी समस्या सड़कों पर बढ़ते हादसों की लग रही है। वैसे तो हर मौसम में सड़क हादसों की गिनती कम नहीं होती, लेकिन सर्दियों के मौसम में धुंध में विजिबिलिटी कम रहने से सड़क पर जरा भी लापरवाही जान पर भारी पड़ सकती है। सर्दियों में पड़ने वाली धुंध भी सड़क दुर्घटनाओं का कारण बनती है। धुंध से होने वाले हादसों से बचने के लिए सरकार, प्रशासन और आमजन को मिलजुल कर प्रयास करने चाहिए। ट्रैफिक पुलिस को हाइवे पर पैट्रोलिंग करनी चाहिए। अगर कोई हादसा हो जाता है, तो तुरंत बचाव कार्य शुरू होना चाहिए। - साकेत अग्रवाल, दुर्ग

करंट अफेयर

क्या वेगनरी लंबे समय तक मांस से दूर रह सकते हैं

मनुष्य लंबे समय से जानवरों को मारने और खाने के बारे में अपनी अंतरात्मा से जूझता रहा है। 'मांस विरोधाभास' ने 37,000 साल पहले संभवतः गुफा चित्रों को प्रेरित किया होगा। तब से, कई प्रमुख विचारकों ने मांस का त्याग कर दिया है, जिनमें पाइथागोरस, लियोनार्दो दा विंची, मैरी शेली और महात्मा गांधी शामिल हैं। आज, अमेरिका के आधे वयस्क और ब्रिटेन के तीन-चौथाई वयस्क 'फैक्टरी फार्मिंग' का विरोध करते हैं, जहां लगभग सारा मांस उत्पादित होता है। इसके बावजूद केवल दस में से एक व्यक्ति ही मांस रहित आहार ग्रहण करता है। कई देशों में पादक आधारित आहार बहुत ही स्वादिष्ट और सस्ते होते हैं। इन्हें अपनाने से हर साल 80

अरब से ज्यादा जानवरों की जान बच जाएगी और मांसाहारी आहार की तुलना में पर्यावरण को 75 प्रतिशत कम नुकसान होगा। स्वास्थ्य और दीर्घायु होने के लिए पादप आधारित आहार अपनाने के लाभ तेजी से स्थापित हो रहे हैं और इसी के चलते एक प्रख्यात हृदय रोग विशेषज्ञ ने टिप्पणी की है, 'हृदय रोग विशेषज्ञ दो प्रकार के होते हैं: शाकाहारी और वे जिन्होंने आंकड़ों का अवलोकन नहीं किया है।' शाकाहारी भोजन के इन सिद्ध लाभों के बावजूद, अधिकांश लोग मांस खाना जारी रखते हैं।

ऑफ बीट

जर्मनी की बैठक में यूक्रेन हवाई सुरक्षा बढ़ाने कहेगा

यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की ने कहा कि वह जर्मनी में इस सप्ताह होने वाली बैठक में अपने सहयोगियों से अपनी हवाई सुरक्षा बढ़ाने का आह्वान करेंगे। जेलेंस्की ने कहा कि जर्मनी के रामस्टीन

वायुसेना ठिकाने पर बृहस्पतिवार को होने वाली रामस्टीन समूह की बैठक में दर्जनों साझेदार देश हिस्सा लेंगे, 'जिनमें वे देश भी शामिल होंगे जो न केवल मिसाइलों से बचाव के लिए, बल्कि निर्देशित बमों और रूसी विमानन के खिलाफ भी हमारी क्षमताओं को बढ़ाने में मदद कर सकते हैं।' यूक्रेन के राष्ट्रपति ने शनिवार को अपने रात्रिकालीन संबोधन में कहा, 'हम उनके साथ इस पर चर्चा करेंगे और उन्हें मनाने का प्रयास जारी रखेंगे। हमारा लक्ष्य अब भी हमारी वायु रक्षा को मजबूत करना है।' अमेरिका के रक्षामंत्री लॉयड जे. ऑस्टिन इस बैठक में भाग लेंगे। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन अक्टूबर में रामस्टीन में होने वाले शिखर सम्मेलन में भाग लेने वाले थे, लेकिन अमेरिका में आए तूफान मिल्टन के कारण वह शामिल नहीं हो सके। जेलेंस्की यह मांग ऐसे समय करेंगे जब अमेरिका के नव-निर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप 20 जनवरी को कार्यभार संभालेंगे और लगभग तीन साल से चल रहे युद्ध को शीघ्र समाप्त करने का संकल्प लेंगे।

ट्रेंड

सपनों को नई ऊंचाई

स्वाभिमान अपार्टमेंट्स ने दिल्ली के मेरे गरीब भाई-बहनों के सपनों को नई ऊंचाई दी है। इससे वहां के बच्चों को भी जीवन में आगे बढ़ने का एक नया हौसला मिला है। उनसे बातचीत कर मन को बहुत संतोष हुआ है।

-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

दंडात्मक कार्रवाई करें

आगरा में अवैध रूप से गिरायी गयी ऐतिहासिक धरोहर के मामले में हमारी संस्कृति मंत्रालय और भारतीय पुरातत्व विभाग से मॉंग है कि सभी दोषियों के विरुद्ध मामला दर्ज कराएं और वैधानिक रूप से दंडात्मक कार्रवाई सुनिश्चित करें।

-अखिलेश यादव, सपा सांसद

टीम भावना नष्ट

ऐसा लग रहा है कि हमारी बदहवास क्रिकेट टीम सीरीज में हार की ओर बढ़ रही है। झूठ अहंकार ने टीम भावना को नष्ट कर दिया है। बुमराह पूरी कोशिश कर रहे है लेकिन बल्लेबाजी उनका साथ देने में नाकाम हो रही है

-किरण मजूमदार शॉ, उद्यमी

कला के प्रति वफादार

पायल कपाड़िया साबित करती है कि सिर झुकाकर, मूर्खों और समाजशास्त्रियों को नजरअंदाज करते हुए, सिनेमा नामक कला के प्रति वफादार बने रहना ही मायने रखता है।

-सुधीर मिश्रा, फिल्मकार

अपने विचार
हरिभूमि कार्यालय
टिकरापारा, रायपुर में पत्र के माध्यम से या फैक्स : 0771-4242222, 23 पर या सीधे मेल से hbcgpati@gmail.com पर भेज सकते हैं।

नया चीनी वायरस

चीन में एक और वायरस संक्रमण की खबर ने दुनिया भर में चिंता का संचार कर दिया है, तो कोई आश्चर्य नहीं। ह्यूमन मेटान्यूमोवायरस (एचएमपीवी) नाम का यह वायरस श्वसन तंत्र पर हमला करता है। शुरू में फ्लू जैसे लक्षण दिखते हैं और किसी-किसी मरीज की स्थिति नाजुक हो जाती है। जैसा कि हम जानते हैं, चीन से आसानी से सूचनाएं पाना मुश्किल है। वह सूचनाओं को हरसंभव ढंग से छिपाता है और आधिकारिक रूप से वह अभी भी गोपनीयता बरत रहा है। सोशल मीडिया के जरिये एचएमपीवी वायरस के आतंक की खबरें आने लगी हैं। चीन के अस्पतालों में मरीजों की संख्या में भारी इजाफा हुआ है। चीन की जिम्मेदार एजेंसियां इस वायरस के दुष्प्रभाव को घटाने में लगी हैं और यह उम्मीद करनी चाहिए कि चीन इस रोग पर लगाम लगाने में कामयाब हो जाएगा। चीन अपने यहां कोरोना वायरस पर भी लगाम लगाने में एक हद तक कामयाब रहा था, लेकिन वह दूसरे देशों में उसे फैलने से नहीं रोक पाया। अब यह उम्मीद करनी चाहिए कि सजग चीन अपने यहां से किसी भी संदिग्ध को किसी देश की यात्रा करने नहीं देगा।

बहरहाल, एचएमपीवी का संक्रमण व्यक्तिगत संपर्क से बढ़ रहा है। अगर किसी संक्रमित व्यक्ति के किसी सामान को कोई स्वस्थ व्यक्ति छुए, तो भी संक्रमण का खतरा बताया जा रहा है। यह वायरस चूंकि नया है, तो इसका अभी कोई टीका नहीं है। इसकी कोई एंटीवायरल दवा भी नहीं है। यह अच्छी बात है कि अधिकांश मामलों में लोगों को मामूली समस्याएं आ रही हैं। ज्यादातर लोग लक्षण के अनुरूप उपचार और आराम से ही ठीक हो जा रहे हैं। चीन ने साफ तौर पर कुछ बताया नहीं है, मगर अनुमान यही है कि गंभीर मामलों में लक्षणों को प्रबंधित करने के लिए अस्पताल में भर्ती होने, ऑक्सीजन थेरेपी या कॉर्टिकोस्टेरॉइड उपचार की आवश्यकता पड़ सकती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की अगर मानें, तो इस वायरस का संक्रमण अक्तूबर महीने से ही बढ़ रहा है। ऐसा भी हो सकता है कि यह मौसमी रूप से फैलकर शांत हो जाए। वैसे भी, चीन में इस मौसम में वायरल और फ्लू का असर देखा जाता है। अच्छा यही है कि यह बीमारी मौसमी साबित हो और कम से कम लोगों के जीवन पर असर डाले। ध्यान रहे, कोरोना महामारी के समय विश्व स्वास्थ्य संगठन की भूमिका बहुत संतोषजनक नहीं थी और वह चीन के प्रति अपेक्षाकृत ज्यादा उदार था। भारत ने उचित ही विश्व स्वास्थ्य संगठन से समय रहते सूचना की मांग की है, ताकि जरूरी तैयारी की जा सके। विश्व स्वास्थ्य संगठन से इस बार ज्यादा उम्मीद रहेगी।

चीन एचएमपीवी नाम के वायरस के दुष्प्रभाव को घटाने में लगा है और उम्मीद करनी चाहिए कि वह इस रोग पर लगाम लगाने में कामयाब हो जाएगा।

वैसे तो चीन स्वयं वैज्ञानिक रूप से बहुत सक्षम हो गया है, पर उसे अपने यहां आए दिन हो रहे ऐसे संक्रमण को लेकर सजग होना चाहिए। अब यह सवाल बिल्कुल जायज है कि वैज्ञानिक या कृत्रिम तरक्की की होड़ में कहीं चीन अपने लोगों के बुनियादी स्वास्थ्य की अनदेखी तो नहीं कर रहा है? कहीं चीनियों की रोग-प्रतिरोधक क्षमता समाप्त या बहुत कम तो नहीं हो गई है? वे बार-बार किसी न किसी प्रकार की बीमारी की चपेट में आ रहे हैं, तो यह गंभीर बात है। चीनी लोगों को खान-पान के प्रति भी सजग होना चाहिए। जरूरत से ज्यादा कृत्रिमता सेहत पर भारी पड़ सकती है। ऐसे वायरस वास्तव में चीन की साख पर हमला हैं। वह विभिन्न उत्पादों का निर्यातक ही रहे, बीमारियों का निर्यातक न बने, इसी में उसकी और दुनिया की भलाई है।

हिन्दुस्तान | 75 साल पहले

06 जनवरी, 1950

हिन्दूसभा का नया नारा

हिन्दू महासभा ने दो वर्ष तक चुप रहने के बाद एक नये नारे के साथ राजनीति के मैदान में प्रवेश किया है। उसके नये अध्यक्ष डा. खरे ने घोषित किया है कि हिन्दू महासभा का उद्देश्य भारत और पाकिस्तान को पुनः संयुक्त करना है और वह इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए काम करेगी। हिन्दू महासभा के नेता अपनी कल्पना का 'अखंड भारत' किस प्रकार स्थापित करेंगे? भारत और पाकिस्तान का फिर से एकीकरण दो ही प्रकार से सम्भव हो सकता है- एक आपस की रजामंदी से और दूसरे तलवार के जोर से। आपसी रजामंदी का फिलहाल कोई सवाल पैदा नहीं होता। प्रथम तो भारत इसके लिए तैयार नहीं है और अगर वह थोड़ी देर के लिए तैयार हो भी जाये, तो पाकिस्तान तैयार नहीं होगा। जिन लोगों ने लड़-झगड़कर देश का विभाजन करवाया और अब भी भारत के प्रति जिनका व्यवहार मित्रतापूर्ण नहीं है, वही पाकिस्तान के शासक पाकिस्तान को स्वेच्छापूर्वक भारत के साथ मिलाने के लिए कैसे तैयार होंगे? उनकी सहमति से भारत और पाकिस्तान के एक होने की कल्पना करना मूर्खों के स्वर्ग में विहार करने के समान होगा। दूसरा उपाय तलवार का रह जाता है। तलवार के जोर पर पाकिस्तान को भारत में मिला लेने की कल्पना और भी मूर्खतापूर्ण है। इस तरीके की सारा सभ्य संसार निन्दा करेगा और उससे जो पेचीदगियां पैदा होंगी, उनका सामना करना आसान न होगा। किन्तु हिन्दू महासभा के नेताओं के दिमागों में कुछ ऐसी ही कल्पना चक्कर काट रही है। हिन्दू महासभा के प्रधानमंत्री का कहना है कि भारत और पाकिस्तान का एकीकरण सरकारी स्तर पर किया जाये। दूसरे शब्दों में भारत सरकार पाकिस्तान पर सैनिक चढ़ाई करे और उसे जीतकर अपने आधीन करे।

मौजूदा सरकार तो यह मूर्खतापूर्ण कार्य करेगी नहीं। भारत के प्रधानमंत्री पं. नेहरू ने बहुत पहले यह कहा था कि पाकिस्तान ने अपने को अनेक पेचीदा उलझनों में उलझा लिया है। अगर पाकिस्तान भारत में शामिल होता है, तो भारत को उसकी उन तमाम समस्याओं को अपने सिर ओढ़ना होगा। चूंकि भारत पाकिस्तान की इन समस्याओं का बोझ अपने सिर पर नहीं लेना चाहता; इसलिए नेहरूजी का कहना था कि अगर पाकिस्तान स्वयं आगे होकर भारत में मिलने का प्रस्ताव पेश करे, तो भी वे उसे स्वीकार करने की सलाह नहीं देंगे।

हर बार गलत नहीं होता रुपये का गिरना

आलोक जोशी | वरिष्ठ पत्रकार

किसी दूसरी मुद्रा के मुकाबले रुपये का कमजोर होना हमेशा नुकसानदेह नहीं होता। विश्व व्यापार के हिसाब से कई बार अपनी मुद्रा का सस्ता होना बेहद फायदेमंद साबित होता है।

रुपया डॉलर के मुकाबले गिरावट के नए-नए रिकॉर्ड बना रहा है। एक डॉलर की कीमत पिछले पखवाड़े 85 रुपये के पार चली गई। समझदार लोग कहेंगे कि रुपया गिर नहीं रहा है, बल्कि डॉलर मजबूत हो रहा है। मगर छुरी खरबूजे पर गिरे या खरबूजा छुरी पर, कटना तो खरबूजे को ही है। डॉलर का मजबूत होना अरसे से हमारे देश में फिक्र का कारण रहा है। इसे लेकर तरह-तरह की किंवदंतियां भी चलती हैं। जैसे, आजादी के समय एक रुपया एक डॉलर के बराबर था। यह बात कतई सही नहीं है, क्योंकि आजादी के वक्त भारत का खजाना ब्रिटिश व्यवस्था का हिस्सा था और भारतीय रुपये का अंतरराष्ट्रीय लेन-देन ब्रिटिश मुद्रा पाउंड के दाम से जुड़ा हुआ था। तब रुपये का भाव रोज-रोज बदलता भी नहीं था। तब एक फॉर्मूला तय था कि एक ब्रिटिश पाउंड की कीमत 13.333 रुपये होगी। उस वक्त बाजार में एक पाउंड करीब चार डॉलर का था, इस गणित से एक अमेरिकी डॉलर की कीमत करीब 3.333 रुपये बैठती थी।

यहां यह जान लेना भी जरूरी है कि तब का भारतीय रुपया भी अलग था। उस वक्त रुपया आना, पाई वाली व्यवस्था चलती थी और एक रुपये में 64 पैसे होते थे। चार पैसे का एक आना और रुपया होता था सोलह आने का। आजादी के बाद भी यह आना सीरीज चलती रही, जिसमें एक रुपये में सोलह आने, 64 पैसे और 192 पाई होती थीं। चवन्नी और अठन्नी के नाम भी वहीं से आए थे। मगर साल 1957 में भारत ने मीट्रिक प्रणाली अपनाई और रुपये में सौ पैसे होने लगे। इसके साथ ही एक, दो, तीन, पांच, दस, पच्चीस और पचास नए पैसे के सिक्के जारी किए गए। बीस पैसे का सिक्का बाद में आया था, फिर रुपये और उसके ऊपर के सिक्के भी। काफी समय तक बाजार में पैसे और नए पैसे साथ-साथ चलते रहे। फिर 1968 में नए पैसे को औपचारिक तौर पर पैसे कहा जाने लगा और पुराना पैसा चलन से बाहर हो गया।

इतना किस्सा इसलिए, क्योंकि यह समझना जरूरी है कि मुगलों के दौर के या उसके पहले के चांदी-सोने वाले रुपये या फिर आजादी के वक्त के रुपये की दुनिया के बाजार में जो भी कीमत थी, उसके साथ आज के रुपये के तुलना करना शायद ज्यादती होगी। और, यह भी समझना चाहिए कि किसी दूसरी मुद्रा के मुकाबले रुपये का कमजोर होना हमेशा नुकसानदेह नहीं होता। अंतरराष्ट्रीय व्यापार के हिसाब से कई बार अपनी मुद्रा का सस्ता होना बेहद फायदेमंद साबित होता है, क्योंकि इससे हमारा निर्यात खरीदारों की नजर में सस्ता हो जाता है। जैसे, भारत से सौ रुपये की चीज अगर अमेरिका जा रही है और डॉलर की कीमत पचास रुपये हो, तो खरीदार को दो डॉलर देने पड़ेंगे, लेकिन अगर आज डॉलर 85 रुपये के ऊपर है, तो खर्चा सवा डॉलर से भी कम हो गया। चीन ने अपना माल दुनिया भर के बाजार में भरने के लिए यही नुस्खा सफलतापूर्वक आजमाकर दिखाया है। कई दशकों से उस पर यह इल्जाम लगता रहा है कि वह अपनी मुद्रा को जान-बूझकर कमजोर रख रहा है, ताकि निर्यात के मोर्चे पर वह दूसरों को मात देता रहे।

आजादी के बाद लंबे समय तक भारत में विदेशी मुद्रा का भाव या विनिमय दर (जिस दर पर कोई विदेशी मुद्रा खरीदी या बेची जाएगी) सरकार ही तय करती थी। पुराने आंकड़ों पर नजर डालें, तो यह पता चलता है कि 1950 से 1965 तक एक डॉलर की कीमत 4.76 रुपये पर स्थिर रही और उसके बाद 1967 से 1971 तक 7.57 रुपये पर। यह फर्क भी इसलिए आया कि 1962 व 1965 के युद्ध और 1966 के अकाल की वजह से हमारी अर्थव्यवस्था पर बहुत खराब असर पड़ा था और 1966 में केंद्र सरकार को रुपये का अवमूल्यन करना पड़ा था।

1970 के दशक में पाकिस्तान से युद्ध व कच्चे तेल का संकट एक बार फिर मुसीबत बना और इसका दबाव रुपये की कीमत पर पड़ा। फिर भी डॉलर की कीमत सरकार ही तय करती थी और 1990 तक यह कीमत धीरे-धीरे बढ़कर 17.50 रुपये पहुंच गई।

फिर आया 1991, यानी आर्थिक सुधारों का साल। यहीं सरकार ने डॉलर के मुकाबले रुपये की कीमत में कटौती या अवमूल्यन का एलान किया। जुलाई में ही दो किस्तों में रुपये की कीमत घटाई गई। 1 जुलाई को नौ प्रतिशत और दो ही दिन बाद 3 जुलाई को 11 फीसदी की कटौती हुई। डॉलर झटके से महंगा हो गया। भारत से निर्यात तो सस्ता हुआ, लेकिन आयात महंगा। मगर साथ ही भारत में निवेश करना अब डॉलर लगाने वालों के लिए आकर्षक हो गया।

एक बेहद रोचक किस्सा है। उस वक्त वित्त मंत्री थे डॉक्टर मनमोहन सिंह, जो उससे पहले तीन साल तक जेनेवा में साउथ कमीशन नाम के पॉलिसी थिंक टैंक में काम कर चुके थे। मनमोहन सिंह के विदेशी बैंक खाते में कुछ रकम जमा थी। तब प्रधानमंत्री नरसिंह राव के एक निकट सहयोगी ने बताया कि यह फैसला होने के बाद मनमोहन सिंह प्रधानमंत्री कार्यालय गए और अवमूल्यन के कारण उनके बैंक खाते में जमा डॉलरों की कीमत में जो इजाफा हुआ, उस रकम का चेक काटकर उन्होंने प्रधानमंत्री राहत कोष में जमा कर दिया। मनमोहन सिंह ने अपने हिस्से का मुनाफा तो राष्ट्र को दान कर दिया, लेकिन वहां से डॉलर की कीमत बढ़ने का सिलसिला भी तेज हुआ और देश की तरक्की की रफ्तार भी।

मुद्रा की मजबूती जरूरी है। आप ब्रिटेन या अमेरिका जैसे देशों में जाएं, तो वहां 100 डॉलर या 50 पाउंड से ज्यादा का नोट नहीं मिलता। दूसरी तरफ, ऐसे कई देश हैं, जहां का एक नोट लाखों का होता है। जब अर्थव्यवस्था इतनी मजबूत हो जाए, देश के लोग इतने समृद्ध हो जाएं कि उन पर बाकी दुनिया से लेन-देन का कोई असर न पड़ता हो, तब तो ठीक है, वरना देश की मुद्रा का कमजोर रहना किसी कमजोरी की नहीं, दूरदेशी की निशानी भी हो सकता है।

पुराने लोग याद भी करेंगे। एक वक्त था, जब एक-एक डॉलर दांत से पकड़कर खर्च होता था। घूमना-फिरना तो छोड़ दें। पढ़ाई के लिए छात्रवृत्ति पाकर या फिर व्यापार के दौरे या विदेश में नौकरी करने के लिए जाने वालों को भी कुल मिलाकर 125 डॉलर की रकम मिलती थी, जिसमें उन्हें गुजारा करना होता था। आज आप जहां चाहें, अपना घरेलू क्रेडिट कार्ड स्वाइप करके खर्च कर सकते हैं। यह कम हासिल नहीं है। हां, सफर बहुत बाकी है और रफ्तार बढ़ाने जरूरत भी है।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

काश! अपने बुजुर्गों को हम काम लायक समझ पाते

क्षमा शर्मा | वरिष्ठ पत्रकार

भारत में चिकित्सकीय सुविधाओं के विस्तार के कारण औसत आयु में लगातार वृद्धि हो रही है। इस समय देश में बुजुर्गों की आबादी दस करोड़ से ज्यादा है। इनमें से 40 प्रतिशत बुजुर्ग गरीबी में जीते हैं। 18.5 प्रतिशत से अधिक के पास कोई नियमित आय नहीं है। ऐसे बुजुर्गों की स्थिति कैसी होती होगी, यह आसानी से समझा जा सकता है। पश्चिमी देशों में इसीलिए रिटायरमेंट की उम्र बढ़ाई जा रही है, जिससे बुजुर्ग भी देश की तरक्की और उसकी आर्थिकी को बढ़ाने का काम कर सकें। अमेरिका में यह 67 साल है, तो कई देशों में 65 वर्ष। जर्मनी में भी 67 वर्ष है। अपने यहां शिक्षा के क्षेत्र में काम करने वालों की भी सेवानिवृत्ति की उम्र निर्धारित है, जबकि अमेरिका में शिक्षा के क्षेत्र में काम करने वाले लोग शायद ही कभी रिटायर होते हैं। अमर्त्य सेन इसका बड़ा उदाहरण हैं।

भारत में रिटायरमेंट की वही पारंपरिक उम्र चली आ रही है- 60 या 58 वर्ष। तर्क यह दिया जाता है कि अगर पुराने लोग रिटायर नहीं होंगे, तो नए लोगों को काम कैसे मिलेगा? सोचिए, अपने देश में दस करोड़ से अधिक की आबादी को हाथ पर हाथ रखकर रहकर बस मृत्यु का इंतजार करना है। इनमें से बहुत कम बुजुर्गों के पास पेंशन की सुविधा है, जिससे वे अपना भरण-पोषण कर सकें। अधिकांश वृद्ध अपने बच्चों और परिवार पर निर्भर हैं और इस निर्भरता में वे तरह-तरह की मुसीबतें झेलते हैं। उन्हें अकेला छोड़ दिया जाता, वक्त पर इलाज नहीं मिलता। बहुत बार वे भीख तक मांगने को मजबूर होते हैं। अभी बनारस की एक खबर सुर्खियां बनी थी, जिसमें एक लेखक को उसके बच्चों ने घर से निकाल दिया। उनके पास अस्सी करोड़ रुपये की संपत्ति भी थी, लेकिन अंतिम दिन एक कुष्ठ आश्रम में काटने पड़े। सूचना के बावजूद अंतिम संस्कार के वक्त भी बच्चे नहीं आए। देश के एक बड़े उद्योगपति के साथ भी ऐसा हो चुका है।

देश में दस करोड़ से भी अधिक बुजुर्ग हैं। स्वस्थ और सक्षम होते हुए भी उनमें से अनेक को एक निष्क्रिय जीवन की ओर धकेल दिया जाता है।

मैं जहां रहती हूं, उसके आस-पास कई पार्क हैं। वहां देखती हूं कि बहुत से लोग यूं ही खाली बैठे रहते हैं। कई तो ऐसे हैं, जो गर्मी की भरी दोपहर में भी वहां नजर आते हैं। उन्हें देखकर लगता है, क्या घर के अंदर उनके लिए कोई जगह नहीं? यह भी कि अगर इनके पास कोई काम होता, तो ये इस तरह न बैठे रहते? डॉक्टर कहते हैं कि काम करते आदमी के मुकाबले खाली बैठा आदमी बहुत जल्दी रोगों का शिकार हो जाता है। डिप्रेशन यानी अवसादग्रस्तता की बीमारी उनमें से एक है। इसीलिए अध्ययन बता रहे हैं कि बुजुर्गों में 'रिटायरमेंट डिप्रेशन' बढ़ता जा रहा है। जीवन भर, सुबह-शाम नौकरी की आपाधापी में लगे रहे, अब एकदम खाली हो गए, ऐसे में यही सोच हावी हो जाती है कि अब दिन कैसे कटेगा? और यदि आय का कोई नियमित साधन या स्रोत न हो, तो जीवन कैसे चलेगा?

इन दिनों बहुत से परिवारों के बच्चे या तो विदेश चले गए हैं या वे किसी दूसरे शहर में हैं। पैतृक शहर में भी हों, तो प्रायः माता-पिता के साथ नहीं रहना चाहते। ऐसे में, यह भावना आना स्वाभाविक है कि जिनके लिए जीवन खपा दिया, अंत में क्या हाथ आया? बड़े शहरों में तो फिर भी अगर घर में जगह न मिले, तो लोग मजबूर होकर वृद्धाश्रम का रुख कर लेते हैं, मगर छोटे शहरों में तो यह सुविधा भी नहीं है। बहुत से बुजुर्गों को घर में होते हुए भी बहुत अकेलेपन का सामना करना पड़ता है। चूंकि वे जिंदगी भर घर से बाहर रहे, इसलिए अब हर वक्त घर में रहना पत्नी और बच्चों को ही पसंद नहीं आता।

इन बुजुर्गों के लिए क्यों नहीं ऐसी व्यवस्थाएं की जातीं, जिनसे वे समाज और बच्चों पर खुद को बोझ न समझें और रिटायरमेंट को जीवन का अंत न मान बैठें। देखा जाए, तो यह उन बुजुर्गों की समस्या ज्यादा है, जो मध्यवर्ग, निम्न मध्यवर्ग से आते हैं और नौकरी-पेशा रहे हैं, वरना न तो किसान कभी रिटायर होते हैं, न व्यापारी, न ही छोटे-मोटे काम करने वाले लोग ही। इनके अलावा साधारण महिलाएं, चाहे वे नौकरी भी करती रही हों, कभी रिटायर नहीं होतीं। पूरी उम्र घर के काम उनके सामने मुंह बाए खड़े रहते हैं। इसलिए सरकारों और निजी क्षेत्र को अब ऐसी योजनाएं बनानी चाहिए, जिनसे बुजुर्गों को भी काम मिल सके। इससे उनका समय भी कटेगा, वे किसी पर बोझ भी न होंगे और एक बड़ी आबादी बुजुर्ग होते हुए भी कामकाजी कहलाएगी।

(ये लेखिका के अपने विचार हैं)

मनसा वाचा कर्मणा

नया मनुष्य कैसे पैदा होगा

चलिए साल तो नया हो गया, लेकिन मनुष्य? वह कैसा है- नया या पुराना? ओशो का पूरा दर्शन और कार्य नए मनुष्य के जन्म के लिए है। वह कहते हैं, नए मनुष्य में मानवता का पूरा भविष्य समाया हुआ है। सवाल यह है, वह नया मनुष्य कौन होगा और कहां से आएगा? वह हमारे भीतर से ही आएगा, लेकिन हम जैसे हैं, वैसे नहीं रह सकते, हमें बदलना होगा। उन्होंने बहुत साफ बिंदु दिए हैं कि नए मनुष्य की पहचान क्या होगी?

आदमी सुखी हो सकता है, अगर जो उसे मिल रहा है, उसे वह पूरे अनुग्रह से स्वीकार कर ले। अनुग्रह का भाव अंकुरित होता है हृदय में, लेकिन हृदय का द्वार सबका बंद पड़ा है। हमारी शिक्षा में, संस्कृति में, परवरिश में, कहीं भी हृदय को विकसित करना सिखाया नहीं जाता। जरा सोचें, जो मिला है, वह कितना अपूर्व है : इतनी सुंदर प्रकृति, रोज ऊगता नया सूरज, रात में निकलते चांद-तारे, सुफला-सुजला धरती, क्या इसके हम हकदार हैं? प्रतिपल अनुग्रह से जीना सीखें, तो सुख ही सुख है। सुख कोई बाहर किसी बैंक में रखा निवेश नहीं है, वह हर पल आपकी संवेदना में है। अगर एक नया मनुष्य पैदा करना है, तो हमें क्षण में सुख लेने की क्षमता और हर क्षण के प्रति आदर और अनुग्रह सीखना पड़ेगा।

दूसरे, आज की सबसे बड़ी जरूरत है कि लोग धार्मिकता को समझें। जिसे लोग धर्म समझते हैं, वे धर्म नहीं हैं, वे चट्टानें हैं। धार्मिकता तो एक बहती हुई सरिता है, जो पग-पग पर मोड़ लेती, निरंतर अपने मार्ग बदलती, लेकिन अंततः सागर तक पहुंचती है। धार्मिकता हृदय की खिलावट है। वह तो अपनी आत्मा, अपनी ही सत्ता के केंद्रबिंदु तक पहुंचने का नाम है।

ध्यान रहे, आदमी किसी धर्म में पैदा नहीं होता, धर्म आदमी के भीतर पैदा होता है। धर्म की परिभाषा भगवान महावीर ने की है, *वत्थु स्वभावो धर्मः*। हर वस्तु का जो स्वभाव है, वह उसका धर्म है। जैसे, पानी का धर्म है नीचे की ओर बहना, भाप का धर्म है हवा में उड़ना। अग्नि का धर्म है गर्मी पैदा करना, माटी का धर्म है स्थिर रहना। मनुष्य भी निसर्ग का हिस्सा है, उसे अपना धर्म ढूंढ़ना जरूरी है। काश! पूरी धरती पर धार्मिकता फैल सकती, तो सारे धर्म विदा हो जाते। यह मनुष्य जाति के लिए एक महान वरदान होगा, जब मनुष्य केवल मनुष्य होगा- न ईसाई, न मुसलमान, न हिंदू!

जब तक धार्मिकता की हवा पैदा नहीं होती, तब तक वास्तविक धर्म और अखंड मनुष्य पैदा नहीं हो सकता। अखंडित मनुष्य अपने आप में पूर्ण है। उसकी पूर्णता ही उसकी पवित्रता है।

जब तक धार्मिकता की हवा पैदा नहीं होती, तब तक वास्तविक धर्म और अखंड मनुष्य पैदा नहीं हो सकता। अखंडित मनुष्य अपने आप में पूर्ण है। उसकी पूर्णता ही उसकी पवित्रता है। वह इतना परितृप्त है कि फिर उसे दूर कहीं स्वर्ग में बैठे, उसकी देखभाल करने वाले किसी ईश्वर की मानसिक जरूरत नहीं रह जाती।

अमृत साधना

एस जयशंकर | विदेश मंत्री, भारत

साल 2024 ने एक ऐसी विदेश नीति देखी, जिसने भारत को विश्व-बंधु के रूप में स्थापित किया। यह नए अवसरों, गहरी साझेदारियों और सबसे पहले भारत व वसुधैव कुटुंबकम के प्रति दृढ़ प्रतिबद्धता का वर्ष है।

खिलाड़ियों को बढ़ावा दे रही सरकार

केंद्र सरकार ने राष्ट्रीय खेल पुरस्कारों की घोषणा की है, जिसके बाद से यह बहस फिर से शुरू हो गई है कि अपने देश में खिलाड़ियों को उचित सम्मान नहीं मिलता। यहां तक कि मनु भाकर का उदाहरण देकर बताया जा रहा है कि किस तरह खिलाड़ियों को प्रताड़ित किया जाता है, जबकि सच्चाई यह है कि मनु भाकर ने फॉर्म भरते हुए स्वयं गलती की थी, जिसे वह बार-बार बताती भी रहीं। फिर भी, न जाने क्यों आलोचकों को आलोचना के सिवाय कुछ सूझता ही नहीं? वे यही हल्ला कर रहे थे कि मनु का नाम जान-बूझकर लिस्ट में नहीं डाला गया, जबकि ऐसा कुछ नहीं था।

दरअसल, अपने देश की यही विडंबना है। यहां जितना भी कर लो, कुछ लोग ऐसे मिल ही जाएंगे, जो प्रशंसा करने के बजाय आलोचना में विश्वास करते हैं। खिलाड़ियों को उचित सम्मान न मिलने की बहस भी कुछ ऐसी ही है। यह मानसिक रूप से दिवालिये हो चुके कुछ लोगों की कारस्तानी है। वे जान-बूझकर विवाद खड़ा करना चाहते हैं, ताकि उनको सुर्खियां मिल सकें, लेकिन ऐसा करने वाले भूल जाते हैं कि जनता सब कुछ जानती है। वह समझती है कि हमारी सभी सरकारें अब खिलाड़ियों को लेकर कितनी गंभीर हो गई हैं और वे खेलों को कितना प्रोत्साहित करती हैं। यकीन न हो, तो गांवों तक में घूम लीजिए। आपको हर गांव में ऐसे बच्चे मिल जाएंगे, जो किसी न किसी खेल में अपनी किस्मत आजमा रहे हैं। उन्हें प्रशासन की ओर से स्थानीय स्तर पर सुविधाएं भी मिल रही हैं, जिनसे वे अपने खेल कौशल को निखार रहे हैं। खेलो इंडिया योजना ने कमाल का काम किया है। अब तो देश के गांव-गांव से नए खिलाड़ी निकलकर सामने आ रहे हैं। वे न सिर्फ खेलों में अपना परचम लहरा रहे हैं, बल्कि भारत का नाम भी रोशन कर रहे हैं। इसी साल खेल पुरस्कारों में कई ऐसे खिलाड़ियों को भी सम्मानित किया गया है, जिनकी आर्थिक पृष्ठभूमि कुछ अच्छी नहीं कही जाएगी।

बहरहाल, केंद्र सरकार की योजनाओं को छोड़ भी दें, तो तमाम राज्यों में कई तरह की ऐसी योजनाएं चलाई जा रही हैं, जिनसे खेलों और खिलाड़ियों को भरपूर प्रोत्साहन मिल रहा है। मुख्यमंत्री खिलाड़ी प्रोत्साहन जैसी योजनाओं से खिलाड़ियों को आर्थिक मदद भी मिल रही है। चूंकि अब सभी खेलों पर ध्यान दिया जा रहा है, इसलिए अलग-अलग विधा के खेलों में नए-नए बच्चे सामने आ रहे हैं। हां, कुछ खेलों में रास्ता अभी लंबा है, लेकिन उम्मीद कायम है कि जल्द ही हम उनमें भी पदक जीतने लगेंगे। हमारे खिलाड़ी इसके लिए दिन-रात मेहनत कर रहे हैं।

हर्षित, टिप्पणीकार

अनुलोम-विलोम

खेल पुरस्कार

उपेक्षा के कारण प्राथमिकता में नहीं खेल

केंद्र सरकार ने देश के विभिन्न खेलों के प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को पुरस्कार देकर बहुत ही अच्छा काम किया है। पुरस्कार पाने वाले खिलाड़ियों में मनु भाकर, डी गुकेश सहित चार खिलाड़ियों को खेल रत्न और अन्य 32 खिलाड़ियों को अर्जुन पुरस्कार दिए जाने का एलान किया गया है। जब भी कोई इंसान किसी भी क्षेत्र में उपलब्धि हासिल करे, तो उसकी हौसला अफजाई जरूर की जानी चाहिए। खिलाड़ियों का प्रोत्साहन जरूरी है, क्योंकि इससे अन्य युवाओं की रुचि खेलों में बढ़ती है। ओलंपिक और अन्य खेलों में हमारे देश के खिलाड़ी मेहनत करके मेडल जीतते हैं, लेकिन कई बार उनकी आर्थिक स्थिति बदहाल हो जाती है, क्योंकि सरकारों की तरफ से उनका ख्याल नहीं रखा जाता। इसलिए जरूरी है कि केंद्र और राज्य की सरकारें मिलकर सभी खेलों के खिलाड़ियों की तरफ ध्यान दें और देश के विभिन्न स्थानों से ऐसे खिलाड़ियों को चुनने का अभियान चलाएं, जो अलग-अलग खेलों में रुचि रखते हैं। तभी हम ओलंपिक जैसे आयोजनों में अपने देश का नाम अधिक से अधिक रोशन कर सकेंगे।

देखा जाए, तो देश में न प्रतिभाओं का अभाव है, न दक्षता की कमी है, कमी है तो बस सरकारी तंत्र की सक्रियता की। हमारा तंत्र इतना सुस्त है कि कई खिलाड़ी उचित मंच के अभाव में बदहाली का जीवन जीने को मजबूर होते हैं। ऐसे में, सरकारों का जगना तो जरूरी है ही, खेलों पर काम कर रही गैर-सरकारी संस्थाओं का गंभीर होना भी आवश्यक है। ऐसा नहीं है कि संस्थाएं बिल्कुल काम नहीं कर रहीं। कुछ इस दिशा में सक्रिय हैं, पर वे पैसे बहुत लेती हैं, जिस कारण गरीब घरों के बच्चों को आगे बढ़ने का बहुत मौका नहीं मिल पाता है।

देश में खेल-संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए सरकारों को प्राइमरी स्कूलों से लेकर कॉलेजों तक के विद्यार्थियों का खेलों में हिस्सेदारी अनिवार्य कर देना चाहिए और खेलों को पाठ्यक्रम में भी शामिल करना चाहिए। सरकारों की एक आदत बन चुकी है कि जब कोई खिलाड़ी ओलंपिक या अन्य किसी बड़े मुकाबले में अच्छा प्रदर्शन करता है, तो वे उस पर इनामों की बौछार कर देती हैं, लेकिन बाकी खिलाड़ियों को बिसरा देती हैं। अगर सरकारें सभी खेलों के प्रति समान रूप से गंभीर बनें और खिलाड़ियों को समान मौका उपलब्ध कराएं, तो हमारा देश हर खेल में नंबर वन बन सकता है। क्या इसे विडंबना नहीं कहेंगे कि राष्ट्रीय खेल हॉकी होने के बावजूद इस खेल के खिलाड़ियों को लोग नहीं जानते, जबकि क्रिकेटरों पर न्योछावर होते रहते हैं?

राजेश कुमार चौहान, टिप्पणीकार

प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

जब आपका मानसिक स्वास्थ्य सोशल मीडिया से प्रभावित होने लगे, तो समझ लें कि यही इससे दूर होने का समय है। - जर्मनी केंट

एसबीआई रिसर्च की ताजा रिपोर्ट देश के शहरों और गांवों में प्रति व्यक्ति मासिक उपभोग व्यय के बीच अंतर में उल्लेखनीय कमी के साथ लोगों की बदलती प्राथमिकताओं को भी रेखांकित करती है। समावेशी विकास के सपने को पूरा करने के लिए जरूरी है कि यह प्रगति हर वर्ग और क्षेत्र तक समान रूप से पहुंचे।

गांव, शहर और सपना

भारत के विकास पथ पर ग्रामीण व शहरी गरीबी में फर्क हमेशा से ही चर्चा का विषय रहा है, लेकिन भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) रिसर्च द्वारा हाल ही में जारी की गई रिपोर्ट के निष्कर्ष इस पर एक नई रोशनी डालते हैं। रिपोर्ट यह तो कहती ही है कि वित्त वर्ष 2024 के दौरान गरीबी का अनुपात पहली बार पांच फीसदी के नीचे आ गया है, साथ ही यह भी बताती है कि शहरों व गांवों में प्रति व्यक्ति मासिक उपभोग व्यय (एमपीसीई) के बीच अंतर में उल्लेखनीय कमी आई है। दरअसल, 2009-10 से अगर शहरी व ग्रामीण मासिक उपभोग व्यय में अंतर सतत रूप से घटा है, तो इसकी बड़ी वजह प्रत्यक्ष नकदी हस्तांतरण (डीबीटी), ग्रामीण बुनियादी ढांचे में निवेश और किसानों की आय बढ़ाने जैसी सरकारी पहलें हैं। देश के ग्रामीण इलाकों में आय बढ़ने से स्वाभाविक ही खपत भी बढ़ रही है, लेकिन सरकार द्वारा संचालित बैंक की रिपोर्ट यह खुलासा भी करती है कि भारतीय परिवार अब खान-पान के बजाय साफ-सफाई और सौंदर्य प्रसाधनों पर ज्यादा खर्च कर रहे हैं। जाहिर है कि इससे आर्थिक विकास व जीवन-शैली में आए बदलावों की वजह से लोगों की बदलती प्राथमिकताओं की ही झलक मिलती है। पिछले बारह वर्षों के दौरान गैर-खाद्य पदार्थों पर खर्च शहरों की अपेक्षा गांवों में अधिक बढ़ा है, तो इसकी बड़ी वजह स्वच्छ भारत अभियान की कामयाबी और स्वच्छता को लेकर बढ़ती जागरूकता के अलावा जीएसटी की दरों के युक्तिकरण के कारण घरेलू व्यय में करों व उपकर की हिस्सेदारी में कमी आना भी है। ये बदलाव निस्संदेह देश के बदलते सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य को भी उजागर करते हैं और इस संदर्भ में एसबीआई की रिपोर्ट भी देश की प्रगति के संकेतक के रूप में देखी जा सकती है, लेकिन एक महत्वपूर्ण सवाल यह भी है कि क्या यह प्रगति हर वर्ग और हर क्षेत्र तक समान रूप से पहुंच रही है। रिपोर्ट में दिए गए आंकड़े उत्साहजनक हैं। अध्ययन में जिस गरीबी रेखा को आधार बनाया गया है, उस पर उठ रहे तकनीकी सवालों पर ध्यान न भी दें, लेकिन यह तो नहीं भूला जा सकता कि गरीबी केवल आर्थिक आय तक सीमित नहीं है। शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं और स्वच्छता तक पहुंच भी गरीबी उन्मूलन के प्रमुख घटक हैं और इन क्षेत्रों में देश के जिलों में जो अंतराल दिखता है, उसे भी दूर करने की कोशिश होनी चाहिए। अलबत्ता रिपोर्ट का महत्व इसमें है कि यह आर्थिक व सामाजिक बदलावों के साथ लोगों की प्रवृत्तियों में आ रहे बदलावों को भी दर्शाती है, जो समावेशी विकास की राह में एक महत्वपूर्ण संकेत है।

इजाजत लेने में क्या परेशानी है

नए नियमों का विरोध करने वालों को यह समझने की जरूरत है कि 18 साल से कम उम्र के बच्चों को मोबाइल के इस्तेमाल की इजाजत है, पर वे अपने नाम से सिम कार्ड नहीं ले सकते। प्रस्तावित नियमों को सफल बनाने के लिए अभिभावकों के साथ समाज को भी जागरूक होने की जरूरत है।

विज्ञान एक अच्छा सेवक, लेकिन खराब स्वामी है। बचपन में निबंधों में पढ़ी गई यह बात आधुनिक सोशल मीडिया पर पूरी तरह से खरी उतरती है। पिछले साल 'ब्रेन रॉट' यानी मस्तिष्क सड़ांध को 'ऑक्सफोर्ड वर्ड ऑफ द ईयर' घोषित किया गया था। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस ने इसकी परिभाषा में कहा था कि ऑनलाइन कंटेंट, खासकर घटिया विषय-वस्तु की ज्यादा खपत से होने वाले मानसिक और बौद्धिक ह्रास को ब्रेन रॉट कहते हैं। गूढ़ व गंभीर मुद्दों पर घटती समझ और उसे हल्का करके देखने की प्रवृत्ति से बढ़ रहे मानसिक और बौद्धिक क्षमता के ह्रास को बच्चों के ब्रेन रॉट के तौर पर देखा जा सकता है। मनोविज्ञानिक जोनाथन हैड्ट की किताब *द एन्क्सस जेनरेशन* के अनुसार, स्मार्टफोन के बढ़ते इस्तेमाल से 2010 से 2020 के दशक में अमेरिकी स्नातक छात्रों में अवसाद, चिंता और आत्महत्या की दर बहुत तेजी से बढ़ी है। उनके मुताबिक, बच्चों को सोशल मीडिया के दुष्प्रभाव से बचाने के लिए सोशल पुलिसिंग की जरूरत स्पष्ट है।

विराग गुप्ता
सुप्रीम कोर्ट के वकील

रिसर्च फर्म 'रेडसियर' के सर्वे के मुताबिक, भारत में यूजर्स रोजाना 7.3 घंटे स्मार्टफोन और सोशल मीडिया पर समय बिताते हैं, जबकि अमेरिका में यूजर्स का औसत स्क्रीन टाइम 7.1 घंटे और चीन में 5.3 घंटे है। सोशल मीडिया बच्चों का बचपन और नींद छीन कर उन्हें सुस्त, चिड़चिड़ा और आक्रामक बना रहा है। किशोरों और युवाओं का बड़ा वर्ग सोशल मीडिया पर रोजाना स्तरहीन कंटेंट देखता है, जिससे उनका शैक्षणिक स्तर खराब हो रहा है। रील बनाने के चक्कर में जान गंवाने के साथ गेमिंग में पैसे हारने पर बच्चे आत्महत्या कर रहे हैं। यही नहीं, अश्लीलता के साथ साइबर ठगी भी बढ़ रही है।

एम्स के डॉक्टरों के मुताबिक, बच्चों द्वारा सोशल मीडिया के इस्तेमाल पर सख्ती जरूरी है। 'लोकलसर्कल' के सर्वे के मुताबिक, 368 शहरों में 61 फीसदी से ज्यादा अभिभावकों ने बच्चों के सोशल मीडिया इस्तेमाल को लेकर कानून बनाने की मांग की है। भारत के अलावा, दुनिया के

अधिकांश देशों में बच्चों के सोशल मीडिया इस्तेमाल पर कानून बन रहे हैं। ऑस्ट्रेलियाई सांख्यिकी ब्यूरो की रिपोर्ट के अनुसार, सोशल मीडिया की वजह से युवा अपराध में छह फीसदी की बढ़ोतरी हुई। ऑस्ट्रेलिया की संसद में पारित नए कानून के अनुसार, 16 साल से कम उम्र के बच्चों को शामिल करने वाली सोशल मीडिया कंपनियों को लगभग पांच करोड़ ऑस्ट्रेलियाई डॉलर यानी करीब 275 करोड़ रुपये का जुर्माना देना पड़ेगा। पिछले कुछ वर्षों में यूरोप में नार्वे, जर्मनी, बेल्जियम, इटली और फ्रांस जैसे कई देशों में इस बारे में सख्त कानून बने हैं।

भारत में बच्चों के लिए सोशल मीडिया को नियंत्रित करने से जुड़े ड्राफ्ट नियमों के तीन बड़े पहलू हैं। पहला, संविधान के अनुसार बच्चों के जीवन को सुरक्षित रखने के साथ उनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करना सरकार और संसद की सांविधानिक जिम्मेदारी है। दूसरा, डाटा सुरक्षा और साइबर स्पेस में बच्चों की सुरक्षा से जुड़े विषयों पर यूपीए सरकार के समय में ही शुरुआत हो गई थी। दिल्ली हाईकोर्ट ने केएन गोविंदाचार्य की याचिका पर 11 साल पहले साल 2013 में अनेक आदेश पारित किए थे। तीसरा, साल 2017 में निजता के अधिकार मामले में सुप्रीम कोर्ट के नौ जजों ने सर्वसम्मति से ऐतिहासिक फैसला दिया था। वर्ष 2023 में संसद से पारित डाटा सुरक्षा कानून के अनुसार, 18 साल से कम उम्र के बच्चों के सोशल मीडिया पर प्रतिबंध से जुड़े प्रावधान पहले से हैं। उस कानून के अनुसार, अभिभावक की सहमति के बगैर बच्चों के व्यक्तिगत डाटा के इस्तेमाल, प्रसंस्करण और बिक्री पर तत्काल रोक लगाने के साथ टारगेटेड विज्ञापन पर प्रतिबंध होना चाहिए। नियमों का उल्लंघन करने वाली कंपनियों पर कानून के अनुसार 250 करोड़ रुपये के जुर्माने का प्रावधान होना चाहिए।

आईटी मंत्री अश्विनी वैष्णव के अनुसार, परामर्श के बाद अंतिम नियमों को मंजूरी के लिए मानसून सत्र में संसद में रखा जाएगा। शिकायतों के पंजीकरण और निपटारे के लिए डिजिटल कार्यालय स्थापित किए जा रहे हैं। उसके बाद टेक कंपनियों को अपनी प्रणाली सुधारने और कानून का पालन करने के लिए दो साल का समय मिलेगा। अब ज्यादा विलंब किए बगैर डाटा सुरक्षा कानून को लागू करने की जरूरत है। नए नियमों के अनुसार, बच्चों के साथ सभी भारतीयों का डाटा सुरक्षित रहना चाहिए। डाटा के स्थानीयकरण से अर्थव्यवस्था के सशक्तीकरण के साथ साइबर अपराधों में भी कमी आएगी।

एक अनुमान के मुताबिक, भारत में 18 साल से कम उम्र के 15 करोड़ बच्चे सोशल मीडिया का इस्तेमाल करते हैं। संविधान के अनुसार, बच्चों के शारीरिक, मानसिक और शैक्षणिक विकास को दुरुस्त रखने के लिए सरकार को अपनी जिम्मेदारी पूरी करनी ही चाहिए। जैसे वाहन चलाने के लिए ड्राइविंग लाइसेंस, सीट बेल्ट, हेलमेट और इंश्योरेंस समेत कई नियमों के पालन की जरूरत होती है। इसीलिए जैसे 18 साल से कम उम्र के बच्चों को सिगरेट, शराब, ड्रग्स, गुटखा और सेक्स आदि से दूर रखने के लिए सख्त कानून बनाए गए हैं, उसी तरह सोशल मीडिया में बच्चों को सुरक्षित रखने के लिए सख्त नियम होने ही चाहिए। इन नियमों के लागू होने के बाद भी ईमेल और गूगल सर्च के माध्यम से बच्चे अपनी शिक्षा और व्यक्तित्व विकास से जुड़े प्रोजेक्ट्स बखूबी करते रहेंगे।

जो लोग इन प्रस्तावित नियमों का विरोध कर रहे हैं, उन्हें यह समझने की जरूरत है कि 18 साल की उम्र के पहले नाबालिग बच्चे कोई भी कानूनी एग्रीमेंट नहीं कर सकते। इसीलिए बच्चों को मोबाइल के इस्तेमाल की इजाजत है, पर वे अपने नाम से सिम कार्ड नहीं ले सकते। नए नियम लागू होने के बाद फर्जी तरीके से पंजीकरण और वीपीएन के इस्तेमाल से सोशल मीडिया से जुड़ने के तरीके ईजाद हो जाएंगे। सिर्फ कानून के डंडे से ही बच्चों को सोशल मीडिया से दूर रखना मुश्किल है। इसलिए प्रस्तावित नियमों को सफल बनाने के लिए अभिभावकों के साथ समाज को भी जागरूक होने की जरूरत है। दिल्ली में चुनावों की घोषणा के पहले सरकारी योजनाओं के लिए निजी तौर पर डाटा इकट्ठा करने पर जांच और पुलिस कार्रवाई हो रही है। नए नियमों की आड़ में बच्चों की उम्र की जांच के नाम पर विदेशी टेक कंपनियां गैर जरूरी डाटा और कागजात इकट्ठा नहीं कर पाएं, इसके लिए सरकार को प्रभावी नियामक व्यवस्था भी बनानी होगी।

edit@amarujala.com

जीवन धारा

स्टीव जॉब्स

मैं हर सुबह शीशे में देखकर खुद से पूछता हूं-यह मेरे जीवन का आखिरी दिन होता, तो क्या मैं वही करता, जो आज कर रहा हूं? जवाब नकारात्म[क] आता है, तो मैं समझ जाता हूं कि मुझे कुछ बदलने की जरूरत है।

समय सीमित है, इसे औरों के लिए बर्बाद न करें

जब मैं 17 साल का था, तो एक उद्धरण पढ़ा था- 'यदि आप हर दिन ऐसे जिएं जैसे कि यह आपका आखिरी दिन है, तो आप निश्चित रूप से सही होंगे।' तब से मैं हर सुबह शीशे में देखकर खुद से पूछता हूं-अगर आज मेरे जीवन का आखिरी दिन होता, तो क्या मैं वही करना चाहता, जो मैं आज करने जा रहा हूं? और जब भी लगातार कई दिनों तक जवाब नकारात्मक आता है, तो मैं समझ जाता हूं कि मुझे कुछ बदलने की जरूरत है। यह याद रखना कि मैं जल्द ही मर जाऊंगा, मेरे जीवन में बड़े फैसले लेने में मदद करने वाला सबसे महत्वपूर्ण साधन है। क्योंकि लगभग हर चीज जैसे-सभी बाहरी अपेक्षाएं, सारा अभिमान, शर्मिंदगी या असफलता का डर आदि मौत के सामने गायब हो जाती हैं और केवल वही बचता है, जो वास्तव में महत्वपूर्ण है। यह याद रखना कि आप मरने वाले हैं, इस सोच से बचने का सबसे अच्छा तरीका यही है कि यह याद रखें कि आपके पास खोने के लिए कुछ है। करीब एक साल पहले मुझे कैंसर का पता चला था। सुबह मेरी जांच हुई। उसमें साफ तौर पर मेरे अग्नाशय पर ट्यूमर दिखा। डॉक्टर ने मुझे बताया कि यह एक प्रकार का कैंसर है जिसका इलाज संभव नहीं है। मुझे लग गया कि मैं छह महीने से ज्यादा नहीं जी पाऊंगा। डॉक्टर ने मुझे घर जाकर अपने जरूरी काम-काज निपटाने की सलाह दी। डॉक्टरों के अनुसार, मुझे 'मरने के लिए तैयार रहना' है।

इसका मतलब यह था कि अपने बच्चों को वह सब कुछ बताने की कोशिश करें, जो आप सोचते हैं। यह भी सुनिश्चित करना कि सब कुछ ठीक हो, ताकि परिवार के लिए यह जितना संभव हो सके, उतना आसान हो। शाम में मेरी बायोप्सी हुई। यह अग्नाशय कैंसर का एक बहुत ही दुर्लभ रूप निकला, जो सर्जरी से ठीक हो सकता है। मैंने सर्जरी करवाई, और शुक्र है कि अब मैं ठीक हूं। यह मौत का सामना करने के लिए मेरा सबसे करीबी समय था। और मुझे उम्मीद है कि यह अगले कुछ दशकों में मेरे लिए सबसे करीबी समय होगा, क्योंकि मैं इस स्थिति से गुजर रहा हूं। मैं अब आपसे यह बात थोड़ी ज्यादा निश्चितता के साथ कह सकता हूं, जबकि मृत्यु एक उपयोगी, लेकिन विशुद्ध बौद्धिक अवधारणा थी। कोई भी मरना नहीं चाहता। यहां तक कि जो लोग स्वर्ग जाना चाहते हैं, वे भी वहां जाने के लिए मरना नहीं चाहते। फिर भी, मृत्यु वह मंजिल है, जहां हर किसी को पहुंचना है। कोई भी इससे बच नहीं सका। और ऐसा ही होना भी चाहिए, क्योंकि मृत्यु संभवतः जीवन का सबसे बेहतरीन आविष्कार है। यह जीवन का परिवर्तन एजेंट है, यह पुराने को हटा कर नए के लिए रास्ता बनाता है। अभी आप ही नए हैं। लेकिन अब से कुछ ही समय बाद आप धीरे-धीरे पुराने होते जाएंगे और दूर हो जाएंगे। आपका समय सीमित है। इसलिए इसे किसी और की जिंदगी जीने में बर्बाद न करें। हठधर्मिता में न फंसें, कि दूसरे लोगों की सोच के परिणामों के साथ जीना है। दूसरों की राय के शोर में अपनी अंतरात्मा की आवाज को डूबने न दें। और सबसे महत्वपूर्ण बात, अपने दिल और अंतर्ज्ञान का अनुसरण करने का साहस रखें।

-साल 2005 में स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी के दीक्षांत समारोह में दिए गए भाषण के अं[श]

वर्तमान में रहें

समय मुफ्त है, लेकिन यह अमूल्य है। आप इसे खरीद नहीं सकते, लेकिन आप इसका उपयोग कर सकते हैं। आप इसे अपने पास नहीं रख सकते, लेकिन आप इसे खर्च कर सकते हैं। एक बार जब आप इसे खो देते हैं, तो आप इसे कभी वापस नहीं पा सकते। वर्तमान समय आने वाले कल से अधिक फायदेमंद है।

सूत्र

दूसरा पहलू

इन्फ्लूएंजा ए सबटाइप एच5एन1 वायरस 2025 में एक गंभीर समस्या बनने के कगार पर है, जिसे बर्ड फ्लू भी कहते हैं।

अब भी खतरा बना हुआ है बर्ड फ्लू

कोविड के बाद अधिकांश लोग अगली बड़ी संक्रामक बीमारी के उभरने को लेकर भयभीत हैं। तीन संक्रामक रोगों को लेकर सार्वजनिक स्वास्थ्य अधिकारी सबसे अधिक चिंतित हैं-मलेरिया (एक परजीवी), एचआईवी (एक वायरस) और तपेदिक (एक जीवाणु)। इनके कारण हर साल करीब बीस लाख लोगों की मौत होती है। प्राथमिकता वाले रोगाणुओं की निगरानी सूची है, जो आमतौर पर एंटीबायोटिक्स और एंटीवायरल के प्रति प्रतिरोधी हो गए हैं। वैज्ञानिकों को लगातार अगली संभावित समस्या का पता लगाते रहना चाहिए। हालांकि यह किसी भी प्रकार के रोगाणु में आ सकता है, लेकिन कुछ समूह दूसरों की तुलना में तेजी से प्रकोप पैदा करते हैं, जिसमें इन्फ्लूएंजा वायरस भी शामिल है।

कोनोर मीहान

ब्रिटेन ने 2025 में बर्ड फ्लू के खतरों से बचने के लिए एच5 वैक्सीन की 50 लाख खुराकें खरीदी हैं। बर्ड फ्लू पशुओं के स्वास्थ्य को अधिक प्रभावित करेगा।

इन्फ्लूएंजा वायरस 2025 में एक गंभीर समस्या बनने के कगार पर है। इन्फ्लूएंजा ए सबटाइप एच5एन1 है, जिसे बोलचाल की भाषा में बर्ड फ्लू भी कहते हैं। यह वायरस जंगली व घरेलू पक्षियों में व्यापक रूप से फैलता है। बर्ड फ्लू इन्सानों को भी संक्रमित कर रहा है और इस वर्ष अमेरिका में 61 मामले सामने आ चुके हैं, जिनमें अधिकांश लोग संक्रमित मवेशियों के संपर्क में आने वाले मजदूर और कच्चा दूध पीने वाले हैं। अमेरिका में पिछले दो वर्ष में केवल दो ही मामले थे, लेकिन अचानक से इसमें वृद्धि होना और मानव संक्रमण में 30 प्रतिशत की मृत्यु दर के साथ यह सार्वजनिक स्वास्थ्य चिंता की प्राथमिकता में आ गया है। संतोष की बात है कि एच5एन1 बर्ड फ्लू एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में नहीं फैलता है, इससे मनुष्यों में महामारी फैलने की संभावना कम हो जाती है। लेकिन एक हालिया अध्ययन का यह कहना कि फ्लू जीनोम में एक भी उत्परिवर्तन एच5एन1 को इन्सान से इन्सान में फैलने में सक्षम बना सकते हैं, जिससे महामारी भी शुरू हो सकती है। इसलिए सरकारों को शीघ्र ही इस पर काम करना चाहिए। दुनिया भर में रोग नियंत्रण केंद्रों ने बीमारियों से होने वाली महामारी के लिए योजनाएं तैयार की हैं। ब्रिटेन ने 2025 में बर्ड फ्लू के खतरों से बचने के लिए एच5 वैक्सीन की 50 लाख खुराकें खरीदी हैं। इन्सानों में फैले बगैर भी बर्ड फ्लू 2025 में पशुओं के स्वास्थ्य को अधिक प्रभावित करेगा। इससे न केवल पशु कल्याण पर प्रभाव पड़ेगा, बल्कि खाद्य आपूर्ति बाधित होने और आर्थिक प्रभाव पड़ने की आशंका है। हमें मनुष्यों में जारी धीमी महामारी के बारे में नहीं भूलना चाहिए, जैसे मलेरिया, एचआईवी, तपेदिक और अन्य रोगजनक, इनसे निपटना सबसे महत्वपूर्ण है। *-द कन्वर्सेशन से*

बर्ड फ्लू इन्सानों को भी संक्रमित कर रहा है और इस वर्ष अमेरिका में 61 मामले सामने आ चुके हैं, जिनमें अधिकांश लोग संक्रमित मवेशियों के संपर्क में रहने वाले हैं।

आंकड़े

डिजिटल लेनदेन

भारत ने पिछले कुछ वर्षों में डिजिटल लेनदेन में तेज विकास किया है। दिसंबर 2024 तक यूपीआई लेनदेन लगातार 20 लाख करोड़ रुपये से ऊपर रहा।

दिसंबर, 2024	23.25
नवंबर, 2024	21.55
अक्तूबर, 2024	23.50
सितंबर, 2024	20.67
अगस्त, 2024	20.61

आंकड़े यूपीआई द्वारा लेनदेन के, 20 लाख करोड़ रुपये से ऊपर के | स्रोत : NPCI

एक वृद्ध मलिन व फटे कपड़े पहने हुए था। शिष्यों ने वृद्ध के कपड़ों को देखकर खाने के समय उन्हें पास नहीं बैठाया। मगर रज्जब जी ने ऐसा किया कि सब देखते रहे।

संत रज्जब की महानता

संत रज्जब जी का पूरा नाम रज्जब अली खां था। उनका जन्म सांगानेर (राजस्थान) में हुआ था। जब विवाह करने के लिए वह अपनी बारात के साथ जा रहे थे, तभी प्रसिद्ध संत महात्मा दादू जी ने वर को घोड़े पर चढ़ा देखकर कहा-*रज्जब तैं गजब कियो, सिर पर बांध्यो मोर। आया था हरि भजन को, कियो नरक में ठौर।।*

यह सुनकर रज्जब जी घोड़े से उतर पड़े और नमस्कार कर दादू जी के पास बैठ गए। जब बारातियों ने कहा कि फेरों का समय निकट आ रहा है, तो रज्जब जी ने अपना सेहरा उतारकर छोटे भाई को पहना दिया और बोले- जाओ, तुम फेरे ले लो, मैं अब विवाह नहीं करूंगा। और रज्जब जी दादू जी के शिष्य बनकर रहने लगे। कुछ वर्षों के बाद रज्जब जी ने ग्रंथ की रचना की और प्राणियों का बड़ा उपकार किया।

एक दिन रज्जब जी अपने शिष्यों के साथ किसी गृहस्थ के यहां भोजन करने जा रहे थे। मार्ग में उन्हें एक वृद्ध मिला, जो मलिन व फटे कपड़े पहने हुए था।

अंतर्यात्रा
संकलित

वृद्ध ने कहा- महाराज! मैं भूखा हूं। रज्जब जी बोले चलिए, हम भी भोजन करने जा रहे हैं। शिष्यों ने वृद्ध के कपड़ों को देखकर खाने के समय उन्हें पास नहीं बैठाया। लेकिन रज्जब जी ने हाथ पकड़कर उसे अपने पास बिठा लिया। वहां मौजूद साधुओं को यह बात बुरी लगी, तो उन्होंने कहा, क्या इसको अब अपनी गद्दी देनी है? रज्जब जी ने सोचा कि अभिमानी लोग गद्दी के अधिकारी नहीं हैं और उन्होंने अपनी गद्दी उस वृद्ध व्यक्ति को सौंप दी।

अमर उजाला

पुराने पन्नों से — 24 अप्रैल, 1963

जॉर्डन में शीघ्र ही राजतंत्र के स्थान पर गणतंत्र की स्थापन[ा]

जोर्डन में शीघ्र ही राजत[ंत्र के] स्थान पर गणतन्त्र की स्था[पना]
शाह हुसैन अम्मान से जाने की तैयारी

जॉर्डन में नए अरब संघ एकता के लिए जो प्रदर्शन हुए, उसका एक लाभ यह हुआ कि शाह हुसैन को कहना पड़ा कि वह देश में कार्यकारी सरकार का गठन करेंगे। इस्राइल नहीं चाहता कि जॉर्डन में शाही शासन के स्थान पर गणतंत्र गठित हो।

श्रीलंका में भारतीय शहीदों की याद में

श्रीलंका में आईपीकेएफ द्वारा की गई कार्रवाई हमेशा शांति और पड़ोसियों के लिए पारस्परिक सम्मान के हमारे दर्शन का मानक बनी रहेगी।

कर्नल संजय पांडे | मुद्दा

वर्ष 1987 के भारत-श्रीलंका समझौते के तहत भारतीय शांति सेना (आईपीकेएफ) की श्रीलंका में तैनाती भारत का पहला स्वतंत्र विदेशी राजनीतिक-सैन्य उद्यम था। यह भारत के बढ़ते क्षेत्रीय प्रभुत्व का परिचायक तो था ही, क्षेत्रीय अलगाववाद को दो देशों की आपसी सहमति से खत्म करने, दो पड़ोसी देशों का क्षेत्रीय और वैश्विक शांति बनाए रखने के दायित्वों का अद्वितीय अनुसरण एवं दक्षिण एशिया में बिना किसी अंतरराष्ट्रीय संस्था को शामिल किए शांति व्यवस्था बहाल करने की अद्भुत मिसाल रहा है।

इस पथप्रदर्शक राजनीतिक-सैन्य पहल को चाहे क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उतनी ख्याति नहीं मिली, पर यह भारतीय सेना के पराक्रम, अदम्य साहस, अदभुत रण कौशल, उत्कृष्ट बलिदान और उच्च सैन्य नेतृत्व की खूबियों के लिए भारतीय सैन्य इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है। आईपीकेएफ ऑपरेशन जहां एक ओर सैन्य प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का हिस्सा बन

गया, वहीं भारतीय सैनिकों का बलिदान बटालियनों, रेजिमेंटों और सेना के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

भारतीय सेना की एक प्रतिष्ठित एवं जांबाज बटालियन 11, गढ़वाल राइफल्स को भी भारतीय शांति सेना का हिस्सा बनकर 1987 में श्रीलंका के उत्तर-पूर्व में सबसे दुर्गम व उग्रवाद प्रभावित क्षेत्र मुल्लईतिवु में काम करने का मौका मिला। बटालियन त्रिंकोमाली में उतरकर मुल्लईतिवु तक पैदल मार्च करके तीन-चार दिनों में पहुंची थी। इस लंबे मार्च के दौरान ही लिट्टे ने बटालियन के साथ सुरक्षा के लिए चल रहे दो बीएमपी को बारूदी सुरंग से उड़ा दिया था। 11, गढ़वाल राइफल्स इस इलाके में पहुंचने वाली सबसे पहली बटालियन थी। बटालियन ने अपने अदम्य साहस व रण कौशल का परिचय देते हुए लिट्टे के शिविरों को खोज-खोजकर नष्ट किया, जो जाफना पर कब्जा होने के बाद घने जंगल के बीच बना नया जाफना के रूप में जाना जाता था। अपने 15 महीने के कार्यकाल में बटालियन ने तत्परता से काम करते हुए लिट्टे की कमर तोड़ दी थी। हालांकि बटालियन को भी काफी नुकसान उठाना पड़ा और लिट्टे जैसे प्रशिक्षित कैडर के साथ लड़ने में काफी कुछ सीखने को भी मिला।

बटालियन अपना हाई एल्टीट्यूड का कार्यकाल पूरा करके नए मिलिट्री स्टेशन पहुंची ही थी कि उसे चेन्नई में अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा ड्यूटी के लिए जाने का हुक्म मिला। शुरुआती नुकसान के बावजूद बटालियन ने अपने पराक्रम का अभूतपूर्व परिचय देते हुए अपरिचित भू-भाग, अपरिचित वातावरण व भाषा के बावजूद, जंगलों में लिट्टे के महिला शिविर को बर्बाद किया। आईपीकेएफ की वापसी के बाद लिट्टे अपने को इन्हीं कैंपों को पुनर्जीवित कर श्रीलंकाई सेना से लड़ रही थी। उन क्षेत्रों में लिट्टे के 14 कैंपों की पहचान की गई है और वहां पर बारूदी सुरंग हटाने का कार्य अब भी चल रहा है।

आईपीकेएफ के ऑपरेशन के दौरान 11, गढ़वाल राइफल्स बटालियन के काफी जवानों ने अपने प्राणों की आहुति दी थी। उन दिनों मृत सैनिकों को वापस मुख्य भूमि में भेजने का प्रावधान नहीं था। बटालियन के सभी मृतकों की अंत्येष्टि श्रीलंका में ही की गई थी। उन शहीदों और बटालियन के अविस्मरणीय समर्पण एवं कौशल की यादों को समेटे बटालियन के पांच अधिक[ारी] अपनी धर्म पत्नियों के साथ, अपने छूटे हुए साथियों [को] श्रद्धांजलि देने के लिए नवंबर, 2024 में श्रील[ंका] गए थे।

छत्तीस साल बाद 11, गढ़वाल राइफल्स के [...] अधिकारी, जिन्होंने आईपीकेएफ असाइनमेंट के दौ[रान] अपने साथियों को खोया था, इस यात्रा में अपने दिवं[गत] साथियों के अंत्येष्टि स्थल पर पुष्प अर्पण कर प्रा[र्थना] सभा भी की। ये अधिकारी श्रीलंकाई सेना की मदद [से] वानी जंगल के उन स्थानों पर भी गए, जहां उन्होंने लि[ट्टे] के शिविरों पर हमला किया था। इस यात्रा के दौ[रान] बटालियन के अधिकारियों ने पलटन के युवा अधिक[ारी] 2/लेफ्टिनेंट मोहन जैकब की कब्र को भी श्रीलंकाई [सेना] की मदद से ढूंढ़ निकाला और वहां भी प्रार्थना की। [इसी] तरह अन्य गढ़वाली वीरों द्वारा दी गई आहुति के [...] स्थलों पर शोक सभा कर उन्हें श्रद्धांजलि दी गई।

यात्रा के अंतिम पड़ाव (कोलंबो) पर मैंने आईपीकेएफ स्मारक पर पुष्पांजलि अर्पित की। भार[तीय] सेना के सभी शहीद जवानों के प्रति श्रद्धांजलि अ[र्पित] कर बटालियन के अधिकारियों ने अपने खोए [...] सैनिकों का न सिर्फ सम्मान बढ़ाया है, बल्कि उन[के] बलिदान और वीरता की गाथाओं को पुनर्जीवित [कर] दिया है।

श्रीलंका में आईपीकेएफ द्वारा की गई कार्रवाई हमे[शा] शांति और पड़ोसियों के लिए पारस्परिक सम्मान के ह[मारे] आंतरिक दर्शन का मानक बनी रहेगी। भारतीय सै[न्य] इतिहास का आईपीकेएफ पर एक अलग खंड प्रका[शित] किया जाना चाहिए, जिसमें उनके कार्यों पर प्रकाश डा[ला] जाए। उन शहीद सैनिकों को श्रद्धांजलि देने के लिए [एक] उपयुक्त तारीख भी निर्धारित की जानी चाहिए।

जिंदगी पर भारी सड़क हादसे

भारत में सड़क हादसों में होने वाली मौतों की संख्या लगातार बढ़ रही है। पिछले एक दशक में इन हादसों में 15 लाख से अधिक लोगों ने अपनी जान गंवाई है। सड़क हादसों में ज्यादातर ऐसे लोगों की जान जाती है, जिन पर परिवार आर्थिक रूप से निर्भर होता है। इससे न सिर्फ परिवार आर्थिक मुश्किलों में फंस जाता है, बल्कि एक उत्पादक व्यक्ति के न रहने से देश और अर्थव्यवस्था को भी इसका नुकसान उठाना पड़ता है। एक जनवरी से राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा माह की शुरुआत हो गई। इस अवधि में केंद्र और राज्यों के स्तर पर लोगों को सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूक करने के लिए कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। हालांकि, आंकड़े बताते हैं कि इस तरह के रस्मी कार्यक्रम हालात में सुधार लाने में नाकाम साबित हो रहे हैं। जरूरत है ठोस कदमों और जवाबदेही तय करने की। देश में एक भी हत्या के मामले में जवाबदेही तय की जाती है लेकिन सड़क दुर्घटना में जान जाने पर शायद ही किसी से स्पष्टीकरण मांगा जाता है। सड़क दुर्घटना में बढ़ते मौत के आंकड़ों की वजह और इनकी संख्या कम करने के उपायों की पड़ताल ही आज का मुद्दा है...

जवाबदेही तय करने के लिए उठाने होंगे कदम

डा. रोहित बलूजा
प्रेसीडेंट, इंस्टीट्यूट आफ ट्रैफिक एजूकेशन

वर्तमान समय में सड़क दुर्घटना में होने वाली मौतों के लिए किसी को जवाबदेह ठहराना संभव नहीं है। इसके लिए यातायात प्रबंधन शब्द को परिभाषित करने की जरूरत है। तभी सब की भूमिका और जिम्मेदारी की पहचान की जा सकेगी।

यातायात प्रबंधन वह विज्ञान है जो सड़क की क्षमता और मांग के आधार पर यातायात प्रवाह प्रणाली का संचालन करता है। इसके लिए यह उपयोग और दक्षता को बढ़ाने के लिए कारगर रणनीति का उपयोग करता है। सड़क सुरक्षा एक अलग विषय नहीं है, बल्कि एक कुशल और वैज्ञानिक यातायात प्रबंधन प्रणाली का अहम हिस्सा है। एक सुव्यवस्थित यातायात प्रबंधन प्रणाली न केवल सड़क सुरक्षा में योगदान देती है, बल्कि लोगों और सामानों के लिए कनेक्टिविटी और सुरक्षित गतिशीलता में सुधार की दिशा में राष्ट्रीय विकास प्रयासों का समर्थन करके क्षेत्र की आर्थिक जीवन शक्ति में भी योगदान देती है। हालांकि, लोगों को लगता है कि यातायात प्रबंधन भारत में पुलिस द्वारा किए जाने वाले यातायात नियंत्रण के कार्य तक सीमित है। इसलिए, यह महत्वपूर्ण है कि हम इस तरह की धारणा को सही करने का प्रयास करें।

उदाहरण के लिए- इंस्टीट्यूट आफ ट्रैफिक एजूकेशन (आइआरटीइ) के एक शोध के अनुसार, भारतीय सड़कों पर लगाए गए आधे से अधिक ट्रैफिक कंट्रोल डिवाइस (टीसीडी), जैसे कि संकेत, सिग्नल और सड़क चिह्न, निर्धारित मानकों को पूरा नहीं करते हैं। वे या तो दोषपूर्ण हैं, उचित तरीके से स्थापित नहीं हैं या पूरी तरह से गायब हैं। उचित टीसीडी इंस्टालेशन ट्रैफिक इंजीनियरिंग एल्गोरिदम का आधार बनता है, जो मोटर वाहन ड्राइविंग रेगुलेशन (एमवीडीआर) के अनुसार सड़क पर सुरक्षित और अनुशासित आवागमन को सुविधाजनक बनाता है। भारत में सड़क दुर्घटनाओं में लगातार वृद्धि हो रही है। 2010 में 1.34 लाख सड़क दुर्घटनाएं हुई थीं। भारत ने सौ अन्य देशों के साथ मिलकर सड़क सुरक्षा पर कदम उठाने के लिए अगले दशक (2011-2020) में इस आंकड़े को 50 प्रतिशत तक कम करने का संकल्प लिया। 67,000 के लक्ष्य को प्राप्त करने के बजाय सड़क दुर्घटनाएं 2023 में 1,73,000 तक बढ़ गई हैं। इसके अलावा, इससे 1,59,010 करोड़ रुपये का सामाजिक नुकसान होता है। चिंताजनक सवाल यह है कि इस तरह के नुकसान के लिए किसे जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए? यातायात प्रबंधन के क्षेत्र और घटकों को परिभाषित नहीं किया गया है। सड़क दुर्घटनाओं पर उपलब्ध आंकड़ा ही प्राथमिक स्रोत है। आम तौर पर दुर्घटनाओं के लिए वाहन चालकों को दोषी ठहराया जाता है। इसलिए, सड़क का उपयोग करने वालों को दोष देना और सड़क प्राधिकरणों, परिवहन विभागों, प्रवर्तन एजेंसियों और विधायी निकायों की प्रणालीगत विफलताओं को अनदेखा करना सुविधाजनक है। सबसे पहले, यातायात प्रबंधन शब्द को अच्छी तरह से परिभाषित किया जाना चाहिए, ताकि हमारे सड़क यातायात प्रणालियों के रखरखाव, संचालन और प्रबंधन में हितधारकों की भूमिका और जिम्मेदारियों की पहचान की जा सके, चाहे वे विभाग हों या व्यक्ति। परिवहन विभाग को यातायात प्रबंधन के लिए नोडल प्राधिकरण होना चाहिए, जिसकी जिम्मेदारी सड़क यातायात कानून, परमिट, लाइसेंस, सार्वजनिक परिवहन प्रदान करना, सड़क सुरक्षा नीति और सभी प्रवर्तन मुद्दों को लागू करना है। सड़क प्राधिकरणों को न केवल सड़कें बनानी चाहिए, बल्कि यातायात इंजीनियरिंग सिद्धांतों के माध्यम से वैज्ञानिक संचालन और रखरखाव सुनिश्चित करना चाहिए, पार्किंग प्रबंधन, गति सीमा निर्धारण और यातायात विनियमन के सभी पहलुओं का संचालन करना चाहिए।

बढ़ती सड़क दुर्घटना के कारण

कानून प्रवर्तन की समस्या

केंद्र सरकार के प्रयासों के बावजूद सड़क सुरक्षा का जोखिम लगातार बढ़ता जा रहा है। यह इस ओर संकेत करता है कि भारत के कानून प्रवर्तन तंत्र में कहीं-न-कहीं कमी विद्यमान है। कानून प्रवर्तन के लिए जिम्मेदार राज्य सरकारें इस पर उदासीन बनी हुई हैं।

यातायात नियमों का उल्लंघन

आंकड़ों के मुताबिक, देश भर में होने वाली कुल सड़क दुर्घटनाओं में से 76 प्रतिशत दुर्घटनाएं ओवर स्पीडिंग और गलत साइड पर गाड़ी चलाने जैसे यातायात नियमों के उल्लंघन के कारण होती हैं। स्पष्ट है कि नियमों का कड़ाई से अनुपालन कराए बिना दुर्घटनाओं को कम करना संभव नहीं होगा।

ट्रैफिक इंजीनियरिंग

कुल सड़क दुर्घटनाओं में दोपहिया वाहनों और पैदल चलने वालों की संख्या सबसे अधिक है। फिर भी सड़क यातायात इंजीनियरिंग और नियोजन के दौरान इस विषय पर ध्यान नहीं दिया जाता।

आपातकालीन चिकित्सा सुविधा

देश के अधिकांश राजमार्गों में दुर्घटनास्थल पर पीड़ित को अस्पताल तक ले जाने के लिए एंबुलेंस की कमी है, जिसके कारण दुर्घटना में मरने वाले लोगों की संख्या में वृद्धि होती है।

निगरानी की कमी

निगरानी के लिए बुनियादी ढांचे का अभाव होने के कारण 'हिट एंड रन' के अधिकांश मामलों में जांच ही नहीं हो पाती है। दोपहिया वाहनों पर दुर्घटना के शिकार होने वाले 73 प्रतिशत लोग हेलमेट नहीं पहनते हैं। सीट बेल्ट भी कम लोग लगाते हैं।

ड्राइविंग स्कूल हैं कम

आंकड़ों के अनुसार, सड़क दुर्घटनाओं के कारण होने वाली 80 प्रतिशत मौतों के लिए वाहन चालक प्रत्यक्ष रूप से जिम्मेदार होते हैं। यह आंकड़ा स्पष्ट रूप से देश में अच्छे ड्राइविंग स्कूलों की कमी को रेखांकित करता है।

जानलेवा दुर्घटनाओं का ट्रेंड

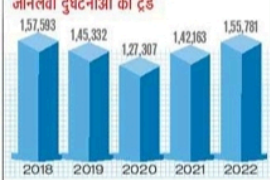

1.5 लाख लोगों की सड़क दुर्घटना में मौत हो रही है सालाना

4.5 लाख से ज्यादा सड़क दुर्घटना में हो रहे हैं जख्मी हर वर्ष

12.5 लाख लोगों की मौत होती है सड़क हादसों में दुनिया भर में

का नुकसान जीडीपी को हो रहा है सालाना सड़क दुर्घटना की वजह से

से ज्यादा है भारत की हिस्सेदारी सड़क हादसों में होने वाली कुल मौतों में

तक दुर्घटनाएं कम करने का वादा किया था भारत ने 2011-2020 दशक के लिए

20 जानें गईं प्रति घंटे सड़क दुर्घटना में वर्ष 2023 के दौरान

1,72,890 लोगों की मौत हुई है 2023 में सड़क हादसों की वजह से पूरे देश में

भारत में होने वाली सड़क दुर्घटना, मौतें और घायलों की संख्या

वर्ष	दुर्घटनाएं	बदलाव का प्रतिशत	मौतें	बदलाव का प्रतिशत	घायलों की संख्या	बदलाव का प्रतिशत
2018	4,70,403	0.2	1,57,593	5.1	4,64,715	-0.6
2019	4,56,959	-2.9	1,58,984	0.9	4,49,360	-3.3
2020	3,72,181	-18.6	1,38,383	-13.0	3,46,747	-22.8
2021	4,12,432	10.8	1,53,972	11.3	3,84,448	10.9
2022	4,61,312	11.9	1,68,491	9.4	4,43,366	15.3

2022 में राज्यों/केंद्र शासित क्षेत्रों में दुर्घटना की तीव्रता (मौतें प्रति 100 दुर्घटना)

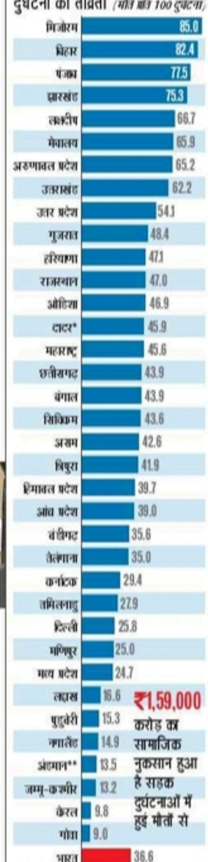

₹1,59,000 करोड़ का सामाजिक नुकसान हुआ है सड़क दुर्घटनाओं में हुई मौतों से

*दादर एवं नगर हवेली
**अंडमान निकोबार द्वीप समूह

जागरण रिसर्च

भविष्य में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पूछे जाएंगे सवाल

अश्विनी बग्गा
सड़क सुरक्षा विशेषज्ञ

भारत में अगर सड़कों पर सुरक्षा की स्थिति में सुधार नहीं होता है तो इसको लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी सवाल पूछे जाएंगे। निवेशक यह सवाल उठाएंगे कि हम जिस देश में काम करने जा रहे हैं वहां सड़कों पर चलना कितना सुरक्षित है

भारत में बड़े पैमाने पर सड़क दुर्घटनाएं होने और इसमें प्रति वर्ष 1.5 लाख से अधिक मौतें होने के कई कारण हैं। रोड की खराब इंजीनियरिंग भी इसकी एक वजह है। लेकिन सबसे बड़ा कारण यह है कि भारत में हाईवे और एक्सप्रेसवे तेजी से बन रहे हैं लेकिन लोगों को पता नहीं है कि इनका इस्तेमाल कैसे करना है। पुरानी रोड, जिनकी डिजाइन में दिक्कतें हैं, उनको दूर नहीं किया गया है।

सड़क दुर्घटनाओं रोकने और लोगों की जान बचाने के लिए आबादी के हिसाब से जो संसाधन चाहिए, उसकी कमी है। जैसे जीवन रक्षक उपकरणों से लैस एंबुलेंस, अत्याधुनिक चिकित्सा उपकरणों से युक्त ट्रामा सेंटर इनकी बहुत कमी है। लोगों को यातायात के नियमों के बारे में बहुत कम जानकारी है। हमें इसकी जानकारी स्कूल और कालेज के स्तर पर ही देनी चाहिए। इसे एजुकेशन सिस्टम में शामिल होना चाहिए, जिससे स्कूल और कालेज से निकले छात्रों को यातायात के नियमों और सड़कों का उपयोग कैसे करना है, इसकी जानकारी हो। देश में लाइसेंस भी बहुत आसानी से बन जाते हैं। गाड़ी चलाने की औपचारिक ट्रेनिंग देने वाले संस्थान होने चाहिए। भारत में ज्यादातर लोग खुद से गाड़ी चलाना सीखते हैं और आसानी से लाइसेंस भी बनवा लेते हैं। सड़क दुर्घटनाओं की यह भी एक बड़ी वजह है। लाइसेंस देने के नियम कड़े होने चाहिए। भारत में सड़क दुर्घटना रोकने के लिए नियमों की कमी नहीं है। नियम बने हुए हैं। लेकिन बड़े शहरों को छोड़ कर बाकी भारत में इन नियमों को सख्ती से लागू नहीं किया जा रहा है। कोविड के दौरान लाकडाउन लागू किया गया था। सरकार ने इस पर सख्ती से अमल भी कराया। किसी की हिम्मत नहीं होती थी कि कोई बाहर निकल जाए। इसका मतलब है कि सरकार अगर चाहे तो यातायात के नियमों का भी पालन सुनिश्चित करा सकती है। लेकिन यहां हर कोई अपना फायदा देखता है। अगर कोई पैसे वाला आदमी है और उसके पास 50 बसों का बेड़ा है तो वह यही चाहेगा कि उसकी बसें चलें उसको फायदा हो। नियम कानून का अगर उल्लंघन हो रहा है तो उसे इसकी चिंता नहीं है और व्यवस्था की खामियों की वजह से लोग नियम कानून से बचने का रास्ता भी निकाल लेते हैं। जब देश में कोई बड़ा आयोजन होता है जैसे कामनवेल्थ गेम तो सरकार हर व्यवस्था अंतरराष्ट्रीय मानकों के हिसाब से करती है। यातायात की व्यवस्था हो या सड़कें हों या दूसरी चीजें क्योंकि सरकार को लगता है कि विदेश से लोग आएंगे और अगर कुछ कमी रही या कोई दुर्घटना हो गई तो देश की बदनामी होगी। अगर विदेशी लोगों के लिए सरकार अंतरराष्ट्रीय मानकों के हिसाब से व्यवस्था कर लेती है तो पूरे भारत के लिए यह व्यवस्था क्यों नहीं की जा सकती है। लोग जिंदा रहेंगे तभी तो वोट देंगे। इसके लिए राजनीतिक इच्छा शक्ति होनी चाहिए। यह एक राजनीतिक एजेंडा बनना चाहिए। दुर्घटनाएं रोकने के लिए प्रोएक्टिव एप्रोच होनी चाहिए, अभी हम रिएक्टिव एप्रोच पर काम कर रहे हैं। रिएक्टिव एप्रोच का मतलब है कि हम दुर्घटना होने के बाद प्रतिक्रिया देते हैं। दुर्घटना रोकने के लिए जो जरूरी काम है वह नहीं कर रहे हैं।

आज नहीं तो कल अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हमसे यह सवाल पूछे जाएंगे कि देश में सड़क सुरक्षा को लेकर स्थिति इतनी खराब क्यों हैं। जब हम विदेशी निवेश बढ़ाने के लिए कारोबार में सहूलियत के मोर्चे पर काम कर रहे हैं तो इसमें सड़क सुरक्षा भी शामिल है। अगर हमारी सड़कों पर दुर्घटनाओं की यही स्थिति रहेगी तो विदेशी निवेशक भी यहां आने कतराएंगे। सड़क सुरक्षा माह जनवरी में हर वर्ष मनाया जाता है लेकिन इसे पूरे वर्ष मनाए जाने की जरूरत है। एक माह तक सड़क सुरक्षा के बारे में जागरूकता पैदा करने से काम नहीं चलेगा। यह काम पूरे वर्ष करना होगा।

सबसे ज्यादा 25-35 वर्ष की उम्र के हुए शिकार

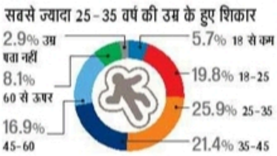

लाइसेंस के प्रकार से दुर्घटनाएं

सड़क दुर्घटना के प्रकार

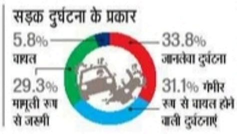

आपकी आवाज

निःसंदेह सड़क दुर्घटनाओं में जान गंवाने वालों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। ऐसे में इसकी जवाबदेही तय की ही जानी चाहिए कि आखिर इन मौतों का कारण खराब सड़कें है या यातायात नियमों का उल्लंघन? आखिर यातायात नियमों का कड़ाई से पालन कराने की जिम्मेदारी शासन-प्रशासन की ही है।

मुकेश कुमार मनन

सड़क दुर्घटना में जान गंवाने वाले परिवारों को ही नुकसान नहीं होता है, बल्कि देश को भी आर्थिक नुकसान होता है। घायलों के इलाज के लिए भारी खर्च करना पड़ता है। इसी के साथ जो लापरवाही से वाहन चलाते हैं या ट्रैफिक नियमों का पालन नहीं करते हैं वो देश का ही नुकसान नहीं करते बल्कि दूसरों की कीमती जान को भी नुकसान पहुंचाते हैं।

राजेश कुमार चौहान

राज्यों में राष्ट्रीय राजमार्गों पर सड़क दुर्घटना में हुई मौतों की संख्या और हिस्सेदारी का प्रतिशत

राज्य/यूटी	2018	हिस्सेदारी का %	2019	हिस्सेदारी का %	2020	हिस्सेदारी का %	2021	हिस्सेदारी का %	2022	हिस्सेदारी का %
उत्तर प्रदेश	8,818	15.7	8,830	15.6	7,859	15.6	8,506	15.2	8,479	13.9
राजस्थान	3,874	6.9	3,870	6.8	3,320	6.6	3,829	6.8	4,156	6.8
मध्य प्रदेश	2,601	4.6	2,904	5.1	3,022	6.0	3,389	6.1	4,025	6.6
बिहार	3,051	5.4	3,436	6.1	3,285	6.5	3,517	6.3	3,953	6.5

राष्ट्रीय फलक

सिंधु सभ्यता की लिपि की पहेली सुलझाने वाले को देंगे 10 लाख डालर : स्टालिन

- तमिलनाडु के सीएम ने पुरातत्वविदों के लिए पुरस्कार की घोषणा की
- सिंधु सभ्यता की लिपि के कूट शब्दों को अभी तक समझा नहीं जा सका है

चेन्नई, प्रेट्र : सिंधु घाटी की सभ्यता पुरातत्वविदों के साथ-साथ इतिहास में रुचि रखने वाले विद्वानों के लिए भी कौतूहल का केंद्र और अनसुलझी पहेली बनी हुई है। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने रविवार को इस सभ्यता के रहस्यों को उजागर कर सकने वाले और इस बारे में सुसंगत जानकारी देने वाले पुरातत्वविदों के लिए 10 लाख डालर का पुरस्कार देने की घोषणा की। उल्लेखनीय है कि सिंधु सभ्यता सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक है जो अपनी शहरी संस्कृति के लिए प्रसिद्ध है और इसकी लिपि के कूट शब्दों को अभी तक समझा नहीं जा सका है।

एमके स्टालिन। फाइल

तमिलनाडु के मुख्यमंत्री स्टालिन ने रविवार को एग्मोर के सरकारी संग्रहालय में आयोजित सिंधु घाटी सभ्यता की खोज की शताब्दी पर अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह के दौरान इसके रहस्यों को उजागर करने वाले को पुरस्कार देने की घोषणा की। तीन दिवसीय संगोष्ठी में दुनिया भर के प्रसिद्ध पुरातत्वविदों, इतिहासकारों और विद्वानों ने सभ्यता के महत्व और तमिलनाडु के साथ इसके संबंधों पर चर्चा की।

स्टालिन ने कहा कि सिंधु घाटी के मिट्टी के बर्तनों पर पाए गए लगभग 60 प्रतिशत प्रतीक तमिलनाडु में खोदाई के दौरान खोजी गई कलाकृतियों पर पाए गए प्रतीकों के समान हैं। इस क्षेत्र में अनुसंधान को और बढ़ावा देने के लिए स्टालिन ने प्रसिद्ध पुरातत्वविद इरावतम महादेवन के नाम पर एक शोध पीठ स्थापित करने के लिए दो करोड़ रुपये के अनुदान की भी घोषणा की।

द्रमुक सांसद के इंजीनियरिंग कालेज में दो दिन तक चली ईडी की छापेमारी

चेन्नई, आइएएनएस : तमिलनाडु के वेल्लोर में द्रमुक सांसद कथिर आनंद के स्वामित्व वाले किंग्स्टन इंजीनियरिंग कालेज में ईडी ने दो दिन तक छापेमारी की। वेल्लोर लोकसभा क्षेत्र से दो बार सांसद रहे आनंद द्रमुक महासचिव और राज्य के जल संसाधन मंत्री एस दुरईमुरुगन के पुत्र हैं, जो मुख्यमंत्री एमके स्टालिन के नेतृत्व वाली कैबिनेट में नंबर दो पर हैं।

44 घंटे तक चली छापेमारी में 15 से अधिक ईडी अधिकारी आठ कारों में सवार होकर पहुंचे थे। आनंद और दुरईमुरुगन के आवासों तथा काटपाडी और वेल्लोर में उनके सहयोगियों से जुड़ी संपत्तियों, कालेज सहित कई स्थानों पर तलाशी ली गई। सूत्रों ने बताया कि ईडी ने बेहिसाब नकदी, कालेज के वित्तीय लेनदेन से संबंधित दस्तावेज और एक हार्ड डिस्क जब्त की है।

****

राजस्थान में नौ और प्रशिक्षु एसआइ निलंबित

- 31 दिसंबर को ही जिलों में भेजा गया था, तीन दिनों में 20 निलंबित
- अब चेहरे व आंखों की स्कैनिंग के बाद परीक्षा केंद्रों में मिलेगा प्रवेश

जागरण संवाददाता, जयपुर

राजस्थान में पुलिस सब इंसपेक्टर (एसआइ) भर्ती परीक्षा-2021 के पेपर लीक, नकल और डमी कैंडिडेट बिठाने के मामले में नौ और प्रशिक्षु एसआइ को निलंबित कर दिया गया। शुक्रवार देर शाम 11 प्रशिक्षु एसआइ निलंबित किए गए थे। इन्हें 31 दिसंबर, 2024 को जिलों में भेजा गया था। ज्ञात हो, एसओजी ने मामले में 45 प्रशिक्षु एसआइ को गिरफ्तार किया था, जिनमें 25 जमानत पर रिहा हो चुके हैं। तीन दिनों के भीतर 25 में 20 निलंबित कर दिए गए।

इस बीच, राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड भर्ती परीक्षाओं में धांधली रोकने के लिए स्पेशल सिक्योरिटी एजेंसी के जरिये परीक्षा केंद्रों पर मेटल डिटेक्टर से जांच करवाने, बायोमीट्रिक हाजिरी, फेस व आइ स्कैनिंग की योजना बना रहा है। फरवरी में होने वाली कनिष्ठ अभियंता परीक्षा से इस पर अमल किया जाएगा। बोर्ड अध्यक्ष आलोक राज ने बताया कि भविष्य में भर्ती प्रक्रिया की वीडियो रिकार्डिंग करवाई जाएगी। परीक्षा केंद्रों पर सीसीटीवी कैमरे लगाए जाएंगे।

किरोड़ी लाल मीणा अब चुप, गहलोत ने केंद्र को घेरा

लंबे समय से एसआइ भर्ती परीक्षा रद करने की मांग कर रहे प्रदेश के कृषि मंत्री किरोड़ी लाल मीणा अब चुप हो गए हैं। रविवार को जयपुर स्थित भाजपा मुख्यालय में प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ से भेंट के बाद जब मीडियाकर्मियों ने उनसे परीक्षा रद करने के बारे में सवाल पूछा तो उन्होंने मुंह पर अंगुली रख ली। बस इतना कहा, हम सब एकराय हैं। सरकार इस मामले में क्या करेगी, मुझे पता नहीं है। उधर, पूर्व सीएम अशोक गहलोत ने जोधपुर में कहा, एसआइ भर्ती मामला जानबूझकर लंबा खींचा जा रहा है। देशभर में पेपर लीक हुए। नीट का पेपर लीक हुआ, बिहार, गुजरात, उप्र व पंजाब में भर्ती परीक्षाओं के पेपर लीक हुए, पर कह रहे हैं कि पिछली सरकार में पेपर लीक हुए। केंद्र को सभी राज्यों के लिए विशेष कदम उठाने चाहिए।

38 प्रतिशत तक पहुंच गई भारतीय श्रमबल में महिलाओं की भागीदारी वर्ष 2022-23 में, जबकि वर्ष 2017-18 में यह आंकड़ा केवल 23.3 प्रतिशत ही था।

आजकल

ट्रेडमार्क के निर्णय का दूरगामी प्रभाव

एक वाहन निर्माता कंपनी ने हाल ही में दो इलेक्ट्रिक वाहन लांच किए हैं। इनमें से एक माडल के नाम में '6ई' का उपयोग किए जाने से ट्रेडमार्क उल्लंघन के आरोप लगे हैं। एक एयरलाइंस के डिजाइनर कोड में '6ई' का उपयोग होता आ रहा है और उसके पास इसका ट्रेडमार्क है। हालांकि वाहन निर्माता कंपनी का दावा है कि उसने अपने एसयूवी 'बीई 6ई' के लिए ट्रेडमार्क पंजीकरण का आवेदन किया है जो कि संबंधित एयरलाइंस के '6ई' से अलग है। लिहाजा यह मामला न्यायालय तक पहुंच चुका है

अमित सिंह
डिप्टी कंट्रोलर, पेटेंट एवं डिजाइन, कोलकाता

प्रतीकात्मक

देश की दो कंपनियों के बीच '6ई' ट्रेडमार्क या व्यापार चिह्न को लेकर हुआ विवाद आजकल चर्चा में है। यह विवाद तब उठा, जब भारत की सबसे बड़ी एयरलाइंस कंपनी इंडिगो ने मुद्दा उठाया कि महिंद्रा एंड महिंद्रा की नई एसयूवी वाहन के नाम 'बीई 6ई' और उसके कोड-नेम '6ई' में काफी समानता है। ऐसे में एयरलाइंस ने इसे स्पष्ट रूप से उसके ट्रेडमार्क के उल्लंघन किए जाने का मामला बताया है।

दरअसल संबंधित एयरलाइंस की शुरुआत 18 वर्ष पहले हुई थी और उसका यह मानना है कि तब से ही '6ई' उसकी वैश्विक पहचान की नींव का पत्थर है, और इसका अनधिकृत प्रयोग उसकी साख, गुडविल और अधिकारों का हनन है। हालांकि वाहन निर्माता कंपनी के प्रवक्ता का कहना है कि दोनों व्यापारिक चिह्नों में मूलभूत अंतर है। प्रवक्ता ने यह भी कहा कि इंडिगो एयरलाइंस ने जब 'इंडिगो' ब्रांड नेम का प्रयोग आरंभ किया था, तब टाटा मोटर्स ने इस पर आपत्ति जताई थी। दरअसल टाटा मोटर्स ने 'इंडिगो' नाम से अपनी एक कार लांच की थी। तब इंडिगो का तर्क भी दोनों में असमानता को लेकर था। इसको देखते हुए इंडिगो की '6ई' को लेकर की गई आपत्ति तर्कसंगत नहीं प्रतीत होती है।

ट्रेडमार्क इनफ्रिंजमेंट : संबंधित एयरलाइंस ने दिल्ली हाई कोर्ट में 'ट्रेडमार्क इनफ्रिंजमेंट' का केस फाइल किया है। वहीं वाहन निर्माता कंपनी ने मंशा जताई है कि इस केस को वह मजबूती से लड़ेंगे और अभी किसी भी अनावश्यक विवाद से बचने के लिए नई एसयूवी को रीब्रांड करके इससे 'बीई 6' नाम के साथ मार्च तक मार्केट में उपलब्ध कराएंगे। वैसे तो यह मामला दो कंपनियों के बीच व्यापार चिह्न के स्वामित्व को लेकर एक सामान्य विवाद प्रतीत होता है, परंतु हो सकता है कि इस विवाद पर आने वाले कोर्ट के निर्णय के दूरगामी परिणाम हों, जो भारत में बौद्धिक संपदा अधिकारों को एक नई दिशा देने काम करें। इसीलिए इस व्यापार चिह्न के अधिकारों के महत्त्व और उनसे संबंधित कानूनी पहलुओं को समझना आवश्यक हो जाता है।

काल्पनिक ट्रेडमार्क : व्यापार चिह्न या ट्रेडमार्क एक प्रतीक होता है, जो एक शब्द, शब्दों के समूह, सिंबल, डिजाइन या फिर इन सबका संयोजन हो सकता है, जिसका उपयोग उत्पाद या सेवा को प्रतिस्पर्धी के उत्पाद या सेवा से अंतर या अलग करने के लिए किया जाता है। इनवेंटेड शब्द या खोजे/ गढ़े गए शब्द या अद्वितीय ज्यामितीय (यूनीक जियोमेट्रिकल) डिजाइन, सर्वोत्तम ट्रेडमार्क माने जाते हैं। ये अपने ट्रेडमार्क पंजीकरण से पहले किसी शब्दकोष या औद्योगिक प्रकाशन में नहीं मिलेंगे। इस तरह के ट्रेडमार्क बहुत ही स्ट्रांग होते हैं, जिन्हें काल्पनिक ट्रेडमार्क कहा जाता है।

अपने पक्ष में तैयार साख : इसी तरह मनमाने (आरबीट्रेरी) ट्रेडमार्क जो अपने उत्पाद या सेवा से बिल्कुल भी संबंधित नहीं होते, जैसे एपल कंप्यूटर आदि भी मजबूत ट्रेडमार्क माने जाते हैं। ट्रेडमार्क का एक महत्वपूर्ण पक्ष उसके उपयोग की अवधि के दौरान अपने पक्ष में तैयार की गई साख (गुडविल) भी है। यदि ग्राहक को दो उत्पादों में अंतर करते समय असमंजस महसूस होता है, तो उन्हें भ्रामक रूप से समान माना जा सकता है। पंजीकृत ट्रेडमार्क का मालिक दूसरों को अपने ट्रेडमार्क का अवैध रूप से उपयोग करने से रोक सकता है और नुकसान के हरजाने की भरपाई के लिए कोर्ट का दरवाजा भी खटखटा सकता है।

भारत में पंजीकृत ट्रेडमार्क की वैधता अवधि दाखिल करने की तारीख से दस वर्ष तक है, जिसे दस वर्षों की अवधि के लिए असीमित बार नवीनीकृत किया जा सकता है। वर्तमान मामले को स्टारबक्स या मर्सिडीज बेंज के मामलों में कोर्ट द्वारा दिए गए निर्णयों से भी समझा जा सकता है। 'स्टारबक्स कारपोरेशन बनाम सरदारबख्श काफी एंड कंपनी' के मामले में कोर्ट ने पाया कि स्टारबक्स ने व्यापार चिह्न 'स्टारबक्स' का वर्ष 2001 में पंजीकरण कराया था। प्रतिवादी ने अपना व्यापार कई वर्षों के बाद 'सरदारबख्श काफी एंड कंपनी' के नाम से शुरू किया। दिल्ली हाई कोर्ट ने इसका फैसला स्टारबक्स कारपोरेशन के पक्ष में दिया और कहा कि एक सामान्य बुद्धि का व्यक्ति 'सरदारबख्श' शब्द से कंफ्यूज हो सकता है, और इस प्रकार यह भ्रामक रूप से समान है। इस मामले में ध्यान देने वाली बात यह है कि वादी और प्रतिवादी, दोनों ही एक ही प्रकार के व्यवसाय में थे।

अंतिम निर्णय : 'डेमलर बेंज एक्टीजेसेलशाफ्ट बनाम हाबो हिंदुस्तान' के मामले में वादी और प्रतिवादी अलग-अलग प्रकार के व्यवसाय में थे। वादी मर्सिडीज बेंज कारों के निर्माता थे, जबकि प्रतिवादी अंतर्वस्त्रों के व्यापार में थे। दिल्ली हाई कोर्ट ने माना कि वैसे तो डेमलर बेंज न ही अंडरगारमेंट्स के निर्माता हैं और न ही विक्रेता हैं, पर हाबो हिंदुस्तान द्वारा 'बेंज' शब्द का प्रयोग एक साधारण ग्राहक को कंफ्यूज कर सकता है। कोर्ट ने कहा कि 'बेंज' जैसा प्रसिद्ध (वेल नोन) ट्रेडमार्क जो विश्व की सबसे अच्छी कारों मे एक से जुड़ा हुआ है, किसी के भी द्वारा प्रयोग नहीं किया जा सकता, क्योंकि यह मर्सिडीज की साख को नकारात्मक तौर पर प्रभावित कर सकता है। अदालत ने कहा कि हाबो हिंदुस्तान के पास कोई भी वैध कारण नहीं है, जो उसे विश्व की सर्वोत्तम कारों में से एक से जुड़े नाम 'बेंज' के प्रयोग का अधिकार देता है।

यह तो समय ही बताएगा कि वाहन निर्माता कंपनी और एयरलाइंस के बीच चलने वाली ट्रेडमार्क की '6ई' कथा कितने उतार और चढ़ाव देखेगी या इसका अंत किसके पक्ष में होगा, परंतु यह बात तय है कि अगर अंतिम फैसला बिना आपसी सुलह के कोर्ट द्वारा किया जाएगा तो निर्णय ऐतिहासिक होगा।

बौद्धिक संपदा कानून के दिलचस्प पहलू

सिद्धार्थ मिश्र
प्रोफेसर, विधि संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय

सफलता की उम्मीद मनुष्य को नए कार्य और कठिन परिश्रम करने को प्रेरित करती है, परंतु यदि परिश्रम को बुद्धिमान रणनीति का साथ मिल जाए तो सफलता निश्चित हो जाती है। वर्ष 1985 की बात है जब मलेशिया में एस. के. मतलनी का पहली बार मच्छरों को दूर भागने वाली (मस्किटो रेपलेंट) मैट से परिचय हुआ था। उस समय के हिसाब से मच्छरों से बचने के लिए यह एक नई और प्रभावी तकनीक थी। भारतीय बाजार के हिसाब से मतलनी को इसमें एक बड़ा अवसर दिखा। उन्होंने मैट बनाने की एक छोटी सी मशीन का इंतजाम किया और 'जेट होम केयर प्रोडक्ट्स लिमिटेड' के नाम से अपने नए व्यापार को आरंभ करने की तैयारी कर ली। पर इस राह में सबसे बड़ी बाधा मच्छरों को दूर भगाने वाली इस मैट में डाले जाने वाले केमिकल का फार्मूला था। लिहाजा उन्होंने इसके रिसर्च और डेवलपमेंट में काफी खर्च किया और भारतीय बाजार, मच्छरों की अनुमानित संख्या और उनके प्रकार के अनुसार केमिकल फार्मूला भी तैयार हो गया। वर्ष 1986 में उन्होंने छोटे स्तर पर अपने घर से ही मच्छरों को दूर भगाने वाली मैट का उत्पादन शुरू कर दिया। अभी व्यापार छोटा था, परंतु वह उत्पाद भारतीय बाजार की मांग के अनुकूल था, इसलिए उसकी बिक्री की गति तेज होने में देरी नहीं लगी। जल्द ही उन्हें एक अलग उत्पादन यूनिट लगानी पड़ी।

अब इस पूरी कहानी में ट्रेडमार्क का क्या महत्व है, इसे भी समझना चाहिए। दरअसल मतलनी को पता था कि किसी भी सफल उत्पाद और उसके व्यापार में ब्रांड नेम और ब्रांड इमेज बहुत ही महत्वपूर्ण है, एक ऐसा ब्रांड नेम जिससे उपभोक्ता पूरी तरह जुड़ाव महसूस करते हों। इसके चलते उन्होंने अपनी बौद्धिक संपदा रणनीति (आईपी स्ट्रेटजी) के साथ एक मजबूत ब्रांड नेम के पंजीकरण पर ध्यान केंद्रित किया। मतलानी जानते थे कि ट्रेडमार्क, बोलने और याद रखने में आसान होने के साथ-साथ उपभोक्ताओं को अपील करने वाला भी होना चाहिए। उन्हें लगा कि शब्द 'जेट' जो उनकी कंपनी के नाम में भी था, वह सभी पहलुओं पर खरा उतरता है। इसके चलते उन्होंने ट्रेडमार्क आफिस में 'जेट' के पंजीकरण के लिए आवेदन किया जिसका समयसीमा में पंजीकरण भी हो गया। एक ऐसा उत्पाद, जिसका ब्रांड नेम बहुत आकर्षक था और उसमें गुणवत्ता भी थी, देखते ही देखते बाजार में हिट हो गया। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि मतलानी की सफलता की कहानी एक मिसाल है कि किसी भी व्यापार में बौद्धिक संपदा प्रबंधन सफलता का दरवाजा खोलने वाली कुंजी साबित हो सकती है। इस मामले में अकेले 'जेट' ट्रेडमार्क ने इतना धनोपार्जन करवा दिया कि उसके सामने वास्तविक उत्पाद, फैक्ट्री और अन्य इन्फ्रास्ट्रक्चर का कोई महत्व ही नहीं रहा।

वस्तुतः पश्चिमी देशों ने बौद्धिक संपदा अधिकारों के महत्व को भारत सहित अन्य विकासशील देशों की तुलना में कहीं अधिक बेहतर तरीके से समझा और उनका अपने हित में अच्छा उपयोग भी किया है। अमेरिका सहित कई विकसित देशों की अर्थव्यवस्था को बढ़ाने में विभिन्न बौद्धिक संपदाओं और उन पर मिले अधिकारों का विशेष योगदान रहा है। सशक्त बौद्धिक संपदा कानूनों एवं उनके सख्त अनुपालन से इन देशों ने घरेलू ही नहीं, अपितु अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी काफी लाभ अर्जित कर अपनी अर्थव्यवस्था को मजबूत किया है।

भारत को ऐसे देशों से सीख लेकर अपने बौद्धिक संपदा कानूनों को सशक्त करते हुए उनका सख्त अनुपालन सुनिश्चित करना चाहिए। साथ ही, अपने नागरिकों को भी अपने रचनात्मक कार्यों पर बौद्धिक संपदा अधिकार प्राप्त कर संबंधित कानूनों से लाभ उठाने की दिशा में जागरूक और प्रेरित करना चाहिए।

खरी-खरी

घर के न घाट के

रेखा शाह आरबी

जब तक किसी के बारे में पूरी तरह जान न लिया जाए, बिना सोचे समझे सामाजिक भ्रांति के आधार पर अपनी राय बनाना सही नहीं है। लेकिन हमारा समाज ऐसा ही करता है। इसमें बेचारे लड़के ऐसा लगता है जैसे चारे बन गए हैं। कोई भी इनका अपने हिसाब से इनका इस्तेमाल कर लेता है।

हर कोई अपनी एक राय हर चीज के लिए बना कर चलता है और उस पर सारे तर्क तेल लेने चले जाते हैं। भले ही बाद में लोगों को सच्चाई पता चलने पर अफसोस जाहिर करें। लेकिन पहली प्रतिक्रिया तो अपनी राय अनुसार ही देते हैं। इस चक्कर में लड़के कुटाई कुमार बन गए हैं।

समाज में लोगों की राय है कि हर लड़की मासूम, सीधी-सादी, भोली-भाली होती है। वहीं लड़कों के संग लफंगों का टैग चिपका हुआ है। बीच रास्ते पर एक लड़का और लड़की को झगड़ा करते हुए देख लें तो बिना जाने समझे लड़के को रावण और लड़की को प्रताड़ित ठहरा दिया जाता है।

अब आप सोच रहे होंगे कि गप्पू ज्ञान क्यों बांट रहे हैं। तो बात ऐसी है कि गप्पू जी के बेटे और मोहल्ले के बच्चों ने नए साल की पार्टी मनाने का निश्चय किया। गप्पू जी अपने बेटे के स्वभाव से अच्छी तरह परिचित थे। बेचारा साल भर किताबों से माथापच्ची करता है। और एक दिन पिकनिक के लिए कहा तो उन्होंने खुशी-खुशी उसके दोस्तों के साथ उसे भेज दिया। बेचारा ज्यादा दूर भी नहीं गया था। शहर के ही पिकनिक स्पाट पर अपने दोस्तों के साथ नए साल की पार्टी कर रहा था। वहां पर लड़कों से ज्यादा लड़कियों के ग्रुप पार्टी कर रहे थे। बेचारों को सेब का जूस और पनीर के पकोड़े खाना ज्यादा भारी पड़ गया। पहली नजर में सेब का जूस पुलिस वालों को शराब नजर आया, जिसके चलते पहले लाठियां बरसाईं। उसके बाद उन्होंने जूस का मुआयना किया और जिन पापा की परियों के पास सच में अल्कोहल बरामद हुआ, उन्हें नसीहत देकर छोड़ दिया।

बेचारे गप्पू के बेटे की अभी तक चोट पर बाम लगाकर सिकाई जारी है। उसे समझ में नहीं आ रहा कि सारे लोग कहते हैं कि यह देश पुरुष प्रधान है या लट्ठ खाने के लिए प्रधान है।

पोस्ट

अफगानिस्तान में महिलाओं की गतिविधियों पर लगातार प्रतिबंध लगाए जा रहे हैं। उनके पढ़ने-लिखने, नौकरी करने, पब्लिक प्लेस में घूमने जैसे तमाम अधिकार सीमित कर दिए गए हैं। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद को कुछ प्रभावी कदम उठाने चाहिए, वरना संयुक्त राष्ट्र जैसी संस्था का कोई अर्थ नहीं रह जाएगा।

आरके विज@ipsvijrk

कुल मिलाकर आस्ट्रेलिया दौरे का निराशाजनक समापन हुआ। बुरी तरह पराजित हुए। एकदम समर्पण भावना से खेलते हुए टीम ने जीतने के लिए कुछ नहीं किया। एकाध लोगों के पराक्रम से टीम नहीं जीतती। सबको मिल-जुलकर प्रदर्शन करना पड़ता है।

डा. रमाकांत राय@RamaKRoy

जसप्रीत बुमराह की अनुपस्थिति में छोटे लक्ष्य का बचाव असंभव था। वन मैन आर्मी की तरह उसे थका दिया गया। बैटिंग के लिए मशहूर हमारे सितारे स्पिन पिच पर स्पिन के खिलाफ और तेज पिच पर पेसर्स के सामने आत्मसमर्पण कर रहे। तीन-तीन दिनों में टेस्ट मैच हार रहे हैं। उनके प्रदर्शन में बड़ी गिरावट आई है।

सुशील दोषी@RealSushilDoshi

जागरण जनमत कल का परिणाम

क्या नई दिल्ली विधानसभा सीट से भाजपा द्वारा प्रवेश वर्मा को प्रत्याशी बनाने के बाद केजरीवाल की चुनौती बढ़ गई है?

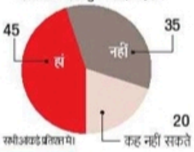

सभी आंकड़े प्रतिशत में।

आज का सवाल

आस्ट्रेलिया में टेस्ट सीरीज के लिए रोहित शर्मा और विराट कोहली का चयन गलत निर्णय था?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।

जनपथ

हम सब इसरो का करें मिलकर स्तुतिगान,
अंतरिक्ष में लोबिया उगा रहा विज्ञान।
उगा रहा विज्ञान उगेगी फसलें सारी,
इसरो की वृद्धि से प्रकृति दिखती हारी।
चमत्कार यह देख पड़ा है अचरज में रब,
जाने क्या-क्या और करेंगे आगे हम सब!

'बंटेंगे तो कटेंगे' से अब 'राम बनाम बाबर'

अजय जायसवाल
राज्य ब्यूरो प्रमुख, उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश डायरी

हाल ही में नौ विधानसभा सीटों के उपचुनाव में 'बंटेंगे तो कटेंगे' के दम पर सपा के 'पीडीए' की हवा निकालने वाले मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ अब 'मिशन मिल्कीपुर' की जंग को 'राम' बनाम 'बाबर' की लड़ाई मान रहे हैं। मुस्लिम बहुल कुंदरकी के साथ ही तीन दशक बाद अंबेडकरनगर की कटेहरी सीट पर भगवा परचम फहराने वाले योगी सपा पर निशाना साधते हुए कह रहे हैं कि हमारे लिए विकास और सनातन के प्रतीक 'राम' हैं, जबकि सपा विध्वंस के प्रतीक 'बाबर' को मानती है। सपा ने न केवल अयोध्या के विकास को रोका, बल्कि राम भक्तों पर गोलियां चलवाईं और प्रदेश को दंगे की आग में भी झोंका। सपा तो आतंकियों, दुराचारियों, अपराधियों के साथ खड़ी रहती है, जबकि भाजपा, देश-प्रदेश को विकास की ओर ले जा रही है। वैसे तो 403 विधानसभा सीटों वाले उत्तर प्रदेश की सिर्फ एक सीट पर उपचुनाव होने हैं, लेकिन जब सीट रामलला की नगरी अयोध्या (फैजाबाद) लोकसभा की मिल्कीपुर हो तो सियासी लड़ाई के नतीजे से निकलने वाले संदेश की अहमियत होगी ही। पिछले वर्ष भव्य जन्मभूमि मंदिर में रामलला के विराजने के बाद के आम चुनाव में सत्ताधारी भाजपा अयोध्या जैसी प्रतिष्ठित लोकसभा सीट को सपा के हाथों गंवा चुकी है। इससे खासतौर से देश-दुनिया के हिंदुओं के निशाने पर रही भाजपा अब उपचुनाव में सपा से मिल्कीपुर विधानसभा सीट छीनकर हिसाब बराबर करने को आतुर है। लोकसभा चुनाव में सपा से 'भगवा दल' के हारने का बदला लेने के लिए स्वयं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने 'मिशन मिल्कीपुर' की कमान संभाल रखी है। उपचुनाव में भाजपा के साथ ही योगी-मोदी की डबल इंजन सरकार की प्रतिष्ठा जहां दांव पर लगी है, वहीं सपा के लिए अपनी सीट पर कब्जा कायम रखने की बड़ी चुनौती दिखाई दे रही है। चूंकि उपचुनाव के

योगी आदित्यनाथ फाइल

मैदान में न बसपा और न ही कांग्रेस के रहने की उम्मीद है, इसलिए सीधी टक्कर में भाजपा और सपा एक-दूसरे को शिकस्त देने के लिए एड़ी चोटी का जोर लगाए हैं।

वर्ष 2022 के विधानसभा चुनाव में मिल्कीपुर सीट पर भाजपा के गोरखनाथ को पराजित करने वाले सपा के अवधेश प्रसाद ने पिछले वर्ष लोकसभा चुनाव में अयोध्या सीट पर भाजपा के ही दिग्गज नेता लल्लू सिंह को शिकस्त देकर सुर्खियां बटोरी थीं। अवधेश प्रसाद के

अखिलेश यादव फाइल

सांसद बनने से लगभग सात माह पहले रिक्त हुई मिल्कीपुर विधानसभा सीट के उपचुनाव का कार्यक्रम भारत निर्वाचन आयोग ने अभी घोषित नहीं किया है। मामला कोर्ट में होने के कारण नवंबर में नौ विधानसभा सीटों के उपचुनाव के साथ मिल्कीपुर सीट के लिए चुनाव नहीं हो सके थे, लेकिन कोर्ट से रास्ता साफ होने के बाद अब जल्द ही यहां भी उपचुनाव की अधिसूचना आयोग जारी कर सकता है। ऐसे में भाजपा संगठन से लेकर सरकार की जबरदस्त सक्रियता क्षेत्र में दिखाई दे रही है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ अब तक चार बार मिल्कीपुर के चक्कर लगा चुके हैं। पूरी ताकत झोंकते हुए भाजपा संगठन के पदाधिकारी से लेकर योगी मंत्रिमंडल के मंत्री सूर्य प्रताप शाही, स्वतंत्र देव सिंह, जेपीएस राठौर, गिरीश चंद्र यादव, दयाशंकर मिश्र 'दयालु', मयंकेश्वर शरण सिंह व सतीश शर्मा आदि क्षेत्र में ही डेरा जमाए हुए हैं। हालांकि मिल्कीपुर सीट के जातीय समीकरण को देखते हुए भाजपा के लिए यहां अपना परचम लहराना आसान नहीं रहा है।

पार्टी पदाधिकारियों को जीत का मंत्र देते योगी बता रहे हैं कि जब 65 प्रतिशत मुस्लिम आबादी वाली कुंदरकी और कटेहरी जैसी सीट पर उपचुनाव जीता जा सकता है, तब तो कोई भी चुनाव भाजपा जीत सकती है। जीत सुनिश्चित करने के लिए भाजपा हर घर के मतदाताओं का डाटा तैयार कर ऐसे मतदाताओं का पता लगा रही है जो 'कमल का बटन' नहीं दबाते रहे हैं। ऐसे मतदाताओं के पास पार्टी के पदाधिकारी पहुंचकर भाजपा के पक्ष में मतदान के लिए प्रेरित कर रहे हैं। पार्टी समर्थक मतदाताओं से शत-प्रतिशत मतदान सुनिश्चित किया जा रहा है। दावा कर रहे हैं कि बिना भेदभाव के डबल इंजन सरकार केवल पात्रता के आधार पर आवास, शौचालय, निशुल्क गैस कनेक्शन दे रही है। मंत्री विकास परियोजनाओं और समस्याओं के समाधान पर ध्यान देने के साथ ही जातीय समीकरण साधने के लिए मोहल्ले और गांव में स्वाजातीय लोगों के साथ बैठक कर रहे हैं।

सपा मुखिया अखिलेश यादव भी मिल्कीपुर सीट कायम रखने के लिए बैठकें कर रहे हैं। उन्होंने सांसद अवधेश प्रसाद के बेटे अजीत प्रसाद को पार्टी का प्रत्याशी भी घोषित कर रखा है। हालांकि भाजपा अभी प्रत्याशी की तलाश में है। टिकट के मजबूत दावेदारों में पूर्व विधायक गोरखनाथ बाबा के साथ ही रामू प्रियदर्शी सहित कई हैं। पार्टी चुनाव की अधिसूचना जारी होने के बाद ही उम्मीदवार के नाम की घोषणा करेगी। अंततः उपचुनाव में हार-जीत किसकी होती है, यह तो नतीजे बताएंगे।

मंथन

आर्थिकी में महिला भागीदारी

घरेलू कामकाज के साथ ही महिलाएं बाहर भी अपनी भूमिका तलाश रही हैं। ऐसे में घरेलू कार्यों पर लगने वाला समय और अर्थव्यवस्था में उनके वास्तविक योगदान का पता भी लगाया जाना चाहिए

अनीश कुमार भानु
शोधार्थी, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली

महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए केंद्र सरकार की महत्वाकांक्षी योजना 'राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन' के तहत देश भर में 'लखपति दीदी' कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। इसका उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के लिए आर्थिक अवसरों को बढ़ाना है। दो करोड़ के लक्ष्य को बढ़ाते हुए सरकार ने 2024-25 तक तीन करोड़ ग्रामीण महिलाओं की वार्षिक आय को एक लाख तक पहुंचाने का लक्ष्य रखा है। श्रमबल में महिलाओं की भागीदारी 2017-18 की तुलना में 23.3 प्रतिशत से बढ़कर 2022-23 में 38 प्रतिशत हो गई है। इसके बावजूद यह पुरुषों की तुलना में आधी है। सवाल है कि क्या अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी वास्तव में कम है या इनके अधिकांश कार्यों की अनदेखी की वजह से आंकड़ों में कम दर्ज किया जाता है?

वस्तुतः आर्थिक गतिविधियों की गणना में घरेलू कार्यों की अनदेखी की वजह से महिलाओं के दिन-रात काम करने के बावजूद अर्थव्यवस्था में योगदान से वंचित कर दिया जाता है। आमतौर पर महिलाओं के ऐसे समूह को 'गृहिणी' या 'घर संभालने वाली' की श्रेणी में डाल दिया जाता है। अकादमिक जगत में यह बहस उठती रही है, पर अभी तक इस पर कोई ठोस राय नहीं बन पाई है, अमल तो दूर की बात है।

भारत सरकार के 'राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय' द्वारा जारी 'भारत में समय उपयोग सर्वे- 2019' की रिपोर्ट ने महिलाओं पर काम के बोझ के मुद्दे को स्पष्ट रूप से उजागर किया है। 'टाइम यूज सर्वे' के नाम से जाना जाने वाला यह सर्वेक्षण राष्ट्रीय स्तर पर देश में पहली बार किया गया। उसी वर्ष जनवरी से दिसंबर के दौरान जुटाए गए आंकड़ों के आधार पर तैयार की गई रिपोर्ट लोगों द्वारा सभी प्रकार की आर्थिक और गैर आर्थिक गतिविधियों और उस पर लगने वाला समय को मापता है। यह सर्वेक्षण महिलाओं के रोजमर्रा के कार्यों में लगने वाले समय को समझने का प्रयास है।

महिलाओं की जिम्मेदारियां : इस रिपोर्ट के अनुसार, भारतीय महिलाएं प्रतिदिन औसतन तीन सौ मिनट घरेलू कार्यों में व्यतीत करती हैं, जबकि पुरुष केवल सौ मिनट देते हैं। यह अंतर उस सामाजिक धारणा को दर्शाता है, जो महिलाओं की भूमिका को केवल देखभाल और घर संभालने तक ही सीमित करती हैं। इसके अलावा, यदि महिलाएं वेतनभोगी या स्वरोजगार जैसे कार्यों में शामिल हैं, तो उनके कार्य में लगने वाला समय औसतन 455 मिनट तक पहुंच जाता है। इसका अर्थ है कि अर्थव्यवस्था की दृष्टि से कामकाजी महिलाएं, कामकाजी पुरुषों की तुलना में अधिक व्यस्त रहती हैं।

समाज और परिवार की भूमिका : समय उपयोग सर्वेक्षण यह भी दर्शाता है कि महिलाओं के श्रम का अधिकांश हिस्सा खाना पकाना, साफ-सफाई, बच्चों और वृद्धजनों की परवरिश जैसे घरेलू कामों में जाता है। परिवार के सदस्यों की देख-रेख जैसे कार्यों पर महिलाएं रोजाना औसतन 132 मिनट समय देती हैं, जबकि पुरुषों की इन कार्यों में भागीदारी केवल 77 मिनट है। फिर भी, महिलाओं के योगदान को ''अनपेड लेबर'' के रूप में नजरअंदाज किया जाता रहा है। आम धारणा के उलट, महिलाओं की सामाजिक कार्यों में भागीदारी और धार्मिक क्रियाकलापों के लिए दिया जाने वाला समय भी पुरुषों से कम है। इसी प्रकार, आराम और स्वयं को दिया जाने वाला समय भी पुरुषों की तुलना में अपेक्षाकृत कम है। लिहाजा, नए कौशल सीखने के लिए भी महिलाओं के पास कम समय होता है। कौशल के अभाव में महिलाएं घर से बाहर आर्थिक गतिविधियों में कम ही हिस्सा ले पाती हैं। इस रिपोर्ट से जाहिर है कि सामान्य महिलाओं के समय का एक बड़ा हिस्सा घरेलू कार्यों में व्यतीत होता है। घरेलू कार्यों की अर्थव्यवस्था में अनदेखी न केवल उनकी उद्यमशीलता को प्रभावित करता है, बल्कि उनकी पहचान, आत्मसम्मान और विकास के अवसरों को भी सीमित करता है।

महिलाओं का एक बड़ा वर्ग अवैतनिक श्रम (अनपेड लेबर) के माध्यम से परोक्ष रूप से परिवार की आय में भी योगदान देता है। मसलन, परिवार के उपयोग के लिए बनाया जाने वाला अचार-पापड़, सिलाई-बुनाई या ईंधन के लिए लकड़ी इकट्ठा करने जैसे अनेक काम, जिन पर अन्यथा परिवार का खर्च हो सकता है, महिलाओं के श्रम से बचत हो जाती है। फिर भी अर्थव्यवस्था में इन कार्यों को उत्पादन के रूप में मान्यता नहीं दी जाती है। कमजोर नीतियां, अपर्याप्त सामाजिक सुरक्षा, असमान वेतन, कार्यस्थलों पर भेदभावपूर्ण परिवेश की वजह से महिलाएं विषम परिस्थितियों का सामना करती हैं।

श्रमबल में बढ़ रही महिला हिस्सेदारी। फाइल

नीतिगत उपाय : सरकार और समाज दोनों को इस दिशा में कदम उठाने की आवश्यकता है। महिलाओं के घरेलू कार्य को आर्थिक योगदान के रूप में मान्यता देने के साथ ही तकनीक और नवाचार इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। पुरुषों को घरेलू कार्यों और बच्चों की देखभाल में समान रूप से भागीदार बनाना आवश्यक है। महिलाओं के लिए कार्यस्थलों पर काम का लचीला समय और मातृत्व लाभ की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त, समाज के स्तर पर पितृसत्तात्मक सोच को बदलने के लिए बड़े पैमाने पर जागरूकता अभियान चलाने की जरूरत है।

दैनिक जागरण

सकारात्मकता से बड़ा ऊर्जा का कोई और स्रोत नहीं

सबक सिखाने वाली हार

भारत ने बार्डर-गावस्कर ट्राफी जिस तरह गंवाई, वह भारतीय क्रिकेट के प्रशंसकों को निराश करने के साथ ही उन्हें क्षोभ से भरने वाली है। जीत-हार खेल का हिस्सा होती है, लेकिन जब किसी टीम के खिलाड़ी जीत का जज्बा नहीं दिखाते और उनके कंधे झुके हुए दिखते हैं तो मायूसी कहीं अधिक बढ़ जाती है। भारत ने आस्ट्रेलिया के हाथों 3-1 से सीरीज इसलिए गंवाई, क्योंकि टीम की नाकामयाबियों को समय रहते दूर करने के बजाय उस पर पर्दा डालने का काम किया गया। कप्तान रोहित शर्मा समेत कुछ सीनियर खिलाड़ियों को खेल से बड़ा मानकर उनके लचर प्रदर्शन की अनदेखी की जाती रही। अनदेखी का यह सिलसिला आस्ट्रेलिया में भी जारी रहा। भारतीय टीम में सब कुछ सही नहीं, यह तभी स्पष्ट हो गया था जब उसने घरेलू मैदानों पर न्यूजीलैंड के आगे घुटने टेक दिए थे। अनुकूल घरेलू स्थितियों में न्यूजीलैंड के हाथों 3-0 से हार के बाद टीम प्रबंधन को चेत जाना चाहिए था, लेकिन कोई नहीं जानता कि ऐसा क्यों नहीं किया गया। समस्या केवल यही नहीं रही कि सीनियर खिलाड़ियों की नाकामी के बावजूद उन्हें आस्ट्रेलिया दौरे के लिए चुन लिया गया, बल्कि यह भी रही कि वहां उनकी लगातार असफलताओं को अनदेखा किया गया। ऐसा क्यों किया गया, इसके लिए सबसे अधिक जवाबदेही कोच गौतम गंभीर की बनती है। गंभीर भारतीय खिलाड़ियों द्वारा एक ही गलती बार-बार दोहराए जाने के लिए अपनी जिम्मेदारी से बच नहीं सकते।

भारतीय टीम पर्थ में पहला टेस्ट इसीलिए जीत सकी, क्योंकि एक साथ कई खिलाड़ियों ने बेहतर प्रदर्शन किया। नियमित कप्तान रोहित शर्मा इस टीम का हिस्सा नहीं थे। दूसरे टेस्ट में वह टीम का हिस्सा बन गए। उन्होंने न केवल टीम का संयोजन बिगाड़ दिया, बल्कि उनके नाकाम प्रदर्शन ने युवा खिलाड़ियों के मनोबल पर भी बुरा असर डाला। शायद इसीलिए ड्रेसिंग रूम में खिलाड़ियों के बीच अनबन की खबरें आईं। युवाओं के मनोबल को गिराने का काम विराट कोहली ने भी किया। रोहित शर्मा ने आखिरी टेस्ट में स्वयं को टीम से अलग कर लिया, लेकिन तब तक देर हो चुकी थी। वैसे तथ्य यह भी है कि एक समय इस मैच में भारतीय टीम के जीतने की सूरत बन गई थी। अच्छा होता कि रोहित शर्मा पहले ही पूरी सीरीज से हट जाते, क्योंकि न तो वह शारीरिक और मानसिक रूप से सक्षम नजर आ रहे थे और न ही लय में दिख रहे थे। ऐसी ही स्थिति में विराट कोहली भी थे। यदि रोहित शर्मा और विराट कोहली के स्थान पर नए खिलाड़ियों को अवसर दिया गया होता तो संभवतः इस प्रतिष्ठित सीरीज की कहानी कुछ और होती। आस्ट्रेलिया में दिल दुखाने वाले प्रदर्शन के यदि सही सबक नहीं सीखे गए तो हार का यह सिलसिला आगे भी जारी रहेगा।

ठंड का प्रभाव

इन दिनों ठंड बहुत बढ़ चुकी है और इसका प्रभाव पूरे बिहार में है। शनिवार को इसी ठंड में शेखपुरा जिले के कुटौत उच्च विद्यालय में 10-12 छात्राओं के साथ एक शिक्षिका का भी मूर्छित होकर गिर जाना चिंता का विषय है। ठंड का प्रभाव अभी आगे भी बने रहने की संभावना है, इसे देखते हुए उचित निर्णय की आवश्यकता है। विद्यालय में खेलकूद का आयोजन किया गया था, जिसमें भाग ले रहीं छात्राएं ठंड का शिकार हो गईं।

सार्वजनिक स्थलों के आसपास ठंड से बचाव के लिए और अधिक व्यवस्था की जरूरत है, ताकि लोगों को राहत मिल सके

इस संबंध में दिशा निर्देश दिया जाना जरूरी है कि मौसम को देखते हुए ही उस अनुरूप किसी प्रकार के आयोजन आदि किए जाएं। कोहरे के कारण ट्रेन और विमानों के परिचालन पर भी असर पड़ा है। इन सबको देखते हुए स्कूलों के समय आदि को लेकर विचार किया जाना चाहिए, ताकि बच्चे सुरक्षित भी रहें और पठन-पाठन भी बहुत हद तक प्रभावित नहीं हो। ठंड के मौसम में आम जन के लिए भी उचित व्यवस्था की जानी चाहिए। यद्यपि अलाव आदि की व्यवस्था की गई है, पर यह पर्याप्त नहीं है। अस्पतालों में भी चिकित्सकों की रात में भी उपलब्धता सुनिश्चित की जानी चाहिए। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में रात के समय लोगों को परेशानी होती है। इस पर ध्यान दिया जाना चाहिए, ताकि किसी भी आपात स्थिति में रोगी को तत्काल प्राथमिक चिकित्सा उपलब्ध हो सके। ठंड, गर्मी या बरसात के समय कुछ दिनों के लिए ऐसी परिस्थिति बनती है, जब विशेष सावधानी की जरूरत होती है। इसे देखते हुए वे उपाय जरूरी हैं, जिससे किसी भी प्रकार की अप्रिय स्थिति उत्पन्न न होने पाए।

डिजिटल भारत की आकांक्षाओं का प्रतीक

अश्विनी वैष्णव

डिजिटल व्यक्तिगत डाटा संरक्षण अधिनियम डिजिटल युग में प्रत्येक भारतीय को सुरक्षित, सशक्त और सक्षम बनाने की हमारी प्रतिबद्धता का प्रतिबिंब है

'जब हम विश्व के भविष्य के बारे में बात करते हैं, तो मानव-केंद्रित दृष्टिकोण सबसे महत्वपूर्ण होना चाहिए।' संयुक्त राष्ट्र शिखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के ये शब्द लोगों को सर्वोपरि रखने के भारत के दृष्टिकोण को दर्शाते हैं। इस दर्शन ने डिजिटल व्यक्तिगत डाटा संरक्षण (डीपीडीपी) नियम, 2025 के मसौदे को आकार देने में हमारे प्रयासों का मार्गदर्शन किया है। अंतिम रूप दिए जाने के बाद डिजिटल व्यक्तिगत डाटा संरक्षण अधिनियम, 2023 लागू हो जाएगा, जो नागरिकों के व्यक्तिगत डाटा सुरक्षा के अधिकार की रक्षा के लिए हमारी प्रतिबद्धता को रेखांकित करेगा।

भारतीय नागरिक ही डीपीडीपी नियम, 2025 के केंद्र में हैं। डाटा के बढ़ते वर्चस्व वाली दुनिया में हमारा मानना है कि व्यक्तियों को शासन की रूपरेखा के केंद्र में रखना अनिवार्य है। ये नियम नागरिकों को कई अधिकारों से सशक्त बनाते हैं, जैसे सूचना आधारित सहमति, डाटा मिटाने की सुविधा और डिजिटल रूप में नामांकित व्यक्ति को नियुक्त करने की क्षमता आदि। नागरिक अब उल्लंघनों या अनधिकृत डाटा उपयोग के सामने असहाय महसूस नहीं करेंगे। उनके पास अपनी डिजिटल पहचान को प्रभावी ढंग से सुरक्षित रखने के उपाय होंगे। इससे संबंधित नियमों को सरलता एवं स्पष्टता के साथ तैयार किया गया है। इसमें सुनिश्चित किया गया है कि प्रत्येक भारतीय, चाहे उनके पास तकनीकी ज्ञान कुछ भी हो, अपने अधिकारों को समझ सकता है और उनका प्रयोग कर सकता है। सहमति स्पष्ट शब्दों में मांगी जाती है तथा नागरिकों को अंग्रेजी या संविधान में सूचीबद्ध 22 भारतीय भाषाओं में से किसी में भी जानकारी देना अनिवार्य बनाया है। यह रूपरेखा समावेशिता के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

आज के इस डिजिटल युग में बच्चों की विशेष देखभाल की आवश्यकता है। इसे मान्यता देते हुए नियम नाबालिगों के व्यक्तिगत डाटा का इस्तेमाल करने के लिए माता-पिता या अभिभावक की सत्यापन योग्य सहमति को अनिवार्य बनाते हैं। अतिरिक्त सुरक्षा उपाय बच्चों को शोषण, अनधिकृत प्रोफाइल बनाने और अन्य डिजिटल नुकसान से बचाव सुनिश्चित करते हैं। ये प्रविधान भविष्य की पीढ़ी के लिए एक सुरक्षित डिजिटल परिदृश्य बनाने के प्रति हमारे समर्पण को दर्शाते हैं। भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था एक वैश्विक सफलता की गाथा रही है और हम इस गति को बनाए रखने के प्रति दृढ़ हैं। हमारी रूपरेखा डिजिटल अर्थव्यवस्था में नवाचार को सक्षम करते हुए नागरिकों के लिए व्यक्तिगत डाटा सुरक्षा सुनिश्चित करती है। विनियमन पर बहुत अधिक जोर देने वाले कुछ अंतरराष्ट्रीय प्रारूपों के विपरीत हमारा दृष्टिकोण व्यावहारिक और विकासोन्मुखी है। यह संतुलन सुनिश्चित करता है कि नागरिकों की सुरक्षा की जाए और नवाचार भावना को दबाया न जाए, जो हमारे स्टार्टअप और व्यवसायों को प्रेरित करती है। नई व्यवस्था से छोटे व्यवसायों और स्टार्टअप के लिए अनुपालन बोझ कम हो जाएगा। हितधारकों की अलग-अलग क्षमताओं को ध्यान में रखते हुए नियमों को वर्गीकृत जिम्मेदारियों के साथ डिजाइन किया गया है। डाटा विश्वास के मूल्यांकन के आधार पर बड़ी कंपनियों के पास बड़े दायित्व होंगे, जो विकास को बाधित किए बिना जवाबदेही सुनिश्चित करेंगे।

अवधेश राजपूत

इन नियमों के मूल में 'डिजाइन से डिजिटल' दर्शन है। डाटा सुरक्षा बोर्ड मुख्य रूप से एक डिजिटल कार्यालय के रूप में कार्य करेगा, जिसे शिकायतों का समाधान करने और अनुपालन लागू करने का काम सौंपा गया है। प्रौद्योगिकी का लाभ उठाकर हम दक्षता, पारदर्शिता और गति सुनिश्चित करते हैं। नागरिक शारीरिक उपस्थिति के बिना भी शिकायत दर्ज कर सकते हैं। प्रगति की निगरानी कर सकते हैं और समाधान प्राप्त कर सकते हैं। यह डिजिटल-प्रथम दृष्टिकोण सहमति व्यवस्था और डाटा प्रबंधन कार्य तक विस्तारित है। प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करके हम बड़ी कंपनियों के लिए अनुपालन और नागरिकों के लिए जुड़ना आसान बनाते हैं, जिससे प्रणाली में विश्वास बढ़ता है।

इन नियमों की यात्रा उनके अभिप्राय जितनी ही समावेशी रही है। डिजिटल व्यक्तिगत डाटा संरक्षण अधिनियम, 2023 के सिद्धांतों पर आधारित, मसौदा नियम विभिन्न हितधारकों से एकत्र किए गए व्यापक इनपुट और वैश्विक सर्वोत्तम तौर-तरीकों के अध्ययन का परिणाम है। नागरिकों, व्यवसायों और नागरिक समाज से प्रतिक्रिया और सुझाव आमंत्रित करते हुए हमने सार्वजनिक परामर्श के लिए 45-दिनों की अवधि निर्धारित की है। यह जुड़ाव सामूहिक ज्ञान और भागीदारीपूर्ण नीति निर्माण के महत्व में हमारे विश्वास का प्रमाण है, जबकि यह सुनिश्चित करना है कि यह व्यवस्था न केवल मजबूत हो, बल्कि हमारे सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य की अनूठी चुनौतियों के अनुकूल भी हो। यह सुनिश्चित करने के लिए कि नागरिक अपने अधिकारों और जिम्मेदारियों के बारे में जागरूक हैं, नागरिकों को उनके व्यक्तिगत डाटा से जुड़े अधिकारों के बारे में शिक्षित करने के लिए व्यापक जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा।

इन नियमों की शुरुआत के साथ हम न केवल वर्तमान चुनौतियों का समाधान कर रहे हैं, बल्कि एक सुरक्षित और अभिनव डिजिटल भविष्य की आधारशिला भी रख रहे हैं। डिजिटल व्यक्तिगत डाटा संरक्षण नियम, 2025 का मसौदा वैश्विक डाटा शासन मानदंडों को आकार देने में भारत के नेतृत्व को प्रतिबिंबित करता है। नागरिकों को केंद्र में रखते हुए नवाचार के लिए अनुकूल वातावरण को बढ़ावा देकर हम एक मिसाल कायम कर रहे हैं, जिसका दुनिया अनुसरण कर सकती है। हमारी प्रतिबद्धता स्पष्ट है कि इस डिजिटल युग में प्रत्येक भारतीय को सुरक्षित, सशक्त और सक्षम बनाना। मैं प्रत्येक नागरिक, व्यवसाय और नागरिक समाज समूह को परामर्श अवधि के दौरान टिप्पणियां और सुझाव साझा करके इस संवाद में भाग लेने के लिए आमंत्रित-प्रोत्साहित करता हूं। आइए हम सब मिलकर इन नियमों को परिष्कृत करें ताकि एक ऐसी व्यवस्था तैयार हो सके, जो वास्तव में एक सुरक्षित, समावेशी और संपन्न डिजिटल भारत की आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करती हो।

(लेखक केंद्रीय इलेक्ट्रानिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी, सूचना और प्रसारण तथा रेल मंत्री हैं)

response@jagran.com

छात्रों के साथ अन्याय का सिलसिला

डा. तुलसी भारद्वाज

एक पारदर्शी एवं लीक-प्रूफ परीक्षा प्रणाली के अभाव में भारत 2047 तक विकसित राष्ट्र नहीं बन सकता है

गत दिनों बिहार लोक सेवा आयोग (बीपीएससी) की एकीकृत 70वीं संयुक्त प्रारंभिक प्रतियोगिता परीक्षा में अनियमितता एवं पर्चा लीक के आरोपों के चलते पूरी परीक्षा को रद करने की मांग को लेकर पटना में अभ्यर्थियों का धरना प्रदर्शन जारी है। इस बीच पर्चा लीक आरोपों के कारण पटना के कुछ केंद्रों पर इसकी पुनर्परीक्षा कराई गई है। गौरतलब है कि बीपीएससी की प्रारंभिक परीक्षा के दौरान एक बड़े परीक्षा केंद्र पर गड़बड़ी एवं पर्चा लीक होने के आरोपों को प्रशासन ने स्वीकारा था। अभ्यर्थियों की दलील है कि एक केंद्र पर पर्चा लीक होने के चलते पूरी परीक्षा पर इसका असर हुआ होगा। इसलिए इस पूरी परीक्षा को रद करके बीपीएससी को दोबारा परीक्षा करानी चाहिए, जिससे परीक्षा की पारदर्शिता सुनिश्चित हो सके और मेहनती छात्रों को न्याय मिल सके। बिहार शासन द्वारा छात्रों के आंदोलन का दबाने के लिए किए गए अमानवीय बर्ताव करने के बाद भी अभ्यर्थी पुनः परीक्षा की मांग पर अड़े हुए हैं। इस घटना ने बीते वर्ष में कुछ प्रतियोगी परीक्षाओं में धांधली के आरोपों के चलते छात्रों के हुए उग्र प्रदर्शनों की याद दिला दी है।

पटना में युवाओं को आंदोलन करते हुए दो सप्ताह हो गए हैं, इसके बावजूद इसका किसी परिणाम पर न पहुंच पाना बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है। तीन लाख से अधिक अभ्यर्थियों के भविष्य को प्रभावित करने वाली प्रतियोगी परीक्षा के पहले तो पर्चे लीक होना, फिर उस पर शासन का ऐसा कठोर रवैया किसी भी स्वस्थ लोकतंत्र के अनुरूप नहीं है। लालू-राज में हुए जमीन के बदले नौकरी घोटाले की जांच अभी पूरी भी नहीं हो पाई थी कि बीते साल शिक्षक भर्ती, कम्युनिटी हेल्थ अफसर आदि परीक्षाओं में अनियमितता के आरोप लगना शुभ संकेत नहीं है। देश में प्रतियोगी परीक्षाओं की साख की बात करें तो यह केवल एक राज्य का मसला नहीं है, अपितु केंद्र द्वारा कराई जा रही परीक्षाएं भी धांधली से मुक्त नहीं हैं।

अभ्यर्थियों के साथ हो न्याय। फाइल

हर साल अभ्यर्थियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एक ही समय में एकल मानक के आधार पर लाखों अभ्यर्थियों का सफल मूल्यांकन कर पाना एक बड़ी चुनौती रहती है। ऐसे में नकारात्मक तत्वों द्वारा जानबूझकर एक छोटी सी गड़बड़ी भी एक ही बार में शासन-प्रशासन एवं अभ्यर्थियों के कठोर परिश्रम पर पानी फेर देती है। पकड़े जाने पर भी कठोर कानूनों के अभाव में बहुत अधिक सजा न हो पाने से भर्ती माफिया और साल्वर गैंग पिछले कुछ समय में बहुत तेजी से सक्रिय हो गए हैं। इसके चलते हाल में सरकार ने सुरक्षित परीक्षा प्रणाली के लिए एक सकारात्मक पहल की है। उसने विभिन्न भर्ती परीक्षाओं के पेपर लीक आदि अपराधों में शामिल लोगों को सजा देने के लिए कठोर कानून बनाया है। इसमें दोषियों को आजीवन कारावास की सजा एवं एक करोड़ रुपये के जुर्माने का प्रविधान किया है।

प्रतियोगी परीक्षाओं में धांधली एवं अपारदर्शिता वर्षों से मेहनत कर रहे छात्रों के भविष्य के साथ खिलवाड़ ही नहीं, बल्कि उसके पूरे परिवार के साथ अन्याय है। प्रतिभा के अनुरूप व्यवसाय न मिल पाने या फिर अधिकतम आयु सीमा पार चुके प्रतिभावान अभ्यर्थियों का उपयुक्त नियोजन न होना प्रतिभा पलायन से कम नहीं है। यह राष्ट्रीय बौद्धिक संपदा के ह्रास का ही एक दूसरा रूप है। फिर इसके परिणामस्वरूप उपजे सामाजिक अन्याय को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। यदि निश्चित कसौटी से निम्न स्तर वाले अभ्यर्थियों की नियुक्ति हो जाती है तो कभी भी उस पद से वांछनीय दक्षता, ईमानदारी एवं विश्वसनीयता की उम्मीद नहीं की जा सकती। इसी से समझ सकते हैं कि यह समस्या कितनी गंभीर है, परंतु दुखद यह है कि ऐसे संजीदा मामलों पर भी सकारात्मक सुझाव देने के बजाय लोग अपनी राजनीतिक रोटियां सेंक रहे हैं।

परीक्षाओं को कदाचार मुक्त बनाने में केवल पक्ष-विपक्ष ही नहीं, बल्कि संबंधित प्रशासनिक तंत्र की भी अहम भूमिका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। इसलिए उनकी भी यह नैतिक जिम्मेदारी बनती है कि जिन माध्यमों से वे स्वयं एक ओहदे तक पहुंचे हैं उनकी साख और गरिमा को बनाए रखने में भूमिका निभाएं। वैसे देखा जाए तो आज तकनीक, परिवहन, इन्फ्रास्ट्रक्चर आदि क्षेत्रों में भारत की सूरत काफी बदल चुकी है। फिर भी देश में परीक्षा प्रणाली का तंत्र इनको अपनाने की दौड़ में अभी बहुत पीछे है। हमें एक लीक-प्रूफ और पारदर्शी परीक्षा प्रणाली विकसित करने के लिए इनका समुचित इस्तेमाल करना चाहिए। एक पारदर्शी एवं लीक-प्रूफ परीक्षा प्रणाली के अभाव में न तो सामाजिक न्याय की परिकल्पना पूर्ण हो सकती है, न ही देश 2047 तक विकसित बन सकता है।

(लेखिका शिक्षाविद् एवं सामाजिक कार्यकर्ता हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

ब्रह्म से जुड़ाव

ब्रह्म एक निराकार, अपरिवर्तनीय और असीम सत्ता है, जो कण-कण में व्याप्त है। हमारा अस्तित्व और पूरे संसार का अस्तित्व ब्रह्म के साथ एकता में है। जब व्यक्ति ब्रह्म के साथ एकता में रहता है, तो वह स्वयं को ओंकार में पहचानता है और उसमें समाहित हो जाता है। ब्रह्म एक होने के कारण अपरिवर्तनीय है। जहां केवल एक सत्ता है, वहां विकृति या परिवर्तन के कोई आसार नहीं होते। जहां एक ही सत्ता है, वहां मृत्यु, विकृति या भय की कोई आशंका नहीं रहती। ओंकार की स्थिति अमरत्व और निर्भयता की अवस्था होती है। जब व्यक्ति ब्रह्म के साथ जुड़ता है, तो वह मृत्यु और भय से मुक्त हो जाता है। आध्यात्मिक साधना का प्रमुख उद्देश्य यही होता है कि मनुष्य इसके माध्यम से अपने अस्तित्व की तीन अवस्थाओं- जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति को ब्रह्म, ओंकार के समर्पण में लाकर एकता की अवस्था में पहुंच सके। इन तीनों अवस्थाओं का अस्तित्व केवल भिन्न गुणों की उपस्थिति पर निर्भर करता है, जो चेतन, परिवर्तनशील और स्थिर सिद्धांतों की प्रबलता के कारण उत्पन्न होती है। इन अवस्थाओं के माध्यम से व्यक्ति स्वयं को ब्रह्म से पृथक समझता है, लेकिन जैसे-जैसे वह साधना में रमता जाता है, वैसे-वैसे वह ब्रह्म के साथ एकता का अनुभव करता है।

प्रत्येक इकाई सत्ता का अस्तित्व ब्रह्मांडीय विचार-प्रक्रिया पर निर्भर करता है। इन विचार प्रक्रियाओं के माध्यम से ही स्थूल शरीर उत्पन्न होते हैं और फिर इन्हें अपने विशेष अस्तित्व को बनाए रखने के लिए भौतिक रूपों में व्यक्त किया जाता है। जब इकाई सत्ताएं अपने अस्तित्व के अलगाव की भावना से मुक्त हो जाती हैं और ब्रह्मांडीय इकाई से जुड़ जाती हैं, तो वे अपने कर्मों के परिणामों से मुक्त हो जाती हैं।

श्री श्री आनंदमूर्ति

...ताकि फिर न हो ऐसी त्रासदी

ठौंद्रराज सुथार

सभी बोरवेलों का पंजीकरण किया जाना चाहिए, उनको उचित तरीके से बंद किया जाना चाहिए, ताकि फिर कोई दुर्घटना न हो

हाल में राजस्थान के कोटपुतली जिले में तीन साल की चेतना 700 फीट गहरे बोरवेल में गिर गई और 10 दिन की कोशिशों के बाद बच नहीं सकी। राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग के अनुसार हर साल औसतन 50 से 60 बच्चों की जान बोरवेल हादसों में जाती है। इन घटनाओं में ज्यादातर बच्चे पांच साल से कम उम्र के होते हैं। दरअसल इन हादसों का मुख्य कारण अनुपयोगी और अनियंत्रित बोरवेल हैं। जब बोरवेल पानी देना बंद कर देते हैं या फिर उनका उपयोग बंद कर दिया जाता है, तो इन बोरवेलों को या तो खुला छोड़ दिया जाता है या फिर उन्हें सही तरीके से बंद नहीं किया जाता। कई बार तो बोरवेल के आसपास सुरक्षा की कोई व्यवस्था भी नहीं होती है, जिससे हादसों का खतरा और बढ़ जाता है।

2010 में सुप्रीम कोर्ट ने खुले बोरवेलों के आसपास सुरक्षा उपायों को अनिवार्य करने के लिए दिशा-निर्देश जारी किए थे। इसके अलावा राज्य सरकारों को भी बोरवेल के पंजीकरण और निगरानी के लिए निर्देश दिए गए थे, लेकिन हकीकत यह है कि इन दिशा-निर्देशों के पालन को लेकर गंभीरता नहीं बरती गई। खुले बोरवेलों को बंद करने, उनकी निगरानी करने और बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त प्रयास नहीं किए गए। मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और राजस्थान जैसे राज्यों में खुले बोरवेलों के कारण मासूमों की सबसे अधिक जानें गई हैं। इन राज्यों में बोरवेल के रखरखाव और निगरानी की कोई ठोस व्यवस्था नहीं है, जो इन हादसों को रोक सके। यहां तक कि प्रशासन स्तर पर इस समस्या की गंभीरता को सही तरीके से समझा नहीं जा रहा है। जब भी कोई ऐसा हादसा सुर्खियों में आता है, तभी सरकार और प्रशासन जागता है और आनन-फानन में रोकथाम को लेकर सख्ती बरतता है। फिर सब इस ओर से आंख बंद कर लेते हैं।

ऐसे हादसे भविष्य में न हों इसलिए सभी बोरवेलों का पंजीकरण किया जाना चाहिए। इससे सरकार को यह पता रहेगा कि किस स्थान पर बोरवेल खोदी गई है और उनकी स्थिति क्या है। इसके बाद हर बोरवेल को उचित तरीके से बंद किया जाना चाहिए, ताकि कोई दुर्घटना न हो। इसके अलावा बोरवेल के आसपास सुरक्षा के लिए बैरिकेड्स या चेतावनी संकेत लगाए जाने चाहिए। अगर कोई बोरवेल अनुपयोगी हो जाता है, तो उसे तुरंत बंद किया जाना चाहिए, ताकि बच्चे के गिरने का खतरा न हो। यह तभी संभव है जब सभी राज्यों में बोरवेल खोलने और बंद करने के लिए मानक नियम बनाए जाएं और उनका पालन सुनिश्चित किया जाए। कुछ राज्यों ने ऐसे हादसों के लिए विशेषज्ञ टीमों का गठन किया है, लेकिन ये प्रयास काफी सीमित हैं। इस दिशा में और अधिक सुधार की जरूरत है, ताकि शीघ्र बचाव किया जा सके।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

मेलबाक्स

राजनीति का बदलता चरित्र

'नए वर्ष में नई राजनीति की मांग' शीर्षक से लिखे आलेख में डा. एके वर्मा ने उन राजनीतिक अपसंस्कृतियों की ओर ध्यान आकृष्ट कराया है, जिसके कारण एक ओर राजनीति का सामंती चरित्र उभरकर सामने आया है वहीं तुष्टीकरण की राजनीति के कारण मुस्लिम समुदाय हिंदुओं से घुलमिल नहीं पा रहा है। उन्हें अल्पसंख्यक का दर्जा देकर अलगाव उत्पन्न कर दिया गया है और यह मुसलमान को अपना वोट बैंक समझने के कारण हुआ है। मुस्लिम समुदाय की अच्छी खासी आबादी है, जो कई मुस्लिम देशों से भी अधिक है। ऐसे में जबकि संविधान में किसी विशेष समुदाय की उपेक्षा नहीं की गई है मगर राजनीतिक दल अपना सामंती चरित्र बचाए रखने के लिए इस राजनीतिक अपसंस्कृति को पनपने में सहयोग दे रहे हैं। विमर्श कमजोर होने का यह भी एक कारण है। इसका स्थान विद्वेष ने ले लिया है। लिहाजा विचारधारा को लेकर विरोध-विमर्श तो हो, पर विद्वेष की भावना को त्यागने की जरूरत है। तभी सही मायने में लोकतंत्र मजबूत होगा। हमारे संविधान निर्माता की मंशा देखिए कि उन्होंने भारत को गणतांत्रिक लोकतंत्र बनाया। इसके खास निहितार्थ को समझने में राजनीतिक वर्ग क्यों नाकाम है? यह समझ से परे नहीं है।

मुकेश कुमार मनन, पटना

बुजुर्गों के हित में

देश की सबसे बड़ी अदालत उच्चतम न्यायालय ने भारतीय समाज की एक बड़ी समस्या का समाधान दिया है। अब बच्चे बुजुर्ग मां-बाप की देखभाल नहीं करेंगे तो उनके नाम हस्तांतरित की गई संपत्ति वापस ली जा सकती है। उच्चतम न्यायलय को यह निर्णय इसलिए देना पड़ा, क्योंकि एक बुजुर्ग महिला ने इस आधार पर बेटे के नाम की गई संपत्ति रद करने की मांग की थी। उसने संपत्ति हासिल करने के पश्चात अपने माता-पिता की देखभाल करनी बंद कर दी थी। माता-पिता के लिए भर पोषण कल्याण अधिनियम 2007 बनाया गया, जिसमें 50,000 रुपये का जुर्माना और तीन साल की सजा का भी प्रविधान है। 2007 के बनाए गए अधिनियम के अनुसार बच्चों पर मां-बाप के भरण-पोषण और कल्याण की जिम्मेदारी डाली गई है। उसके पश्चात भी बच्चे बुजुर्गों की उपेक्षा करते हैं। ऐसे कुछ मामलों का अदालत तक पहुंचाना संयुक्त परिवारों के विघटन, पारिवारिक मूल्यों की अनदेखी और संस्कारहीनता के कारण हो रहा है। अपने बच्चों की शिक्षा तथा देखभाल की जिम्मेदारी माता-पिता बहुत ही कष्ट उठाकर निभाते हैं। वह सोचते हैं कि बुढ़ापे में जब उनका शरीर थक जाए तो वह उनकी देखभाल और चिकित्सा सुविधा का ध्यान रखेगा। लेकिन आज की युवा पीढ़ी अपने कर्तव्य और दायित्व से मुंह मोड़ रही है। इसी कारण दिन-प्रतिदिन वृद्ध आश्रमों में संख्या बढ़ती जा रही है। समय-समय पर इस तरह के मामले भी सामने आ रहे हैं कि अपने बुजुर्ग माता-पिता को विभिन्न प्रकार से परेशान किया जाता है। विभिन्न तरह के अत्याचार करते हैं। ऐसे में जरूरी है कि उच्चतम न्यायालय द्वारा दिए गए फैसले से उन बुजुर्गों को बहुत बड़ी राहत मिलेगी, जो अपनी संपत्ति अपने बच्चों के नाम इसलिए करते हैं कि वे उनके बुढ़ापे का सहारा बनें। उसके विपरीत होने वाले अत्याचार के खिलाफ अपनी संपत्ति वापस लेने के उच्चतम न्यायलय के निर्णय से समाज को एक नई दिशा मिलेगी।

मीना धानिया, दिल्ली

दिल्ली में विधानसभा चुनाव

दैनिक जागरण के चार जनवरी के अंक में प्रथम पृष्ठ पर प्रकाशित समाचार 'कट्टर बेईमानों ने दिल्ली को आप-दा में धकेला : मोदी' ने दिल्ली विधानसभा चुनावों का रुख मोड़ दिया है। आम आदमी पार्टी की सरकार कभी आम आदमी के लिए रही ही नहीं। इस पार्टी के दस वर्षों के शासन को दिल्ली की दुर्दशा के लिए स्मरण किया जाएगा। भ्रष्टाचार आम आदमी का सबसे बड़ा शत्रु है क्योंकि विकास का सबसे अधिक लाभ आम आदमी का ही होता है। शीशमहल, शराब घोटाले, मनी लांड्रिंग के आरोपों ने दिल्ली को कलंकित किया।

विनोद जौहरी, दिल्ली

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।
अपने पत्र इस पते पर भेजें :
दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल: response@jagran.com

संस्थापक- स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक- स्व. नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन- महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक- संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 * इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई/रेल शुल्क ₹-2 अतिरिक्त।
****